एक पर एक इगारह

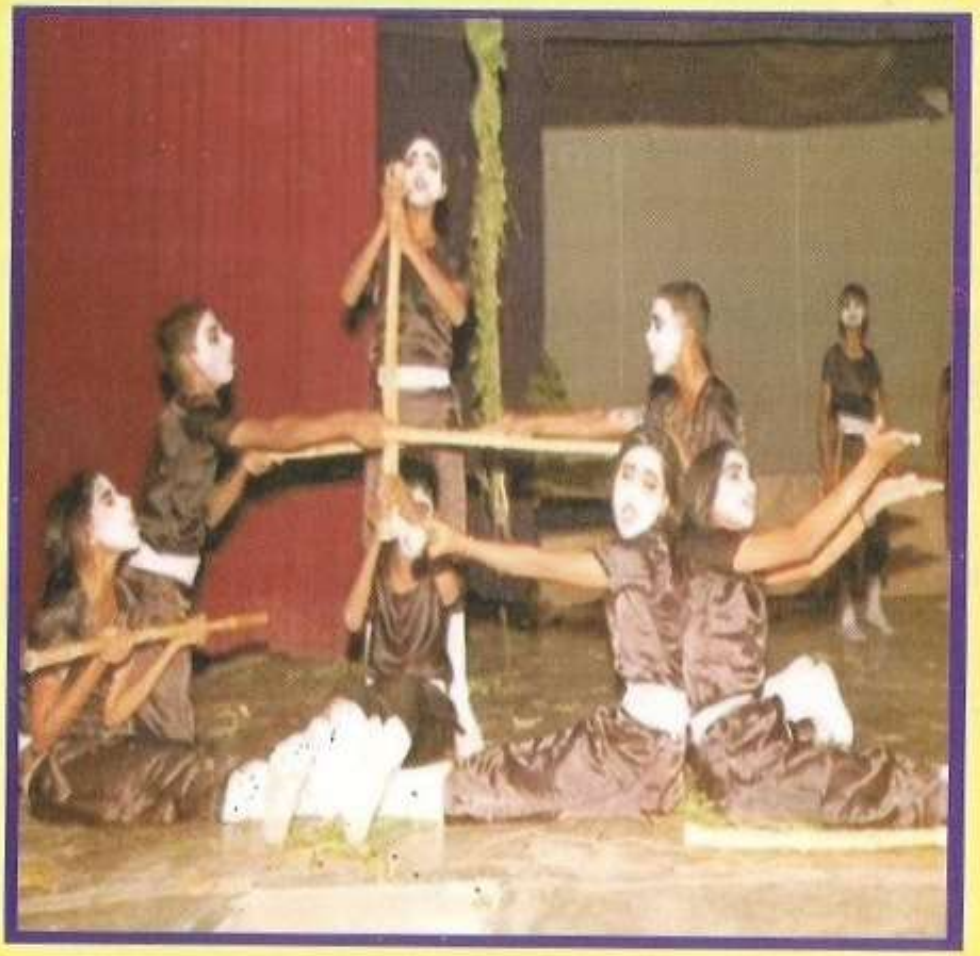

तैयब हुसैन पीड़ित

एक पर एक इगारह

(भोजपुरी एकांकी संग्रह)

सम्पादक

डॉ तैयब हुसैन 'पीड़ित'

शब्द संसार

पटना

सम्पादक : तैयब हुसैन 'पीड़ित'
संस्करण : पहिला, 2009ई.
मूल्य : 75/- रुपया
प्रकाशक : शब्द संसार
न्यू अजीमाबाद कॉलोनी
पो.-महेन्द्रू, पटना-6
अक्षर-संयोजक : अनुकृति
साधनापुरी, गर्दनीबाग, पटना-2
मुद्रक : न्यू प्रिंटलाइन प्रेस
गाँधी नगर, पटना-1

EK PAR EK EGARAH

(Collection of Bhojpuri One Act Plays)

Edited by

Taiyab Hussain peedit

'एक पर एक इगारह' के पहिले

एने के एकांकी पछिमी साहित्य के अनुकरण पर लिखाता आ एकांकी के ऊ लघुनाट्य रूप मानल गइल बा जेह में एक परिस्थिति, एक घटना भा एक भावना जनित संवेदना के अभिव्यक्ति, कवनो बाहरी भा भीतरी संघर्ष का जरिए अभिनेयात्मक शैली में प्रस्तुत भइल होखे । एह में एक तरह के प्रभाव के उद्बोध होय आ एह उद्बोध से दर्शक आ पाठक दूनों के रागात्मिकता वृत्ति जाग जाय ।

संस्कृत के लघु रूपक के अन्तर्गत ई एहू से ना गिनाई कि संस्कृत में रस, भाषा आ चरित्र भा नायक-नायिका लेके जवन मान्यता बा, आज के एकांकीए ना नाटको ओके बहुत पीछे छोड़ आइल बा ।

असल में, आज के जिनगी में एतना व्यस्तता बढ़ल जा रहल बा कि नाना द्वन्द्व, प्रतियोगिता, अशान्ति, काम के बहुलता आ रोजी-रोटी के जटिलता गुने लोग के पास अवकाश के कमी भइल जाता । अइसन में इलेक्ट्रोनिक मीडिया ओकरा अनुकूल पड़ता आ एही तर्ज पर ऊ साहित्यो में कम से कम समय में अधिक से अधिक बात जान लेबे के पक्ष में बा । मनोरंजन का दिसाइयों ओकर ईहे मत बा ।

कहे के ना होई कि महाकाव्य के जगहा खण्डकाव्य भा स्फुट कविता, उपन्यास का जगहा कहानी भा लघुकथा आ नाटक का जगहा एकांकी के लोकप्रियता का पाछे ईहे कारण प्रमुख बा । एकर नाना रूप जइसे– प्रहसन, रेडियो प्ले, ध्वनि नाटक, मूक अभिनय, फीचर, संगीत रूपक, भाव नाट्य, एकल अभिनय (मोनोलाग), नुक्कड़ आदि एकरा के अलगे विविधता प्रदान करता ।

अंग्रेजी में अइसन नाटक, पहिले असल नाटक शुरू भइला से पूर्व आ गइल दर्शकन के मनोरंजन खातिर पूरक (फीलर) का रूप में होत रहे ।

इतिहास बा कि सन् 1903 में लंदन के 'वेस्ट एण्ड थियेटर' में अइसने एगो पूरक लघुनाट्य 'बंदर का पंजा' (मंकीज पो) देखावल जात रहे । ई नाटक लोग के एतना पसंद पड़ल कि लोग संतुष्ट होके बिना मुख्य नाटक देखलहीं हॉल से बाहर चल गइल । एह घटना से थियेटर वालन के ई सोचेला मजबूर होय के पड़ल कि अइसन छोट के बड़ नाटक से अलगा अस्तित्व बा । ऊ एके मुख्य नाटक से छटका देलन आ इहँहीं एकरा स्वतंत्र विकास के रास्ता खुल गइल ।

हमनी त हाल-हाल ले गाँव के भर रात वाला नाटक में हँसावे खातिर छोट-छोट प्रहसन (कौमिक) के होत देखले बानीं ।

हिन्दी के नामी एकांकीकार डॉ. रामकुमार वर्मा साइत एही सब बात से कहले बाड़न कि '.....रंगमंच की उलझनों से दूर रहते हुए भी दृश्य के आकर्षण की विशेषता इसमें सुरक्षित है । आज के अति व्यस्त जीवन में एकांकी ने कम से कम समय में अधिक से अधिक अनुरंजन का दायित्व अपने ऊपर लिया है । घटनाओं और समस्याओं

के पारस्परिक अन्तर्व्यापी नैकट्य को दूर कर जीवन की पृष्ठभूमि पर प्रत्येक घटना और समस्या का सहज स्वाभाविक उभार प्रस्तुत करना एकांकी का ही कौशल है । मंच का सरलीकृत आकर्षण, कम से कम समय में जनता का अधिक से अधिक मनोरंजन करना, घटना और पात्रों की हृदय स्पर्शिनी क्रिया और प्रतिक्रिया (Mental Comflict) और जीवन की ऊँचाई देखने का नेत्रोत्तोलन एकांकी में ही है ।'

कहे के ना होई कि एकांकी में लेखक के दृश्य-विधान आ निर्देशन का बारे में एही से कुछ अधिका कहेला पड़ेला ।

भोजपुरी अकादमी, पटना से प्रकाशित आ पं. गणेश चौबे द्वारा संकलित पुस्तक-सूची 'भोजपुरी प्रकाशन के सइ बरिस' (1983ई.) में पहिल भोजपुरी-एकांकी 'सुदेसिया' (रचयिता : छांगुर त्रिपाठी 'जीवन' : 1940ई.) के मानल गइल बा, एही से शुरुआत मान के हम मान्य कसउटियन के आधार पर भिखारी ठाकुर के 'गबरघिंचोर' आ राहुल सांकृत्यायन के 'मेहरारून के दुरदसा' के भी एकांकी माने के आग्रह एह संग्रह में देखवले बानीं ।

फेर त भोजपुरी में एकांकी लिखेवालन के एगो लमहर जमात बा जवना में एह पुस्तक में शामिल एकांकीकारन के अलावे मनोरंजन प्रसाद सिंह, कपिलदेव, बलराज कृष्ण शर्मा, जी. पी. श्रीवास्तव, जगदीश सहाय 'असीम', दुर्गा प्रसाद श्रीवास्तव, महेन्द्र प्रसाद सिंह, सुरेश कांटक, कन्हैया सिंह 'सदय' आदि गिनावे लायक बाड़न ।

बाकी 'एक पर एक इगारह' के पीछे हमर उद्देश्य ई रहल बा कि पाठकन के एक जगह मुख्यत: एकांकी लिखेवाला विभिन्न एकांकीकारन के रंग-बिरंग के एकांकियन से परिचित करावल जाव आ पाठ्यक्रम-निर्माण में एकांकी पढ़ावे का दिसाईं एकर उपयोग लेके भरसक आसानी होय ।

हमरा जानकारी में एकरा पहिले भोजपुरी अकादमी (पटना), बिहार इंटरमीडिएट शिक्षा परिषद् के सिलेबस का अनुसार भोजपुरी भाषा आ साहित्य पाठ्यक्रम में पढ़ावे खातिर छ: एकांकियन के एगो संग्रह 1981ई. में प्रकाशित कइले रहे । हमार प्रयास साइत एह लेके दोसरका ना त सामान्य संग्रह का दृष्टि से पहिलका कहाई ।

हम आभारी बानीं ओह सब लेखकन का प्रति जेकर रचना एह में शामिल बा । हम क्षमा-प्रार्थी बानीं ओह लिखवइन का प्रति जेकर एकांकी आपन सीमा भा दोसरा कवनो वजह से एह में शामिल ना हो पावल ह ।

आखिर में, महत्वपूर्ण राय आ सुरूचिपूर्ण अक्षर-संयोजन खातिर क्रमश: अग्रजवत् जगन्नाथ जी आ भ्रातृजवत् संजय का प्रति उपकार मानत, एह विधा विशेष के बढ़ावा बदे आपन कइल प्रयास में हम राउर प्रतिक्रिया के प्रतीक्षा करत बानीं.....।

(तैयब हुसैन 'पीड़ित')

भिखारी ठाकुर

नाटक के क्षेत्र में लोक कलाकार भिखारी ठाकुर के 'भोजपुरी नाटक के शेक्सपीयर, कहल जाला । इनकर जनम विक्रमी संवत् 1944 शकाब्द 1809, पौष शुक्ल पंचमी, दिन सोमवार के दू पहर में भइल रहे । ई तिथि अंग्रेजी-गणना में 18 दिसम्बर 1887 पड़ेला । इनका पिता के नाम दल सिंगार ठाकुर, मतारी के श्रीमती शिवकली देवी आ पत्नी के श्रीमती मनतुरना देवी रहे । ई तीन गो शादी कइले रहस बाकी दूगो जीवित ना रह पवली । तिसकी मनतुरना देवी से इनका एगो बेटा रहस– शिला नाथ ठाकुर ।

इनकर जनम-स्थान रहे– बिहार में पूर्व मध्य रेलवे स्टेशन गोलडीन गंज से दखिन सारण जिला के कुतुबपुर दियारा, जवन गंगा, सरयू आ सोन नदी के संगम पर बसल बा ।

भिखारी ठाकुर शिक्षा के नाम पर मात्र साक्षर रहस । टो-टा के तुलसी रामायण बाँचस बाकी नजर इनकर पारखी रहे । एह से लइकाई में गाय चरवलन, नाऊगिरी पेशा कइलन बाकी संगत से आध्यात्मिक जानकारियो हासिल करत गइलन । कलकत्ता कमाये गइलन त रासलीला, रामलीला आ जात्रा से प्रभावित भइलन । घरे अइलन त नाच के जमात बन्हलन । नाच चल निकलल । एही नाच खातिर ऊ दर्जन भर नृत्य-नाट्य के रचना कइलन, जवना के नाम बा-- कलयुग बहार (पियवानिसइल), बहरा बहार (बिदेसिया), पुत्र-बध नाटक, गंगा असनान, भाई-विरोध नाटक, बेटी वियोग (बेटी बेचवा), राधेश्याम बहार नाटक, बिंचोर बहार, विधवा-विलाप आदि । एकरा अलावे उनकर कुछ भजनकीर्तन आ संवाद ले ले फुटकरो छोट-छोट किताब प्रकाशित बा । कुल मिला के उनकर 29 किताब गिनावल जाले ।

भिखारी ठाकुर के भक्ति-भावना बहुदेववादी रहे । रचना बहुधा मौखिक होय आ विषय आस-पास के तत्कालीन गँवई समस्या । गीत, नाच आ नाटक लोक शैली में रहला गुने भोजपुरिया समाज में उनका एतना लोकप्रियता मिलल कि ऊ जीयते 'लीजेंड' हो गइल रहस । उनका नाटकन के रचना-काल बा 1938 से 1962ई. । एह तीन दशक में अपना कला के सृजन ऊ समाज से जुड़ के अइसन कइलन कि ओह में आनंद लेवे आ देवेवाला के भेद मिटा गइल । दूनों एक-दोसरा के पूरक हो गइलन । उनकर सर्वाधिक लोकप्रिय नाटक 'बिदेसिया' बा । 19 जुलाई 1971 के उनकर निधन भइल ।

क्रम

1. भिखारी ठाकुर/गबर घिंचोर 7
2. राहुल सांकृत्यायन/मेहरारुन के दुरदसा 24
3. रामेश्वर सिंह काश्यप/भउजी से भेंट 46
4. सीतारामचन्द्र शरण 'राम'/के पाई राजगद्दी 55
5. डॉ. बसन्त कुमार/अकसरुआ 65
6. रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'/बीर बालक कादिर 76
7. जगन्नाथ/लिखंत 80
8. सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश'/सिंहनाद 87
9. शारदा त्रिपाठी/मंगला हाथी 96
10. चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह/देवता 102
11. तैयब हुसैन पीड़ित/त्रिशंकु 112

गबरघिंचोर

पात्र परिचय

गलीज : गाँव के एगो परदेसी युवक
गड़बड़ी : गाँव के आवारा एगो युवक
घिचोर : गलीज बहू से पैदा गड़बड़ी के बेटा
पंच : गाँव के मानिन्द आदमी
गलीज बहू : गलीज के पत्नी आ गबरघिचोर के मतारी
जल्लाद, समाजी, दर्शक आदि

समाजी : [चौपाई]

सिरी गनेस पद सीस नवाऊँ ।
गबरघिचोरन के गुन गाऊँ ॥
बहरा से गलीज घर अइलन ।
मुदित भइल ना दाम कमइलन ॥

मेहर के ना भइलन साथी ।
झूमे जस मतवाला हाथी ॥
एही से दुआर पर आई ।
निरखन लगे लोग बहुताई ॥

घरनी सुनली अइलन पीया ।
रहि-रहि के हुलसत बा जीया ॥
ले थारी जल पाँव पखारे ।
आजु जनम भये सुफल हमारे ॥

गलीजबहू : (गलीज से) [कबित्त]

कमल उछाह जइसे सूरुज प्रकास होत,
कुमुद उछाह जइसे चन्द्रमा परस ते ।
भौंरन उछाह जइसे आगमन बसंत जानि,
मोरन उछाह जइसे बरखा बरस ते ।
हंसन उछाह जइसे मानसरोबर बीच,
साधन उछाह इच्छा आवत अरस ते ।
सबको उछाह एही भाँति उर होत अहै,
हमरो उछाह स्वामी तोहरे दरस ते ।

गलीज : ई झंझट कइला के कुछ काम नइखे, जल्दी बतावऽ लइका कहाँ बा ।

गलीजबहू : (पति से) [गाना-पूर्वी]

सिव-सती जी के पूत, देवन में मजगूत,
गिरत बानीं तोहरे चरन में हो स्वामी जी !
गवना कराके गइलऽ, घर के ना सुधि कइलऽ,
मरतानीं तोहरा बियोग में हो स्वामी जी !

हाथ-बाँहि धइला के, सादी-गवना कइला के,
आज ले ना कइलऽ निगाहवा हो स्वामी जी !
बबुआ भइलन पैदा, कुछ ना मिलल फैदा,
सब बिधि कइलऽ बेकैदा हो स्वामी जी !

आस मत नास करऽ, बेटा के रहे दऽ घर,
पगली के प्रान के आधार मोर हो स्वामी जी !
पोसत बानीं बचेपन से, बबुआ के तन-मन से,
कसहूँ उपास आध पेट खा के हो स्वामी जी !

कहत भिखारी नाई, देहु खीस बिसराई,
उजरल घर के बसा दऽ मोर हो स्वामी जी !

(अपना बेटा से) ए बबुआ ! गोड़ पर गिरऽ, इहे तोहार बाबू हवन ।

समाजी : (चौपाई)

गिरत पुत्र पिता पग जाई ।
धरि के बाँह गोद बइठाई ॥

गलीज : बेटा हमार चलऽ परदेस ।
काहे तूं सहबऽ घरे कलेस ?

गबरघिचोर : माई के संग में लेके चलऽ, राखऽ, अपने पास ।
छोड़िके गइला से करिहन सब नर-नारी उपहास ॥

गलीज : एह पागल के छोड़ दो बेटा, चलो हमारे साथ ।
फिर ना ऐसा मोका कबहूँ, लगेगा तेरा हाथ ॥

गलीजबहू : बबुआ के हम सोझा राखब, देख के करबऽ सबूर ।
सब बिधि से मत करऽ स्वामी, हमरा कर्म के चकनाचूर ॥

गलीज : (बेटा के जबरदस्ती बाँहि धइ के झटकार के) चलऽ बेटा, तूं चलऽ ।

समाजी : (चौपाई)

तेहि अवसर गड़बड़ी तहँ आये ।
पुत्र मोर कहि रोब जमाये ॥
तीनों में झगड़ा भये भारी ।
देखन लगे सकल नर-नारी ॥
पंचित करन लगे सब लोगू ।
गबरघिचोरन केहि के जोगू ॥

(पंच आवतारन)

पंच : तीन आदमी में झगरा लागल बा, झगरा छूटत नइखे, जवना पंचाइत में हम बोलावल गइल बानीं ।
(गलीज का ओर देखावत) हइहे गलीज बाड़न । गलीज !

गलीज : हँ बाबा !

पंच : इहे गलीज हवन । बिआह कके घर में जनाना बइठा देलन । अपने चल गइलन बहरा कमाये । बाहर से ना कबहीं खत भेजलन, ना खबर भेजलन, ना पाँच रोपेया मनिआडर भेजलन । एहिजा इसवरी माया ! गलीज बो, हेने आउ ।

ईहे गलीज बो हऽ । एकरा एगो लइका पैदा लेले बाड़न । बबुआ गबरघिचोर हेने आवऽ ।

गाँव-नगर से बहरा में जाके केहू कहल ह कि गलीज तोहरा बेटा भइल बा । गलीज बहरा से आइल बाड़न कहत बाड़न कि छँवड़ा के हम अपना जबरे बहरा लिया जाइब । गलीज बो कहतिया कि हम असरा लगा के जनमवलीं, पोसलीं-पललीं, छँवड़ा के काहें लिया जइबऽ ? हमरो के लिया चलऽ । एही बात के दोनों बेकत में झगरा बा । एही बीच में हई गड़बड़ी कहत बाड़न कि हमार बेटा हऽ । गड़बड़ी, तू ई बतावऽ कि घिचोरवा में के हो के दावा कइले बाड़ऽ ?

गड़बड़ी : घिचोरवा हमार बेटा नू हऽ, महाराज !

पंच : का गलीजवा बो से तोहरो बिआह भइल रहे ?

गड़बड़ी : ना ।

पंच : माड़ो गाड़ि के ? बाजा बजा के ? नेवता नवति के ?

गड़बड़ी : ना महराज !

पंच : तब तोर बेटा कइसे भइल रे बउराह लेके ?

गड़बड़ी : ए बाबा, हम जवन रउरा से कहत बानीं, से सुनीं । हम रास्ता धइले जात रहीं, ओने से लरिकवा के मतरिया चल आवत रहे । हमरा से कुछ गलती हो गइल ।

पंच : अइसे खाली गलती बात ना बोले के । राह में गलती हो जाई तेसे का बेटो हो जाई ? कवनो सबूत बा ?

गड़बड़ी : हँ बइठल जाव, हम सबूत देत बानीं !

राह में पवलीं खाली जाली । खोजत अइलन एगो कुचाली ॥
रोपेया धइलीं लेलीं निकाल । ले जास आपन खलिहा जाली ॥

पंच : गड़बड़ी, हम तोहरा से ममिला पूछतानीं, तू लगलऽ गीत गावे ?

गड़बड़ी : हम गीत नइखीं गावत, आपन ममिले कहलीं हाँ रावाँ से ।

पंच : बाकिर हमरा ना बुझाइल ह, ए बबुआ ?

गड़बड़ी : हेने आईं, दू डेग बढ़ आईं, हम रावाँ के समुझा देतानीं । हम रास्ता धइले जात रहीं । रास्ता में हमरा जाली मिलल अथवा डोंड़ा मिलल अथवा मनीबेग मिलल । ओह में हम आपन रोपेया-पइसा धइलीं । कुछ दिन का बाद में जाली आ मनीबेगवाला आपन चीन्ह गइल । त आपन मनीबेग ले जाई कि हमरा रोपेया-ढेबुआ सहीते लेले चल जाई ?

पंच : त ई बात तोहरा पहिले नूं हमरा से कहल चाहत रहल हा । (दर्शक

का ओर देखत) एह गरीब के राह में जाली मिलल अथवा डोंड़ा मिलल अथवा मनीबेग मिलल । ओह में ई आपन रोपेया-पइसा धइलस । कुछ दिन का बाद में मनीबेगवाला आपन मनीबेग चीन्ह गइल । त खाली आपन ऊ मनीबेग ले जइहन कि रोपेया-ढेबुआ सहीते लेले चल जइहन ? बबुआ गबरघिचोर, तू चल जो गड़बड़ी में ।

गबरघिचोर : ए बाबा, हम कुछ कहब ।

पंच : का कहबऽ ? कहे के बा से कहऽ, बाकी जाये के होई गड़बड़ीये में ।

गबरघिचोर : **सुनहुँ सभासद असल कहूँ, झूठ में लागी पाप ।**
माई-बाबू छुटलन भइलन जालीवाला बाप ॥

पंच : बेटा ले जो गड़बड़ी ।

गलीज : हमार बेटा ह, गड़बड़ी कइसे लेके चल जइहन ?

पंच : जननवाँ नूं तोर ह, बउराह लेके ।

गलीज : ए, छँवड़ा ह हमरा लेके ।

पंच : मउगी के नू बाजा बजा के ले आइल बाड़ऽ । छँवड़ा के बाजा बजा के नइखऽ नू जनमवले ? ई बतावऽ कि केतना दिन में छँवड़ा भइल आ कतना दिन पर तूँ बहरा से आइल बाड़ऽ ?

गलीज : **पन्दरह बरिस भइल परदेस,**
ओहिजे लागल उमिर के सेस ।
बेटा ले के बहरा जाइब,
फिर ना घर में लात लगाइब ।

गलीजबहू : **तेरह बरिस के बबुआ भइलन ।**
बेटा के खोजत बाबू अइलन ॥
लागत नइखे तनिको लाज ।
हँसत बाटे सकल समाज ॥

गलीज : हट लाजवाली !

पंच : अइसन बेलज आदमी दुनियाँ में हम ना देखलीं । लजाये के जगहा कहीं ना मिले त जाके समैना का चोप में मुँहे लगा दऽ ।

गलीज : ए बाबा, रउरा बइठीं हम साबूत देतानीं ।
गाछ लगवलीं कोंहड़ा के, लतर गइल पछुआर ।
फरल परोसिया के छप्पर पर, से हऽ माल हमार ॥

पंच : गलीज हम तोहरा से ममिला पूछतानीं, तूं लगलऽ ध्रुपद गावे ?

गलीज : हम आपन ममिला कहलीं हँ, ए बाबा !

पंच : सही में लपेट-लपेट कहलऽ ह बाकी हमरा ना बुझाइल हा, ए बबुआ !

गलीज : ए बाबा हेने आईं, हम रावाँ के समुझा देतानीं । हमरा कहूँ कोंहड़ा के एगो थाला मिल गइल । ओकरा के हम ले अइलीं । अपना अंगना में रोप देलीं । ओकर सेवा सजम कइलीं । ओकर लत्तर बढ़त-बढ़त हमरा छप्पर से परोसिया के छप्पर पर चल गइल । एगो कोंहड़ा जाके फर गइल । त ऊ कोंहड़वा हमार ह महराज कि परोसिया के बा ?

पंच : त ई बात पहिले नूं हमरा से कहेला । (दर्शक का ओर देखत) एह गरीब का कहीं से कोंहड़ा के थाला मिलल । अपना अंगना में ले आके रोपलस । सेवा-सजम कइलस । लत्तर पसरत-पसरत परोसिया के छप्पर पर जाके कोंहड़ा फर गइल । त का छप्पर के बदौलत एकर कोंहड़वे तूर लीहन ? जेकर थान तेकर कोंहड़ा । बबुआ गबरघिचोर, तूं चल जो गलीजवा में ।

गबरघिचोर : ए बाबा, हम कुछ कहब ।

पंच : का कहबऽ ? कहे के बा से कहऽ, बाकी जाये के होई गलीजबे में ।

गबरघिचोर : **अब कहलन बाबू असल, सुनहुँ पंच दे कान ।**
हम बेसी कइसे कहीं, बालक अबुध नादान ।

पंच : ले जो गलीज, बेटा ले जो रे ।
(तीनों में हल्ला-गुल्ला होता-- 'बेटा हमार बा', बेटा हमार बा ।')

गलीजबहू : (पंच से) ए बाबूजी, हमरा बबुआ के हो बाँह उखाड़ल लोग हो दादा !

पंच : चुप रह । केकर मजाल बा कि तोरा बबुआ के बाँह उखाड़ी लोग रे ? मारब मूका जे पाताल में धँस जाई लोग ।

गलीजबहू : बढ़नी मारो तोरा पंचाइत कइला के ।

पंच : तें अनेने नूं हमरा पर लाल-पियर होतारिस ।

गलीजबहू : लाल-पियर होखीं ना ? कूदि के रावाँ हिनका के देतानीं, कूदि के हुनका के देतानीं । हमार बबुआ आ हमरा से कुछ पूछते नइखीं ।

पंच : नाक चुअवलू त मारब मूका जे..... । तबे से नाक चुअवले बाड़ी

कि पूछते नइखीं, पूछते नइखीं । तूं केकरा से पूछके ई सब कइले बाड़ ? हेने आव, हेने आव । तोरो से पूछब, हेने आव । ई बताव कि हई गड़बड़िया तोरा साथे झूठो के लंद-फंद बन्हले बा कि तोरा गड़बड़िया साथे कुछ बाटे ?

गलीजबहू : जब रावाँ पूछत बानीं त हम कहत बानीं । हइहे गड़बड़ी बाड़न, ए बाबूजी ! सँझिया-बिहनियाँ रोज आवस, ए बाबूजी !

पंच : दुपहरियो में आवत होई । कतनो गोड़ जरत होई बाकी मानत ना होई ।

गलीजबहू : कबो दुआरी पर बइठस ए बाबूजी, कबो केवारी के पाला ध के खड़ा होखस आ कइसन दोनी मुँह कइले राखस । रोज दिन के इहे दासा हम देखीं त एक दिन हम अपना मन में बिचार कइलीं आ सोचलीं कि हमरा पाले चीज बा त हमरा छिपावल पार ना लागल, ए बाबूजी ।

पंच : तोरा पाले कवनो सबूत बा ?

गलीजबहू : बइठीं, साबूत हम देत हईं ।

घर में रहे दूध पाँच सेर, केहू जोरन दिहल एक धार ।
का पंचाइत होखत बा, घीउ साफे भइल हमार ॥

पंच : गलीजबो, हम तोरा से ममिला पूछतानीं आ तें लगले झूमर गावे ।

गलीजबहू : हम झूमर ना गवलीं हाँ, ए बाबूजी । हम आपन ममिला कहलीं हा । रावाँ नइखे समुझ में आवत त हेने दू डेग बढ़ि आईं, हम समुझा देतानीं ।

पंच : कह-कह, ममिला में ना लजाये के । (दर्शक का ओर देखत) गलिजवा बो लाद के साफा आदमी ह ।

गलीजबहू : ए बाबूजी ! पाँच सेर दूधवा अपना देहिया के मोकरर करतानी । बाकिर जोरनवाँ के कहे में लाज लागता ।

पंच : कह-कह, ममिला में ना लजाये के, कह । अबगे त ममिला मोहड़ा पर आइल बा ।

गलीजबहू : (गड़बड़ी का ओर इसारा करत) जोरनवाँ हिनके नू पसेनवा ह, बाबूजी ।

पंच : ई बात तोरा पहिले नू हमरा से कहेला । मनलीं कि केहू के घर में दू सेर-चार सेर दूध धइल बा । ओकरा के अंवटलस, पकवलस, टोला-महल्ला से तनीएसा जोरन ले आके ओकरा में लगा देलस । त का जोरन के बदौलत ओकर सँउसे करने उठवले चल जइहें ।

जेकर दूध तेकर घीव ।

गलीजबहू : जेकर दूध तेकर घीव काहे ना ए बाबूजी । हतने भर जोरनवाँ खातिर हमरा बबुआ पर दावा कइले बाड़न ।

पंच : अरे बबुआ, तूं चल जो अपना मतरिया में ।

गबरधिचोर : बाबा ! हमहूँ कुछ कहब ।

पंच : कहबऽ का ? कहे के बा से कह लऽ बाकी जाये के बा मतरिये में ।

गबरधिचोर : साँच बात कहली मइया, से हमरे मनमान ।
झूठो झंझट लागल बा सुनहु पंच सज्ञान ।।

पंच : ले जो गलीज बो ! बेटा ले जो रे !
(तीनों में फेर झगरा सुरू हो जाता । पंच के बेइमान बनावत बा लोग ।)

गलीज : (उठ के पंच के धसोरत) चललऽ हा पंचाइत करे कि हमनी में खून करावे ?

पंच : हम का करीं ? जेकर हक बा, सुपत होता, तेकरा के हम देतानीं ।

गड़बड़ी : ए बाबा, एने आईं सुनीं ।

पंच : कहे के बा से कहऽ । उठ-बइठ के ममिला ना होखे । जे देखी से कही कि बाबा बेइमान हवन ।

गड़बड़ी : हेने आईं, बेइमान केहू ना कही ।

पंच : का कहबे से कहऽ ।

गड़बड़ी : हम रावाँ से कहतानी कि छँवडा के हमरा में रखवा देतीं त रावाँ के हम दू सौ रोपया देतीं ।

पंच : कहऽ हो गड़बड़ी, आज ले बाबा का रोपेया के लोभ ना भइल त आज तोहरा दू गो रुपली से बाबा के दिन जाये के बा ?

गड़बड़ी : दू गो ना ना नूं कहली हँ ।

पंच : दू सऽ कहऽ, चार सऽ कहऽ । ए रोपेया कावर ताके वाला बाबा के जीव हवन ?

गड़बड़ी : दू गो ना कहली हँ, दू सौ देब ।

पंच : हमरा दुइये गो बुझाइल ह, ए बबुआ । दू सइ कहलऽ हऽ ?

गड़बड़ी : हँ, ए बाबा ।

पंच : जो होने बइठ । ममिला में ना घबड़ाये के ह । गलीज-सलीज बेटा ले जइहन ! तनी-मनी सवाँगन के खबर दे दीं त इनकर चाम खींच लीहन स ।

गलीज : ए बाबा, तनी हेने आईं ।

पंच : कहे के बा से ओनहीं से कहऽ ए बबुआ !

गलीज : ना, तनी दू डेग बढ़ आईं, ए बाबा ! रउरा से तनी एगो भितरिया बात कहे के बा ।

पंच : कहे के बा से कहऽ, ए बबुआ ! जानते बाड़ऽ कि हम कतना भक्त आदमी ठहरलीं । बिना भोजन भइले स्नान ना होखे ।

गलीज : छँवड़ा के कह-सुनके हमरा में रखवा देतीं त रावाँ के हम पाँच सौ रोपया देतीं ।

पंच : तोहरा अइसन लोभी आदमी से हमरा दुख हो जाला । पाँच गो रुपली से बाबा के दिन जाए के बा ?

गलीज : पाँच गो ना कहलीं हँ, ए बाबा ।

पंच : पाँच गो ना तूं पाँच सइ कहऽ, पाँच लाख कहऽ, रोपेया कावर ताके वाला बाबा ना हवन ।

गलीज : पाँच सौ नू कहतानीं ।

पंच : पाँच सइ ? हमरा बुझाइल ह कि पाँच गो कहलऽ ह । सुनऽ ए बबुआ ! रोपेया-पइसा कवनो चीज ना ह । ई त हाथ के मइल ह । आज बाटे बिहने नइखे । बाकी तोहरा घर से आ हमरा घर से तोहरा दादे का बेरा से निअराह चल आवत बा, ए बबुआ ! ई निबाहे के बा । पाँच सइ नू कहलऽ देबे के ?

गलीज : हँ, ए बाबा !

पंच : जो बइठ ग । गड़बड़ी कादो बेटा ले जइहन ! ममिला में ना हड़बड़ाये के । (गलीज बो से) गलीज बो रे ?

गलीजबहू : का ए बाबूजी ?

पंच : तोर ममिला फेर से देखाई ।

गलीजबहू : पहिले का देखाइल ह, ए बाबूजी ?

पंच : ऊ तनी ऊपरे-ऊपरे देखाइल रहल ह ।

गलीजबहू : हमरा पाले त रोपेया-पइसा नइखे, ए बाबूजी ! कह-सुन के बबुआ के हमरा में रखवा देतीं त हम राउर सेवा-सजम क देतीं, ए बाबूजी !

(गाना-पद)

ओकर से हउअन बेटा हमार, ओदर से ।
साँच बात में आँच लागत बा,
पूछीं बोला के नाऊ चमार । ओदर से.....

पुत्र भइल जीभ स्वाद गइल सभ,
तनिको ना खइलीं बेकार । ओदर से.....
अब आगा पर दागा होखत बा,
घेरलस ठग बटवार । ओदर से.....
कहत भिखारी तइयारी भइल अब,
पिअला से दूध के धार । ओदर से.....

(चौपाई)

चारो तरफ से उठल हावा ।
एह में नइखे केहू के दावा ॥
बबुआ हउवन बेटा हमार ।
पूछीं बोला के नाऊ-चमार ॥
नव महीना पेट के भीतर ।
रहसु त पूजलीं देवता-पीतर ॥
जनम के समय में दुख भइल ।
इहे बुझाय जे अब जीव गइल ॥
होखत रहे राम से बात ।
असहीं होला जीव के घात ॥
लालच में ना लउके जान ।
बेटा दियाद हे भगवान ॥
बबुआ भइल आसरा लागल ।
अब घेरले बा दू गो पागल ॥
दूनों ओर के जोर बा भारी ।
राम-राम कहि रहे भिखारी ॥
हम अबला कछुओ ना जानी ।
पंच गोसइयां राखऽ पानी ॥
झगड़ा के ना जानी भेद ।
होखत बा करेज में छेद ॥
रो-रो कहे भिखारी नाई ।
बेटा दियाद काली माई ॥
कुतुबपुर में बाटे घर ।
हमहीं हई बेटा के जर ॥

जिला छपरा हउए खास ।
बबुआ में लागल बा आस ॥

(बेटा से बिलाप गान)

सिवसती गनपति, हरहु बेकार मति
चरन के चेरी के इयाद राखऽ हो बबुआ !
पेटवा भीतर माँही, गम कुछ रहे नाहीं,
तबहीं से आसरा लगवलीं हो बबुआ !
बनि के तोहार कुली, लालच में गइलीं भूलि
नव मास ढोवलीं मोटरिया हो बबुआ !
दिन-रात हूल आवे, घर ना आँगन भावे,
चलत में गोड़ भहरात रहे हो बबुआ !
जब होखे लागल पीरा, दुखवा समुझऽ हीरा
मुखवा से कहतानी कमती हो बबुआ !
सुनऽ दुलरू ! कहीले से, चार दिन पहिले से,
सउरी में दाँत लागि जात रहे हो बबुआ !
केहू कहे हउवे दूत, केहू कहे हउवे पूत,
केहू कहे भीतरे मुअल बा हो बबुआ ।
केहू कहे मरि जाई, चुरइल धइले बा माई,
साँड़ासा सँघरनी के खइलसि हो बबुआ !
अब तब घरी रहे, ईहे सभ केहू कहे,
चमइन हाथ लाके कढ़लसि हो बबुआ !
नया भइल जनम मोर, असहीं ह पैदा तोर,
तेलवा लगाइ के अबटलीं हो बबुआ !
सुधि करऽ भइला के, गूह-मूत कइला के
माई मत जानऽ हमें दाई जानऽ हो बबुआ !
ऊहत भिखारी नाई, कवन करीं उपाई
मुँहवाँ के तोहरे दुलारवा हो बबुआ !
कुतुबपुर हउवे ग्राम, रामजी सँवारऽ काम
जाति के हजाम जिला छपरा हो बबुआ ।

पंच : रे बबुआ तें मतरिया का रोवला से मतरिये में रहबे ?

गबरधिचोर : राँवा जेकरे में कहब तेकरे में रहब ।

पंच : बाह बा, रहे के बा तोहरा, बाबा काहें आपन ईमान खराब क

देस ? बाबा कहिहन कि तूं इनरा में कूद जा, त कूद जइबऽ ?

गबरघिचोर : कूद जाइब ।

पंच : बाबा कहिहन कि तूं आपन जान दे दऽ, त तूं दे देबऽ ?

पंच : हम कहब कि तोहरा में तीनों के हक बराबर बा । तोहरा देह नापि के काटि के तीन गो टुकड़ा कइल जाई । तीनों में गोटी परी, तोरा कबूल बा ?

गबरघिचोर : हँ बाबा ! कबूल बा ।

पंच : कबूल बा नू ?

गबरघिचोर : कबूल बा ।

पंच : जल्लाद के बोलाव रे !

समाजी : देहु खबर जल्लाद के जाई ।
सुनत बात आवत हरखाई ॥
कर हथियार धार बनवाई ।
सभा मध्य में पहुँचे आई ॥

पंच : बबुआ सूत रहऽ ।

गबरघिचोर : हम कुछ कहब ।

पंच : (गबरघिचोर से) अच्छा कहऽ ।
(जल्लाद फरका बइठत बाड़े)

गबरघिचोर : (रो-रो के)
अइसन लिखलन करम में बिधाता ।
सुंदर नरतन बिमल पाइ के टूटल जगत से नाता ॥
हीत-मित्र केहू काम न आवत, बैरी भइलन पितु-माता ।
सभा-मध्य में बध होखत बानीं, सुनहु राम सुखदाता ।
बड़ उपहास भइल घिचोर के, एको ना भिखारी से कहाता ।

(चौपाई)

तीन जना में झगड़ा भइल ।
गबरघिचोर के जीव गइल ॥
जेकर हिस्सा जहाँ से होई ।
काटि के बाँटि लेहु सब कोई ॥
करनी के फल परल कपारा ।
तन पर चक्कर चढ़ल हमारा ॥

बड़का दुख परल जगबन्दन ।
भइल अकाल मृत्यु रघुनन्दन ॥
जरिये चलली मइया कुचाली ।
छुड़ी का हाथे भइलि हलाली ॥
रामचन्द्र अवधेस कुमारा ।
बहे चाहत बा खून के धारा ॥
लखन, भरत, सतरूधन भइया ।
भँवर के पार करहु मोर नइया ॥
धनुस-बान धरि चारो भाई ।
एह अवसर पर होखऽ सहाई ॥
ना कइलीं तीरथ-ब्रत-दान ।
बालकपन बा हे भगवान ॥
माई-बाप के सेवा नाहीं ।
नाहक नर भइलीं जग माहीं ॥
सिर पर पहुँचल तुरते काल ।
देरी भइल दसरथ के लाल ॥
भइल सिकाइत जग में भारी ।
दूगो बाप एक महतारी ॥
एह जीवन ले मूअल बेस ।
सुभ गति दे दऽ सिरी अवधेस ॥
जयति-जयति जय कोसल-किसोरा ।
नइखे आवत करे निहोरा ॥
दाया तोर मोर अग्याना ।
करिहन तुरत परान पेयाना ॥
कुतुबपुर के कहे भिखारी ।
जइसन मरजी होय तिहारी ॥

पंच : बस-बस । बस सूतऽ हंने ।
(घिचोर सूत जात बाड़न । पंच देह नापके चीन्ह लगावतारन । जल्लाद के काटे के हुकुम दिआता ।)

गड़बड़ी : देखि हऽ बाबा, ठीक से नपिहऽ एने-ओने ना होखे पावे ।

गलीज : हँ बाबा, ठीक से नापब ।

पंच : रे बउराह सभ, जहाँ बबे बाड़न तहाँ एने-ओने होई (जल्लाद से) रे एक छेव एहिजा से काट, एक छेव एहिजा ? से काट ।

जल्लाद : ए बाबा, हमहूँ कुछ कहब ।

पंच : तें का कहबे कह ।

जल्लाद : **जैगो टुकड़ा करब हम**
फी चवन्नी से लेहब ना कम

पंच : कटइया त तोर मोनासिब बा । दऽ हो गड़बड़ी, चार आना पइसा द ।

गड़बड़ी : लीं बाबा ।

पंच : गलीज, चार आना पइसा दऽ ।

गलीज : लीं सरकार ।

पंच : गलीज बो रे !

गलीजबहू : का ए बाबूजी ?

पंच : चार आना पइसा दे तेहूँ ।

गलीजबहू : चार आना पइसा का होई ए बाबूजी !

पंच : तोरा छँवड़ा के कटाई देबे के बा ।

गलीजबहू : ए बाबूजी जिअते दूनों जना में केहू के दे दीं, बाकी हमरा लइका के मत कटवाईं ।

पंच : जिअते इनका भा उनुका के दे दीं आ तें हिस्सा ना लेबे ?

गलीजबहू : ना ए बाबूजी, जिअते दूनों जाना में केहू के दे दीं ।

पंच : देख तोरा बुझात नइखे, हम पुरान हो के तोरा के समुझा दे तानीं । तोर जनमल ह, तोरो एक टुकड़ा हिस्सा मिल जाई त तोर मन के अरमान रह जाई ।

गलीजबहू : ना हमरा लइका के मत कटवाईं ए बाबूजी ! जिअते दूनो जना में केहू एक जना के दे दीं ।

गड़बड़ी : ए महराज ! दुइये टुकड़ा करवाईं, ई झगरा छूटे ना दीही ।

गलीज : ए महराज ! दुइये टुकड़ा करवाईं ।

जल्लाद : काटीं ?

पंच : (हाथ से रोकत) रह । हई गड़बड़ी कहत बाड़न– दू टुकड़ा हो जाय, हऊ गलीज कहताड़न– दू टुकड़ा हो जाव । जेकरा अपना बेटा के दाह नइखे तेकर बेटा कइसन ? बेटा के दाह बा मतरिया के । उठाव बेटा, ले जो गलीज बो !
(गलीज बो बेटा ले जा तारी)

समाजी : ज्यों बेटा माता के संग जाये ।
त्यों गलीज-गड़बड़ी लजाये ॥

पंच : गाना उहे ह जेह में मालिक के नाम होय । नकल तमासा उहे चीज ह जेह में धर्म के चर्चा होय । गबरघिचोर नाटक में धर्म इहे समुझे के चाहीं जे गबरघिचोर के मतारी कइसन दुख कहि के रोवल बाड़ी । गाना में, चौपाई में आ पूर्वी में जइसन लड़िका होखे में मतारी के दुख होला, जवना दुख में मतारी लोग के प्रान छूटि जाला से सब बरनन करत बाड़ी । ई बात दुनियाँ में बेटा वास्ते उपदेस बा ।

गबर-घिचोर के मतारी एगो आ बाप दू गो । से बेटा पंच के तजबीज से आपन प्रान दे देबे पर तइयार बाड़न । ईश्वर से विनय करत बाड़न जे हम मतारी-बाप के कुछ सेवा ना कइलीं । एह बात के बेटा का मोह बा । बाकी आजकल के जे बेटा असल बा से कह देता जे पंच के बात ना मानब । खास करके उनुकरा अपने जान के फिकिर बा । माता पिता के सेवा के फिकिर तनिको नइखे । सभा के अन्दर गबरघिचोर कइसन चौपाई कहत बाड़न-

मातु-पिता के सेवा नाहीं ।
नाहक नर भइलीं जग माहीं ॥

राहुल सांकृत्यायन

महापंडित, त्रिपिटकाचार्य आ पद्मभूषण राहुल सांकृत्यायन के जनम 9 अप्रैल 1883 ई. के अपना ननिहाल पंदाहा (आजमगढ़) में भइल रहे । आपन घर कनइला (आजमगढ़) रहे । पिता के नाम - गोबर्धन पाण्डे, माता के - कुलवन्ती देवी आ खुद के घरेलू नाम केदार नाथ ।

बचपने से ई घुमक्कड़ सुभाव के रहस । नाना के घरे धीव ढरक गइला पर मार खाये का डरे जे भगलन, तब से बाहरे-बाहर घूमत रहलन ।

भौतिक यात्रा इनकर दक्षिण भारत से शुरू होके श्रीलंका, तिब्बत, यूरोप, सोवियत रूस, जापान, कोरिया, मंचूरिया आ इरान, चीन आ धार्मिक-वैचारिक यात्रा सनातन वैष्णव, कट्टर गाँधीवादी, बौद्ध धर्म होत साम्यवाद में विश्राम लेलक । बीच-बीच में स्वतंत्रता आन्दोलन का दौरान बक्सर, हजारीबाग आदि जेलो के सफर भइल । किसान आन्दोलन में काम करत अमवारी (सीवान) में जमीन्दार के लठैत के चोटो कपार पर लागल जवन आखरीकाल (1962-63) में स्मृति-लोप आ मृत्यु के कारण बनल ।

गँवई शादी के अलावा ऊ दूगो आठर शादी कइले रहस, एक त रूसी महिला 'लोला' से आ दोसर पहाड़ीबाला कमला सांकृत्यायन से । उनकर बेटो-बेटी लोग मौजूद बा ।

राहुल सांकृत्यायन के छोट-बड़ 35 भाषा के जानकारी रहे । उनका कलम से लगभग 150 किताबन के लेखन भइल ।

जहाँ तक भोजपुरी के संबंध के बात बा त एक त जन्म-स्थान आजमगढ़ भोजपुरी भाषा-भाषी क्षेत्र में आवेला दोसर सारण जिला जवन 1912 से 1939 ले इनकर कर्म-क्षेत्र रहल, निछक्का भोजपुरी प्रदेश के अन्तर्गत पड़ी, तीसरका 1948 में जब इनका के अखिल भारतीय भोजपुरी सम्मेलन के दोसरका अधिवेशन (गोपाल गंज) के अध्यक्ष बनावल गइल त अपना ऐतिहासिक भाषण में खुल के भिखारी ठाकुर के नाटकन के प्रशंसा आ भोजपुरी भाषा-भाषी के विकास बदे अलग भोजपुरी प्रदेश बनावे के मांग कइलन ।

फेर 1924-44 में ऊ अपना कलम से भोजपुरी में कुल आठ नाटकन के रचना कइलन । तीन परिवारिक आ सामाजिक नाटक नईकी दुनिया, जोंक 'मेहरारुन के दुरदसा' नाम से आ पाँच आर्थिक आ राजनीतिक नाटक जपनिया राछछ, जरमनवा के हार निहचय, देस-रच्छक, टुनमुन नेता, ई हमार लड़ाई शीर्षक से ।

इहँहीं से भोजपुरी नाटक आपन लोक जीवन के परम्परावादिता छोड़ के वैचारिक धरातल पर पैर रखलक ।

मेहरारुन के दुरदसा

नाटक के खेलाड़ी

1. लछिमी	मुखिया लइकी
2. जसोदरा	लछिमी के सखी
3. सीता	लछिमी के सखी
4. रामकली	लछिमी के मतारी
5: सूखा	गाँव भर के फूआ
6. उधो परसाद	लछिमी के भाई
7. रामलेखावन लाल	बुरबक दुलहा
8. फरगुद्दी उपधिया	बुरबक दुलहा

अंक-1

(गीत गावल जाति-आ)

एके माईबपवा से एक ही उदरवा में,
दूनो के जनमवाँ भइल, रे पुरुखवा ।
पूतके जनमवा में नाच आ सोहर होला,
बेटि के जनम परे सोग, रे पुरुखवा ।।1।।
धनवा धरतिया प बेटवा के हक होला,
बिटिया के किछुवो ना हक, रे पुरुखवा ।
मरदा के खइला-कमइला के रहता बा,
तिरिया के लागेला केवाड़ रे पुरुखवा ।।2।।
खेवे के रणपवा जिनिगिया भर परी ओके,
लइके जे मरदा मुअल, रे पुरुखवा ।
तिरिया के मुवले त बतिये कवन पूछा,
जिअते सवतिया ले आवे, रे पुरुखवा ।।3।।
अँखिये के देखतै पतुरिया ले रखले बा,
मार-गारी देला दिन-रात, रे पुरुखवा ।
ओहि रे खसुरवा मरदवा के किछु नाहीं,
तिरिया के भकसी झोकावे, रे पुरुखवा ।।4।।

[सीता, लछिमी, जसोदरा तीनिगो जुवान लइकी बइठि के बतियावत बाड़ी]

सीता : जसोदरी ! आज त तोर गोड़े धरती पर नइखे पड़त ?

जसोदरा : भतीजा भइल ह नु सीता ! तु नइखू जानत ? भइया के तीनिगो बिटिये भइल रहली सन, से आज घर में बेटा भइला से माई खुसिहाली के त पुछबे मति करा !

लछिमी : आ तोहरा खुसिहाली के देखि के त बुझात-आ जसोदरा ! जनु तीनों तिरलोक के राज तोहरे के मिलि गइल ह ।

जसोदरा : भतीजा नु भइल ह लछिमी बहिन !

लछिमी : आ तीनों भतिजिया जब भइल रहलीं तब्बो एइसने खुसिहाली भइल रहे ? तब्बो तोहरा घर में सोहर गवाइल रहै ?

जसोदरा : तू कौनो आन मुलुक से आइल बाड़ू दीदी ! बेटी के जनमला पर ना नु सोहर गवाला ।

लछिमी : मेहरारू के जनमला पर सोहर ना गवाला, खुसिहाली ना मनावल जाला, बलुक उलटे घर भर पर सोग उदासी छा जाला, मालूम होला जनु घर के केहू मरि गइल बा । आ मरद के जनमला पर, ई सोहर, ई नाच, ई बाजा-गाजा ! जसोदरा ! तोहरा कब्बो मन में ना आवै, काहे बेटा-बेटी भै मरद-मेहरारू के ई दु आँख से देखल जाला !

जसोदरा : इहै सनातन से चलि आइल बा दीदी !

लछिमी : सनातन से चलि आइल रहै सत्ती होखल । सौ बरिस भइल ह, बत्र भइला, नाहीं त बड़का जाति में– एक जनमियाँ में-सौ गो बेवा में दसे-बारहगो जीयै पावत रहली, बाकी कुलि आगि में झोंकारि के मुवा दीहल जात रहली । साल में एक-एक गाँव में दस-बीस गो मेहरारू जियते जरावल जायें । देस भर में हर साले दस लाख से कम मेहरारू न जरावल जायें ।

जसोदरा : दस लाख दीदी !

लछिमी : आ पनरह सौ बरिस ले सत्ती के नावे मेहरारू जरावल जात रहलीं, हिसाब लगावा कै करोड़ कै लाख हमनी के जाति के मेहरारू मुवाइल गइली ।

जसोदरा : दस लाख के हिसाबे डेढ़ अरब आ एको लाख मानल जाये त पनरह करोड़ सत्ती भइली दीदी ?

लछिमी : सत्ती मति कहा जसोदरा बबुनी । अदिमी के आगि में जरावे के कैसन निम्मन नावँ धइले रहल ई मरद लोग ।

जसोदरा : लछिमी दीदी ! लोग कहत-आ कि अपना खुसी से मेहरारू आग में जरि जास ।

लछिमी : कब्बों भउर पर गोड़ परल बा जसोदरा बबुनी !

जसोदरा : एक बेर कराही में पूड़ी डारे में घिउ उछरि परल रहे दीदी ! एही दहिना हाथ में । आलू पीसिके बान्हल गइल, केतना-केतना दवाई कइल गइल । आजो ऊ दुख मन परेला त आँख में लोरि आवे ले दीदी ।

लछिमी : दुख दरद के समुझावे के होला, त कहल जाला, 'देही में आग लागल बा' 'करेजा में आगि लागल बा' । आगि लगला से बेसी दूसर दरद नइखे । अजानै विख दे के मुआला में अदिमी के किछु ना बुझाई, मुदा पुरुख जाति हमनी के मुवावै खातिर बिख कै दिहल ना पसन्न कइले ।

सीता : ऊ चहले दीदी ! कि जौना तरे से बेसी से बेसी तकलीफ होय, ओहि तरे से एकनी के मुवावै के चाही । विख से भै तरुवार से दु-टुक काटि देहला में ऊ दुख ना नु होखे ।

जसोदरा : त सीता दीदी ! ई त सोरहो आना कसैपन रहल हा ।

लछिमी : जसोदरा बबुनी ! हिनुतान में पुरुख जाति के गुन गावे बखत ई मन में रखिहा, कि ई उहै लोगवा ह जे डेढ़ अरब मेहरारुन के सबले निधिन, सबले बाउर, सबले सासत के मौवत मरलस । डेढ़ अरब मेहरारुन कै हतिया एही मरद लोग के गरदन पर बा ।

सीता : आ देखावे खातिर पोथी में लिखि देलन् कि बच्चा आ मेहरारू के ना मारे के । 'छप्पन मूसा मारिक के बिलाई भइलीं भगतिन' इहै कहाला ।

लछिमी : तोहरा भतीजा से हमरा के कौनो दुसमनागत नइखे जसोदरा बबुनी ! बाकी जब बिटिया के बखत सोग मना के बेटा के बखत सोहर गावे के मेहरारू एखट्टा होलीं, त हमरा बूझि परैला, कि डेढ़ अरब मेहरारुन के आग में झोंकारि के मुआला के बधावा हमनी गावतानी ।

जसोदरा : लछिमी बहिन ! हमरा मन परत-आ कराही के घिउआ से आपन हाथ जरला के दुख, फेनु ऊ डेढ़ अरब मेहरारुन के छटपटा छटपटा मूअल ।

सीता : जेकरा चारो ओर मरद डंडा लेहले खड़ा रहे, कि जे आखिर बेर कतहू जिउ बचावे चहलस, त ओके भगहू के ठाँव ना मिले ।

लछिमी : ऊ काहे के कहत बाड़ू सीता ! अबहिनो केतना जाति में लइकिन के जनमत मुवा दीहल जाला, हाँ, आगि में झोंकारि के ना ! मरदा कसैवा के हाथ में होइत त ऊ उहै करित, बाकी ई काम मेहरारू से लेल जात-आ , मरद कसाई मेहरारू के कसाई बनावत-आ । सोचा मतारी

के करेजा । पसु-पंछी में ऐसन मतारी मिलल दुरलभ बा, जे अपना बच्चा के मुवावत देखी ।

जसोदरा : आ मेहरारू बेटी के अपने हाथे मुवावेले ?

लछिमी : हाँ, बबुनी ! बाकी परबस परिके । मरद के राज हवै, मरद के हुकुम ना मनला से ओकर गुजारा कैसे होई ? एही खातिर मेहरारू आपन दयामया छाड़ि के जनमतै बेटी के मुआदेले । हाँ, मुवावै में तनी छोहि देखावै ले, आगि में ना जरा के नून भै खैनी चटा देले, चाहे नार नाक-मुँह पर धै देले, जैना से साँस बन्न होके बचिया मर जाये । एकरा साथे दु-चार बुन्न लोरो गिरा देत होई ।

जसोदरा : घर कै मेहरारू ऐसन होई, ई हमरा बिसवास न रहल ह दीदी !

लछिमी : मुदा ई मेहरारू के मतारीपन छोड़ावल पुरुख के काम ह, जसोदरा ! आज के दुनिया में मेहरारू के हाथ-गोड़ बान्हि के मरद के सामने पटकि दीहल गइल बा । ओकर आपन किछु नइखे ।

सीता : धरम करम के पोथी समुच्चा मरद के बनावल हा, जौना में मरद लोग हमनी के खेलाप हनि हनि के कलम चलौले बा । ई त सात समुन्दर पार से दूसर जाति के लोग, आइल, जे सत्ती– ई जियतै मेहरारू के जारल– बन्द कइलस । जमनतै बिटिया के मुअब हूँ के रौके-थामै के बड़ कोसिस भइल बा, तौनो पर कतहूँ-कतहूँ ऊ चलि रहल बा । पोथी-पतरा के धरम कै चलल होइत त आजि ले सत्ती ना बंद भइल होइत ।

जसोदरा : सबसे बेसी धरम-करम हमनिये करी ले । हमनी एतना बरत-उपास ना केहू करे, ना साधु-बराभन के दान केहु देय ।

लछिमी : दु अच्छर जे पढ़ै के मिलल बा जसोदरा ! इहाँ पोथी में बरजित हा । अबहूँ देख लइकिन में कइगो पढ़ावल जाली ।

सीता : लइकन के पढ़ावै में करजा-कुवाम करेके बाप लोग तयार रहेला, बाकी हमनी के पढ़ावे में कानियो कौड़ी खरच जबूनै बुझाला । कहैला लोग कि का ई पढ़ि के मंसी-दरोगा होइहैं ।

जसोदरा : सीता दीदी ! जे हमनी के बेटा लेखा पढ़े कै सुबिहिता होइत, मँसी-दरोगा होये कै मोका मिलित, त हमनी केहू से पाछै ना रहतीं दीदी !

लछिमी : ई साँच हा बबुनी ! बाकी जब ले बेटवन के भइला में सोहर गाके हमनी अपनै सोर काटब, तब ले कौनो मोका न मिली । ई त किछु बाबू भइया लोग जे बिटियन के पढ़ावत-आ, ओहू में दूसरै तमलब बा ।

जसोदरा : कवन मतलब बा दिदिया ?

लछिमी : पढ़ल-गुनल लइका मुरुख लइकी से बियाह नइखै करै चाहत, एही से तिलक-दहेज लेखा पढ़ौहू कै चाल भइल हा ।

सीता : आ देखलू नु जसोदरा ! हमरा टोला-महल्ला में देवकलिये नु सोहर, गारी गावे में सबसे फरकोर बाड़ी ?

जसोदरा : हाँ, दीदी ! ऊ सोहर में त अदबदाय के चहुँपल रहेली ।

लछिमी : मेहरारुन कै महिमा हेठ कइला खातिर ई मरदन के जीत के गीत गावल हा, अउरि किछुओ ना ।

जसोदरा : त हमनी के सोहर ना गावै के लछिमी दीदी !

लछिमी : ई सोझै दु आँखि से देखल बा नू ?

जसोदरा : बा नु, नाहीं त बिटियौ के जनमला में सोहर गावे के चाहीं ।

लछिमी : मेहरारू सोहर गावे के छोड़ि दी, त इनरासन गरम होखे लागी । हमनी के भागि अपना हाथ में नइखे, हमनी के नाक छेदाइल बा, जौनी में मरद सोना के नाथ पहिरौले बाड़ें ।

सीता : रसरी के होइत, त हमनी तुरियो फेंकती, मुदा पुरुखपन, हमनी सोना के लोभे ऊ नथेल नाकि में पहिरले फिरतानी ।

जसोदरा : त हई सोहर गावै के का कहत बाड़ू, लछिमी दीदी !

लछिमी : हमनी के सोहर एक्को इयार्द ना करैके, न रही बाँस न बजी बाँसुरी ।

जसोदरा : ई निम्मन कहत बाड़ू दीदी !

लछिमी : मरद हमनी के एह-एह तरे से जकड़बंद कइले बाड़न् ! खेलौना में देखा, हमनी के छिपिया-मउनिया, जाँता-चूल्हा, बुड़ुवा-गुड़िया कै खेलौना मिलेला औ लड़कन के तीर-धनुही, घोड़ा-हाथी, गुल्ली-डंडा । एहू के भीतर भेद बा जसोदरा बबुनी ।

जसोदरा : कवन भेद बा लछिमी दीदी ?

लछिमी : इहै जे पुरुख लइकैयें से अपना भुजा पर भरोसा करें, हियाव आ बिरताई सीखे आ हमनी मेहरारुन के मन में बइठि जाये, कि हमनी के करम में खाली जाँता-चूल्हा बा ।

जसोदरा : बाकी ई बतिया ज मेहररुअन के कहल जाय, त उहौ मरही धउरिहैं ।

लछिमी : ई नइकी बात नइखै । राजा बाबू लोग गरिबवन के पीटै खातिर गरिबने के पोसि के राखैला । एही तरे मरद लोग मेहरारुन के दबावे खातिर मेहरारुन के गोइन्दा रखले बा ।

जसोदरा : लछिमी बहिन ! हमनिओ कै कबहूँ दिन लौटी ?

लछिमी : दिन लौटल ठीक कहत बाड़ू जसोदरा बबुनी ! एक दिन रहे, जब मतारी-मेहरारू के राज रहे, ई बात हेई धरम-करम के पोथी में नइखे, ई पोथी त हमनी की आँखि में धूर नु झोंकै के बनल बा ।

जसोदरा : हाँ, त पहिले मेहरारुन के राज रहल ?

लछिमी : राजा-रानी लेखौ राज मत समुझिहा । ऊ राज पंचैती ऐसन रहै ।

जसोदरा : से राज उलटि कैसे गइल ?

लछिमी : मेहरारू के रोजी मरद चलावे लागल, ओही से ।

जसोदरा : त जब ले मेहरारू मरद के कमाई खात रही, तबले ऊ मरद के चेरि बनि के रही ?

लछिमी : हाँ, एमें तनिको झूठ ना हवे ।

सीता : देखीं नु हमार माई बाबूजी से कम ना नु खटैले । बाबूजी दस बजे से चारि बजे ले छः घंटा इसकूल में पढ़ावे जाले, आ माई घड़ी रात रहैले तबै से उठ के आधी रात ले रसोई, चौका-बासन, कूटल-पीसल केतना काम करत रहैले, बाकी बाबूजी के छः घंटा पढ़ावल काम समुझल जाला, माई के अठारह घंटा खटल, कौनो गिनती में ना हवे ।

लछिमी : आज दुनिया भर में खाली रूस के मेहरारू मरद के चेरी नइखीं । से कैसे ? एही से कि ऊ मरद के दोहल लूगा-कपड़ा ना लेलीं ।

(परदा गिरि गइल)

अंक-2

(गीत गावल जाति-आ)

हम चेरी करीं दिन भर टहलवा ॥
हमरे से जेकर जनमिया करमिया,
सेई हो भइल हमरा से फुटलवा ।
गुँगवा के चुमि चुमि बोलिया सिखैली,
से रखले हमरा के बलेलवा ॥
बारे से परदा घुँघटवा कढ़ौले,
घरवै भइल हमनी के जेहलवा ।
दुधवा के पी पहलवनवा बनल जे,
से ही कहे हमरा के अबलवा ॥

जिभिओ चलावै औ हथवो चलावै,
से देखि के हँसै लागे महलवा ।
राजी धरमवो में मरदै के चलती,
हामर नहीं केहु मानै कहलवा ॥
ढोल औ पसू समतुलवा जे भइनी,
इहँवा खसूर हमनी के दबल बा ।
ढहलै पुरनका नौका उठत बा,
ई आहल हमनी के समलवा ॥

[देसन से रेल चलि गइल, गोड के झाँझर झन-झन करत दु-गो दुलहिन समुच्चा अंग ढँकले ठाड़ बाड़ी, दु-गो मरद आ के एक नजर देखि के एगो मेहरारू के एक, दुसरकी के दूसर चादर के खूँट धै के ले चलल । ओकनी के निकरि गइला पर एगो मरद आवत-आ । उहाँ केहू मेहरारू के ना देखि के छाती पीटत-आ ।]

मरद : हाइ, हम लुटा गइली, हाइ ! केहू देखला ह भइया ! ललकी चादर ओढ़ले हमार मेहरारू हेही ठाड़ रहल हा । ए दादा ! हम समान उतरवावै लगनी हा, एही में ना जानी कहाँ अलोप हो गइल ।

लछिमी : अलोप ना हो गइल मुरुख चपाट राम ! हेंही दुगो मेहरारू लाल चादर लाल लुग्गा ओढ़ले-पहिरले ठाढ़ रहलीं, आ दु गो मरद चुपचाप एक-एक के चादर धैंके, बकरी कै कान पकड़ला लेखा, ले गइलैं हा ।

मरद : ए माई-बहिनी! ओमें एगो मेहरारू हमरो रहलि हा । कौना ओर ले गइल हा ? तनी केहू बतावा ए दादा ! हमार सात पुहुत के इजत चलि जाई ।

(छाती पीटत-आ)

लछिमी : त सात पुहुत के ईजत बोरा में कस के नु ले आवेके चाहत रहल हा ?

मरद : एको अँगुरी के पोरो न लौकत रहल हा, ए दादा ! केहू देखले होखै, त बतावा । कौना ओर हतियरवा ले गइल ह ?

लछिमी : एगो पुरुब आ एगो पच्छिम गइल ।

मरद : अपने बड़ सय्यान बुझातानी, अपने हीं बताईं, हम कौना ओर जाईं ?

लछिमी : जइबा, आ जे असल मेहररुआवाला मरदवा भेंटाइल आ ओकरा के तनिको टोकला, त हाड़गोड़ एकको ना छोड़ी ।

मरद : (छाती पीटि के) हे भगवान, कहाँ गइल मोर इजतिया । कवन मुँह लेके जायेब घरे, गवना ले आवत रहनी हीं । हे दादा केहू मदत करिहा, गरीब कायथ लुटा गइल ।

लछिमी : कयथन किहां त किछु कम परदा होला ?

मरद : हमार घर पचुआ हा, हम सहर में ना रहीले ।

लछिमी : त केहू के साथे न ले आवै के चाहत रहल हा ?

मरद : ए दादा ! हम आठि आना में बियाह कइनी । हम अगुआ के कहि देहनीकि बियाह करै के होइ त करा, बाकी, रामखेलावन लाल आठ आना से बेसी ना खरच करिहें ।

लछिमी : त जाये दा, आठै आना नु लोकसान भइल ।

मरद : ए दादा ! हमार लाख रूपया के ईजत बिगरि गइल ।

लछिमी : लाख रुपया आँखो से देखले बाड़ा, जे लाख रुपया के ईजत बिगरी ।

(एही बीच में सीता जलदी-जलदी में आ के बोलली)

सीता : लछिमी दीदी ! एगो दुलहिन गरियार बैल लेखौं ठाढ़ भइल बा, मरदवा चादर धैके चलै के कहत-आ, बाकी ऊ हिलत नइखे ।

लछिमी : उठा रामखेलावन लाल ! तोहार त भाग खुलल, अब ऊ आपन भाग ठोके । उठा अबेर मति करा ।

(सीता आ लछिमी के पाछे-पाछे लोर पोंछत रामखेलावन लाल चलले, मंच के आड़े गइला पर एगो मरद आ एगो दुलहिन उहाँ आके ठाढ़ हो गइलैं । मरद चादर तानत-आ मेहरारू धप् से बइठि जाति-आ । एही बखत सीता आ लछिमी के पाछे रामखेलावन लाल चहुँपि जात बाड़न ।)

रामखेलावन लाल : (देखते) ए दादा ! ई हमरे मेहरारू हा ।

लछिमी : मुँह देखबे ना कइला, तोहार मेहरारू कैसे ?

रामखेलावन : ई हमरे चदरिया ह ?

लछिमी : धत्, झुठ्ठा कहीं के ! आठ आना में चादर मिली ?

रामखेलावन लाल : कनियवाँ के बाप देहले रहल हा ।

लछिमी : (दुसरा मरद से) ई तोहार मेहरारू हयी ?

मरद : हाँ, बबुई जी !

लछिमी : कैसे चीन्हत बाड़ा ?

मरद : काहे, ई ललकी चादर हमार कीनल-बेसहल हा ।

लछिमी : हई रामखेलावन लालो कहत बाड़ै कि ई चादर हमरा ससुर के दीहल ह ।

मरद : हमार नौंव फरगुद्दी उपधिया हा, माधोपुर घर हा । कायथ-कथुलली जे मुँह से फेनु ई बाति दोहरौले त हाड़-गोड़ एक्को ना छोड़ब, बदामास कहीं के ।

रा. लाल : (आसते से) छोड़ दी ए बबुई जी ! हमरा करम में ना रहल हा, बाम्हन रार करे के तयार बा ।

फरगुद्दी : रार के नौंव लेबा, देखाई तोहरा.के (धोती खूँटि के पैंतरा बान्हत डंडा भौंजि के) ठाढ़ न रहा मामा !

रा. लाल : जाये दी, हमरा बाप के अपना बाप के सार बनौले, किछु औरि इ मुँह से निकारी । हम जातानी, ए बबुई जी !

लछिमी : तनी भर ठहरा । (फरगुद्दी से) उपाधिया जी ! अपने बराभन नु हवी !

फरगुद्दी : (सानत हो के) हाँ बबुई जी ! हम उपधिया हवी, निम्मन बराभन ।

लछिमी : आ कनिया के कहीं से विदा करा के ले आवतानी ?

फरगुद्दी : सीतलपुर से, हमरा ससुरारै के घर में टेसनियो बाटे ।

लछिमी : घर में टेसन ?

फरगुद्दी : जीभि लटपटा गइल हा, बबुई जी ! वही गाँवें में टेसन बा ।

लछिमी : बाकी उपाधिया जी ! जे अपने के घरे कायथ के बेटी दुलहिन बनि के जाय, त लोग राखी ?

फरगुद्दी : राम-राम बबुई जी, हमरा उपधिया बराभन के घरे कायथ के बेटी दुलहिन बनि के जाई, त चउकठ के भीतर माई ढुके दी ?

लछिमी : रामखेलावन लाल ! बुरबक अदिमी के मेहरारू गुम हो गइल बा । का जानी भलेखा में तोहरै न दुलहिन बनि गइल होय, एसे हम हिनकरा से पूछि ली त, कौनो हरज बा ?

फरगुद्दी : (आपन बोली सुनतै दुलहिन के गोड़ गड़ा के खड़ा होखैके बात मन पड़तै फरगुद्दी के काठ मारि गइल, बड़ जोर लगा के कहले) हाँ, देख लीं बबुई जी !

लछिमी : (बइठि के घुँघट में अपनो मुँह डालिके किछु बतियौंलीं फेनु बोललीं) ई कोपा-समहुता टेसन से चढ़ली हीं, समहुता के राम पदारथ लाल के बेटी हवीं । अपना मरद के नौंव नइखी बतावति, अपने दूनों अदिमी बूझि ली, कि ई केकर दुलहिन हवी ।

फरगुद्दी : (डंडा हाथ से गिरि गइल, देह काँपे लागल, रोआइन मुँह क के बोललन)– कवन डंका देहले रे दैया । तीन बिगहा कसकारी बेचि के हजार में किनले रहनी हीं । हाइ बप्पा । कहाँ ढूँढीं ।

लछिमी : उपाधिया जी ! एजनी बप्पा-दैया कहले से काम ना चली । हमरे समने एगो अउरो अदिमी आइल, उहै दुसरकी दुलहिन के ले गइल । रामखेलावन लाल । समहुता के रामपदारथ लाल तोहरे नु ससुर हवें ?

रा. लाल : हाँ, ए दादा ! हौं बबुईजी । अपने देवता बानीं ।

लछिमी : उपाधिया जी । इहौं अगोरला से ना काम चली । बिसवास ना भइल होय, त अउरिउ देखीं । रामखेलावन लाल हेने हमरा दहिने ठाढ़ होइहा त (रामखेलावन आके सिटुकि के ठाढ़ हो गइले) उपधिया जी ! अपने ओही ठाढ़ रहीं । रमपदारथ के बेटी ! लाज-सरम करै के होय, त फरगुद्दी के साथे जा, आ माधोपुर में झाड़ू-लबदा खइहा, नाहीं त हमरा दहिने रामखेलावन लाल खड़ा बाड़ैं, एनकरा पंजरा में आ के खड़ा होजा । (दुलहिन लाल चादर में लपिटाइल रामखेलावन लाल के पंजरा ठाढ़ हो गइल ।)

फरगुद्दी : हे दैया ! एहि राति के एकमा में कहाँ खोजीं ?

लछिमी : रामखेलावनै के उप्पर डंडा ताने के रहला, खोजा भै उफ्फर परा । (कपार पर हाथ धइले फरगुद्दी चलि गइलन)

लछिमी : आ रामपदारथ के बेटी ! आपन नौंव बतावा त ? (चुप देखि के) बोलाई फरगुदिया के ? बोलाव रे सितिया बबुनी ! ओही के समुझा दीहल जाउ, कि केतनो ई अपना के कायथ के बेटी कहस, कहि दी, कि फरगुद्दी के पाकल बार देखि के पखंड कइले बिया ।

रा. लाल : (झट से धरती में बइठि के लछिमी के गोड़ पर मूँड़ ध के)– हे भगौती ! अपने कालीमाई होइके हमार सहाय भइली हा ।

सीता : जबान सम्हार के बोला रामखेलावन ! हमार दिदिया काली नइखी, इ गोर आग ऐसन चमकति-आ ।

रा. लाल : खसूर माफ करा हे धरमावतार ! अपने हाथे दीहल ईजत अपनेहि हाथे मति बिलुवावा । रामखेलावन के एही एकमैं में इनार-कूआँ देखे के परी ।

लछिमी : इनार-कुओं ना, धुरदह के पुल मिली उहै रहता में, परसा से एने, पुल तरे पानियो पूरा बा । बोलाव सितिया ! फरगुद्दी पधियवा के, ले जाउ गुंगिया के मधवैपुर ।

रा. लाल : (सीता के चलत देखि, गोड़ पर कपार पटकि-पटकि के हाफत-हाँफत) तनी भर ठाढ़ होख, हम बोलवा देतानी (रोवत) तनिके भर । (सीता ठाढ़ भइली)

लछिमी : हेई गुंगिया अबहिनों चुप बा ।

रा. लाल : हम बोला देतानी, ए दादा ! नउवाँ बोल दा हो, नाहीं त फरगुदिया कसाई ह कसाई । (चादर के भीतर सुगबुगाइल लेकिन चुप देखि के) नउवाँ बोलि दा, बोलि दा हो दादा_ हाइ ! हम काहे रमपदरथा के फेर में परनी, हमरौ ईजत लेहलस ।

लछिमी : सीता ! ई ना बोलिहैं, फरगुदिया टेसन के बहरा ना भइल होई, अपना कुल्ली से बोलु कि 'फरगुद्दी के दुलहिन मिलि गइल' कहिके गोहरावा । (दुलहिन धप से भूँइ में बइठि के चादर के भितरै से लछिमी के गोड़ छानि लेहली) ।

लछिमी : उहुँक, एसे काम ना चली ए रामपदारथ के बेटी ! आपन नौंव बतावा । (चादर में से किछओ साय-साय के अवाज) साँय साँय से तोहार नौंउ ना मालुम होई, जोर से बोला, जौना से हमरा कान ले ऊ चहुँपउ (फेनु तनी जोर से साँय-साँय) जा सीता ! ई भुँका के हमार कपार'खा जइहैं ।

रा. लाल : (हाथ जोरि के) हम बतावतानी, एकराउ सुभगिया ह ।

लछिमी : (ओठे पर हँसी रोक के) उहुँक, तोहरा कहला के कवन ठेकाना ?

रा. लाल : (निराश होके) रामपदारथ के बेटी ! लाज छाड़ि के नाँव बतावा, नाहीं त राखेलावन हइहे धुरदह के रहता धरत बाड़ै, फेनु जिनगी भर रणापा खेइहा । हा भगवान ! हम का जानत रहनीं, कि आठ आना के जिउ लेवै के बियाह होत-आ (अबकी आवाज साफ बाकी काँपत निकसल) 'सुभगिया ।'

लछिमी : अच्छा ई त भइल सुभागो ! ठाढ़ हो जा । हई एतना जे सासति-दुरगति भइल हा, ई एही घुघटवे खातिर नु, तनि अँखिया लौके भरके एके खोलै दा (कहि के लछिमी घुघुट खिसकाय के नाक आँख खोल लेहली ।)

(परदा गिरत-आ ।)

अंक-3

[लछिमी के मतारी रामकली रमनामा ओढ़ले मौनी में सालिगराम के राखि के तुलसी-चन्दन, धूप-देहलीं, फेनु घंटी बजावत आरती उतरली । लछिमी आ ओनकर सखी सीता आ के दूनो हाथ से आरती ले के कपारे चढ़ौली । रामकली माला जपै के तयारी करै लगली । एही बखत लछिमी बोललीं ।]

लछिमी : हमहूँ ए गो अहतुति सिखनी हाँ माई ! सूरसागर से । ते माला जपु, हम अहतुति गावत बानी । (लछिमी गावति आ ।)

साचे तू बोला हमरा देवतवा !
जुग-जुग से टेरनी तनिको न सुनला,
रहि गइला खाली अपने लेवतवा ।
अरबन तिरिया सीसओ चढ़ौलीं,
तबहूँ न कइला तनिको मदतवा ॥
चलतै चलत कहूँ ठावों न पावल,
झूठै त नइखे तोहरा रहतवा ।
एक-एक के बतिया उलटे सुनावत,
अन्हरन के पाछे अन्हरा चलत बा ॥
आपन जे बुधि-बल तनिको सम्हरले,
टारीं ते करमों कै रेखवा टरत बा ।
बीतल कुदिनवा आइल सुदिनवा,
हौवा न अब चौबैया बहत बा ॥
जहँवा पलकवा न अँखिया प लागल,
देखा पुरान ऊ घरवा ढहत बा ।
सूरसाम कहें पाथर देवतवा,
बकसैं बिलार रही बाँड़ैं जगतवा ॥

रामकली : (माला फरका राखि के, आँखि निकारि कै)– ई सूरसागर के अहतुति हा लछिमी ?

लछिमी : हाँ, माई सूरसागरे से नु इयाद कइनी हाँ ।

रामकली : आ सूरसागर में भगवान के गारी दीहल जाई ?

लछिमी : भगवान के गारी-मार का का ना दीहल जाला, माई !

रामकली : महतारी चरावा मति लछिमी !

लछिमी : चरावतानी माई ! तोरा से कै बेर कहनी कि ककहरा पढ़िले, दु दिन में आ जाई, फेनु अपनेहि सूरसागर, बिने-पतिरिका पढ़ै लगबिस ।

रामकली : हमार चलल होइत, त तोहरा के एक्को अछर पढ़ै के ना मिलल होइत । का कहीं ऊधो के बाबू के । साँचे बेटिन के अच्छर ना सिखावै के ।

लछिमी : तें त ना नु मनबे माई । सालिगराम के पुजला में मेहरारू के छप्पन कलप भर कुम्भीपाक-पीबवाले नरक-में रहे के परैला ।

रामकली : झूट, पोथी में नइखै । तहरा बाति बनावै बहुत आ गइल बा ।

लछिमी : ले आ के पोथी देखाईं ?

रामकली : जानत नु बाड़ू कि हमरा अच्छर ना आवैला, एही से ।

लछिमी : त ते समुझत बाड़िस कि हम झूठे पढ़ि देइब ।

रामकली : ज पोथी में लिखल होइत, गुरु बाबा काहे हमरा के सालिकराम के कासीजिउ से ले आ के देतें ?

लछिमी : साँचै कहीं माई ! ते पाँच गो रुपया चढ़ा के गोड़ जे लागैलिस ?

रामकली : गुरु-गौसैयाँ के अपना मुँह से ऐसन वचन निकालेलिस, हे भगवान ! ई बेटी हा कि सन्ताप ?

लछिमी : त माई ! ते चाहत बाड़िस, कि हम पोथी में छछात देखत रहीं, कि ई काम कइला से तोरा के छप्पन कलप नरक में रहै के परी, आ तौनों पर चुप रहीं ।

(सीता आ के)

सीता : ना लछिमी दीदी ! चाची जौन बात नापसंद करै, ओके नानु कहै के ।

रामकली : इहौ बा नु एगो बेटी ! देखा नु कैसन मुँह से फूल झरत -आ ।

लछिमी : (नराज ऐसन मुँह बना के) त सीता ! हम झूठ कहतानी ?

सीता : लछिमी दीदी ! हमरा पर नराज मति होखा, हम तोहरा के झुट्ठी नइखी बनावत । बाकी जौन बात चाची के मन के नइखे, तौना के ना नु कहेके ।

रामकली : तमारी-बाप के अदब-लिहाज नु करैके परैला बेटी सीता ! सिखावा एहि लछिमिया के ।

सीता : हम सिखावतानी चाची !

लछिमी : हम तोहार सिखावल कुलि मानव सीता ! बाकी इमान-धरम से कहिहा, पुरान में होऊ सालिगराम के पूजा से मेहरारू के छप्पन कलप नरक में जाये के बात तहरा के ना हम कालै पढौनीं ?

सीता : हम ई ना नु कहतानी, बाकी चाची के समने ना नु कहे के ?

रामकली : साचै बिटिया ! पोथी में ई बात लिखल बा ?

(ऊधोपरसाद आ गइलै)

सीता : चाची ! ऊधो भैया आ गइलैं एनहीं से पूछ ।

लछिमी : आ हम पोथिये उठा लिआवातानी । (धउरि के एगो बड़का पोथा ले आइल, आ खोलि के ऊ पतरा ऊधो के समने धइ देहलस ।)

रामकली : पढ़ त बबुआ ! साँचे एमे मेहरारू के सालिकराम के पूजा बरजित हवे ?

ऊधोपरसाद : (संसकीरत में पाती पढ़ि के) साँचै माई । ई त छप्पन कलप नरक के बासा लिखल बा ।

रामकली : (मूह पीअर कऽके) छपपन कलप नरक ! आ हम सालि भर से पूजा करतानी ? ई धरमो के काम कइला में पाप होला ?

लछिमी : धरम उहै कहाला, जौन पोथी में लिखल रहेला ।

रामकली : फेनु गुरुबाबा काहे सालिकराम के हमरा के देहलें ?

लछिमी : गुरुबाबा कुलि पुरान ना नु पढ़ले होइहैं । हेइसन हेइसन ना जानी कैसो पोथी बा ।

रामकली : तेहीं बताव बबुआ ! अब का करै क चाहीं ?

ऊधो : जानि के पाप कइला के औरू बेसी पाप होला, माई !

रामकली : त हई ठाकुर जी के काकु करैके ?

ऊधो : ई त सोचै के परी माई !

लछिमी : अ भइया ! लछिमी पंडित के ठकुरबारी में दे अइला से कैसन होई ?

ऊधो : हाँ, निमन त होई, बाकी भोग-राग खातिर किछु देवै के परी ।

रामकली : का देवै के परी बबुआ !

ऊधो : पूछै के परी माई ! बाकी साँझ-सबेरे एक-एक पाव मिठाई, एगो सीधा, आ धूप-बत्ती खातिर चारि गो पैसा से का कम लागी ?

रामकली : केतना परी बबुआ !

ऊधो : आस् सेर मिठाई चारि आना, धूप-बत्ती एक आना, एगो सीधा तीनि आना, कुलि आठ आना भइल माई !

रामकली : आठि आना रोज !

लछिमी : ला खुब पूजऽ सालिकराम के ? ओ अबहिन ई सालि भर पुजला के पराछित जे करे कै परी ?

रामकली : पराछितौ !

ऊधो : ई त ठाकुर जी के आगे के इतिजाम नु करे के खरच हवे । नाहीं त माओ ! तू त पूजा छोड़ि देहलू, फेनु जे ठाकुर जी उपास परिहें, त ओकर पाप घर भर पर नु पड़ी ।

रामकली : (कपारे पर हाथ ध के) तोहार बाबू त एको पैसा दीहैं ना, ऊ त ठाकुर जी के घर में रखही के खेलाप रहलें । अच्छा ले जा, दी आवा लछिमी पंडित के ठाकुरबारी में ।

ऊधो : आ महीना भर के भोगराग के पनरह रुपया नु चाहीं माई ?

रामकली : पनरह रुपया महिन्नै महिन्नै ! ई त हमार कुलि कोसिला के रुपया

एही में चलि जाई ।

ऊधो : साल में एक बीस कम दुसै, पाँच साल में नै सै माई !

रामकली : पाँच सै त रुपैयवा बा बबुआ !

ऊधो : पौने तीन बरिस चली, फेनु ठाकुर जी के उपास करै के परी । जौना महिन्ना रुपया बंद भइल, ओही महिन्ना माओ । ठाकुर जी लउटि अइहैं ?

रामकली : हे भगवान् !

(रामकली रुपया ले आवे गइली)

ऊधो : लछिमी ! देखा अब पनरह रुपया महिन्ना भर मिठाई खाये के इंतिजाम भइल । ठाकुर जी रहिहैं हमरा बाकस में, सिगरेट के डिब्बा बा, ओही में ।

लछिमी : आ कहीं माई लछिमी पंडित के ठाकुरबारी में पुछवावै तब ?

ऊधो : बात त ठीक कहत बाड़ू । बाकी अबहिन त माओ के पराछित के फेर में नु डारे के बा ।

लछिमी : पराछित ।

ऊधो : हाँ, जे पोथी के हुकुम के खेलाप एक बरिस पुजली हौ ।

लछिमी : ठीक ।

ऊधो : ई बड़ मजगूत पकड़न पकड़ले बानी । गुरुओ बाबा के समने जे ऊ पोथी धराई, त सिटपिटाई जइहें ।

लछिमी : आ, जे ठाकुरबाबा के माँगि ले तब ?

सीता : हम एगो सलाह दीं भईया ?

ऊधो : कह सितिया ?

सीता : चिन्ता करै के काम नइखै, पराछित के डरवावन में चार महीना खेपि देवै के, ज एही बीच गुरुबाबा आ गइलें, त ठाकुरै जी के नु माँगिहैं, बकसा खोलि के दे दियाई ।

ऊधो : ई ठीक सलाह बा । पराछित के भै जबले रही, तबले माओ ठाकुर जी आ ठाकुरबारी के नाँव ना लीहैं ।

(रामकली लेआके पनरह गो रुपया ऊधो के हाथ में देहली, औ ऊधो ठाकुर जी के मौनी उठौले । लछिमी और सीता के ओठ ले 'रामनाम सत ह' आ गइल रहैं ।)

(परदा गिरत-आ)

अंक-4

[लछिमी, सन के एइसन केस औ सूत से मढ़ल चसमा लगौले सूखा फूआ औ रामकली बइठल बाड़ी ।]

सूखा : सुनलू इ, रामकली ! आज मनुसपलटी के घर में सभा करे गइल रहली मेहरारू सब ?

रामकली : सुनली हाँ, फूआ ! आजकल के मेहरारुन के किछु मति पूछी ! देहि जरि जाति-आ, देखि-देखि के कुफति होति-आ । रिकसवा जब ले छपरा में ना आइल रहै, तब ले निमनो रहल । बग्गी के केरयवा बेसी नु लगत रहल हा । आ तब त घर के घर खाली हो जात-आ, आज का त साभा हवे, आज का त सिनामा हवे ।

सूखा : महल्ला में बस रामकली ! हमरै तोहरा ले बा, नाहीं त कलि रम-करम छाड़ि देहली ।

रामकली : हमरौ घर में फुआ ! एक जनी हेई लछिमी औतार लेहले बाड़ी । एनकर चौबीसो घंटा सभे लागल रहैले ।

लछिमी : माई ते सभा से काहे नराज रहैलिस् । बुझबो ना कइलिस कि सभा कौना खातिर भइल रहल हा, आ एक ओरा से दूसै लगलिस् ।

रामकली : बुझले बानी । हमरा खन्दान में केहू ना बुझले रहल हा, ई त एगो तुहीं न बूझैवाली जनम लेहले बाड़ू ?

लछिमी : अच्छा ई त बताव माई ! आमी अत्थान में बग्गी में गइला पर कौनो हरज ना, काली अत्थान रिकसा धौरौला में कौनो हरज ना, मेला-ठेला में देह छिलौला में कौनो हरज ना, औ ई टावनहाल में भले घर के सौ-पचास मेहरारू बइठि के किछु बतियावैली, ए एमे काहे ब्रह्मडल टूटि के गिरे लगेला ।

रामकली : सुना फुआ ! आमी अत्थान, काली-अत्थान देवी-देवता के पूजा-दरसन, आ हई मुँह खोलि के तावनहाल में बइठल बरोबर बा ?

सूखा : चारो ओर एक्कै बयार बहति-आ रामकली ! तोहरे हमरे पीढ़ी ले पुरखिन के मरजाद बा, अब ना रही बबुई ! हम त साँझे-सबेरे सुरुज नरायन के मनाई ले, कि सूखा के अब ले चलसुँ ।

(सीता आ जसोदरा अइली)

दूनो : गोड़ लागतानी सुखा फूआ !

सूखा : (आँखी पर हाथ से छाँह करके) के हा ?

लछिमी : सीता आ जसोदरा अइली हाँ फूआ !

रामकली : एक्कै आँवा कै पकवल, फूआ !

सूखा : ना सितिया बबुनी निम्मन बेटी ह रामकली !

रामकली : हमहूँ इहै समुझत रहनी फूआ ! बाकी एक बेर चारि महिन्ना ले ई हमरा

के ठगि-ठगि के मिठाई खाति रहली ।

सीता : हमनी के नहके नु अजस देत बाड़ चाची! ऊधो भइया नु कुलि कइलें ।

रामकली : आ पोथिया उठा के उधवे ले अइलें ?

लछिमी : मुदा पोथिया के त माई ! गोरुओ महराज देखि के साचै नु कहले ?

रामकली : आ कहि दा कि साठि रुपया के मिठइया खाये के गुरुवे महराज कहले ।

सूखा : साठि रुपया के मिठाई !

लछिमी : चारि महिन्ना में अठठ आना रोज फूआ ! आठि गो लइका जमा होई जौंसू एकेको गो मिठाई त ना परे । आ फेनु ई भइया के करनी हवै, हमनी के कौनो खसूर नइखै फूआ !

रामकली : आ चारि महिन्ना ले ठाकुर जी के सिगरेट का गोलका डिब्बा में बन्न कइके रखले रहे फूआ । ई हतियारी नु बा ?

सूखा : बिना भोग-राग लगौले ?

लछिमी : गुरुमहराज कहले बाड़े फूआ ! कि भोगराग लगौला ना-लगौला के कौनो पाप-पुन्न नइखे ।

सूखा : चारि महिन्ना ले ठाकुर जी उपास परिहें, आ पाप-पुन्न ना लागी । ए भाई ! ई छौंड़िन के का हो गइल बा ?

लछिमी : जे चारि महिन्ना के उपास के पाप-पुन्न लगित, त माई के साल भर सालिकराम पुजला के पाप के फल छप्पन कलप नरक के बास होति फूआ ! गुरु महाराज कहि देहले, कि ठाकुर जी के परानपतिट्ठा ना कइले रहलीं, एही से पाप-पुन्नकिछुओ ना भइल ।

रामकली : ई बात ठीक ह फूआ ! मुदा ठाकुर जी के चाहे पराने-पतिट्ठा ना भइल हो, सिगरेट के बाकस में ना नु राखैके ?

लछिमी : ऊ हमनी के खसूर नइखे माओ ! अपना बेटा से पूछा ।

रामकली : बेटे ना नु अकेले मिठइया खइले ?

सूखा : आ दुत् तोरा की, ए देवतो से खियाल कइल जाला ?

जसोदरा : लछिमी दीदी ! आज हम सभा में न जा सकनी, सुनावा, सकरपुर के बहुरिया बेचारी के बारे में का परसताव भइल ?

सूखा : सकरपुर के बहुरिया कवनि, बहुरिया धनराजी कुँअरि ?

लछिमी : हाँ, फूआ ! बहुरिया धनराजी कुँअरि सौ गाँव के मलिकाइन, रायबहादुर के मरते दयाद दावा क देहले, कि बहुरिया जैजात बरबाद क दीहैं, इनके खोरिस मिले के चाही, आ जैजात के मालिक हमनी हवी ।

सूखा : बहुरिया धनराजी कुँअरि बड़े लायक मेहरारू हवी बेटी !

सीता : बहुरिया के देखले बाड़ू फूआ !

सूखा : आमी अहथान में भेट भइल रहे बेटी । ध के अपना तम्मू में ले गइली, हमार केराया के घोड़ागाड़ी लौटवाय देहली, आ रातिभर ना आवे देहली । का केहू बेटी-पतोह बैसन सेवा करी ?

लछिमी : बहुरिया के बेटा-बेटा नइखे फूआ !

सूखा : (आँखि में लोरि भरि के) से हम जानीले ।

लछिमी : ओनकर हिच्छा बा, कि जेतना देस के लइकी बाड़ी, ओही सबके आपन लइकी मालि के ई कुलि धन खरच कइल जाव ।

सूखा : बहुरिया बड़ लायक बाड़ी बेटी ! हमार अस्सी बरिस के उमिर भइल, नाती कै नाती देख चुकनी, मुदा एइसन लायक मेहरारू ना देखनीं– हाँड़ी परिखी बरबार, अदिमी परिखी एक बार ।

लछिमी : त आज टावनहाल में सभ बहुरिये खातिर भइल रहल हा ।

सूखा : का भइल ह बेटी ?

लछिमी : छपरा भरिके पाँच सै मेहरारू जमा भइल रहली हाँ । जज, वकील, मुख्तार, बलिहटर, हाकिम-हुकुम, अमला-फइला सबके घरके मेहरारू आइल रहली हाँ । जज साहेब के मेहरारू सभापति भइल रहली । सभा में सरकार के कहल गइल कि राजकाज बहुरिया के हाथ से ना छीनल जाये के चाहीं।

सूखा : राज-काज छिनाता-आ बेटी ?

सीता : सुनलू ह ना फूआ ! बहुरिया के दयाद लोग मोकदमा कइले बा, कि मेहरारू के जर-जमीन पर हक ना होला, ऊ खाली खोरिस पा सकेले ।

लछिमी : बोल फूआ ! जेकर पति सौ गाँव के मालिक रहै, आज बेटा रहित, त ऊ मालिक होइत, अब घर में बहुरिये रहि गइनी, त ओनकर हक ना होए के चाहीं, काहे से कि ऊ मेहरारू बाड़ी ? ते देखले ही बाड़िस, बहुरिया कौनो मरद से कम लायक नइखी ।

सूखा : से लछिमी बबुनी ! तोहार बात सोरहो आना ठीक बा । बहुरिया ऐसन इतिजाम करैवाली मेहरारू न मिली । हम ओनकरा खवास-खवासिन नौकर-चाकर के देखले बानीं, ओनकर इतिजाम एक-एक बात में देखात रहे ।

लछिमी : त बहुरिया के मालिक ना होवे दीहल जात-आ , ए में ओनकर इहै खसूर नु बा, कि ऊ मेहरारू हवी ? मेहरारू होखल का कौनो पाप हा ?

सूखा : मेहरारू के जाति त छोटे कहल जाला बबुनी ! मुदा बहुरिया केहू मरद

से कम बाड़ी, ई हम ना मानब ।

लछिमी : सूखा फूआ ! ज तू खाली बहुरिया के पच्छ लेके कहबू, त ना सरकार मानी, ना हाकिम-हुकुम कौनो खियाल करिहै, ज समुच्चा मेहरारून के हक खातिर कहबू, त इनरासन डोल जाई ।

सूखा : चाहे जैसे होखो, लछिमी बेटी ! बहुरिया के हई हक ना छिनाये के चाही ।

लछिमी : फुआ ! सरकार कहति-आ कि बहुरिया लायक हवी, ई मानै में उजुर नइखै, मुदा मेहरारू जाति के जमीन के मालिक होखल ई अइन-कनून से बहरे के बाति ह । बहुरिया मेहरारू ना होइती, त उनकरा के पूरा हक मिलित ।

सीता : आ फूआ ! ई एगो बहुरियै के बात नइखे । केतना पीढ़ी बीति गइल, ना जानी केतना बहुरिया हकसे बेहक भइली, आ आगेहू कइल जइहैं, जौ हमनी अपना हक कै दावा ना करब ।

लछिमी : औ देखैलिस् नु फूआ ! चाहे घर-फूँका बेटा होय, ओकरा के बाप के जैजात मिलै में कौनो उजुर नइखै, मुदा मेहरारू केतनो लायक होय, ओकरा के हक ना मिली, एके नियाब कहल जाय सकेला ?

सूखा : ई हमरो तनी तनी समुझि में आवत-आ ।

लछिमी : हमनी मेहरारू सब ई नइखी चाहत, कि मरद के कौनो हक ना मिले । मुदा हमनी ई बात ना मानि सकीले, कि बेटा सोना की डीबिया में से आइल बा, आ बेटी इमिली के खोड़रा से ।

सूखा : दूनो एकै ओद्र से आवेला बेटी !

सीता : आ मेहरारू के नीच-नीच कहल जाला, जे मेहरारू नीच होइत त ओही से जनमल मरद ऊँच कइसे हो जाला ?

सूखा : इहो बात ठीकै कहत बाड़ू सीता बेटी ! बलुक मतारी के उपकार मतारी के सासत-कहट देखि के त ओकरै के बड़ माने के चाही ।

रामकली : तुहूँ फूआ ! छौड़िन के फेर में पड़ल जात बाड़ू ?

सूखा : निम्मन बात कहत बाड़ी सन, त काहे न माने के चाही बेटी ? नौ महिन्ना पेट में राखि के पोसल, फेल कै बरिस ले अपने गीला में रहि के बच्चा के सूखा में सुतावल, अपना देहि के जिउ खीचि के बेटा के दूध पिआवल, ई कुल ऐसन काम हा, जे मरद कबहुँ ना कइ सकैला बबुई ?

लछिमी : फूआ ! इहै बाति हमनिओ कहीले । काहे मरद आ मेहरारू के दु आँखि से देखल जाला ? जैसन बेटा के माने के चाहीं !

सूखा : इहौ ठीके कहति-आ बिटिया ! बेटा के जनम में मतारी के थन में दुसरा तरह के दूध अवैला, बेटी के जनम में दुसरा तरह के, ई त ना देखल जाला ? फेनु काहे दूनों के दु आँखि से देखल जाई ? इहै दु आँखि से देखला के फल हा, कि सकरपुर के बहुरिया के लायक रहतौ हुनकर हक छीन लीहल जात-आ । ह, नु बेटी लछिमी ?

लछिमी : इहे बात हमनी के सभा में भइल हा ! हमनी कहलीं हाँ, कि मुसुरमान में बेटी के जैजात में हक होला बेटा के बराबर ना, मुदा ओकर हक दियाला । किरिस्तानों में बेटी के मतारी-बाप के जैजात में हक होला, फेनु हिन्नू की बेटी-मेहरारू के काहे हक ना मिली ?

सूखा : त दुसरा दुसरा मजहम में बेटी के हक मानल जाला बेटी ?

लछिमी : हाँ फूआ ! आ हिनुतान से बहरा कुलि दुनिया-संसार में बेटी के हक मानल जाला ।

सूखा : फेलु हिनुतान में हिन्नूलोग काहे ना मनलस् बेटी !

लछिमी : मरद लोग के सुवारथ । जे हमनिओ अपने जैजात के मालिक होइतीं, ता 'ढोल गँवार सूद्र पसु नारी ! ए सब ताड़न के अधिकारी ।' ना नु, होइतीं ?

सूखा : त बेटी ! हमनी के कहला से जैजात मिले लागी ?

लछिमी : जरूर फुआ ! हमनी जे पहिले से जोर-जोर से कहले होइतीं, त हमनी के हक मानि लीहल गइल होइत । मुदा हमनी चुप लगा गइलीं, मरद लोग सरकार के समुझा देहलैं, कि मेहरारू के धन के कौनो खाहिस नइखे ।

सूखा : ई बात झूठ हवे बेटी ! धन के खाहिस ना होइत, त मेहरारू आपन कोसिला काहे रखतीं ?

लछिमी : आ जैजात होइत ता पेट काटि-काटि, कौड़ी-कौड़ी बचाइ के कोसिला राखै के कवन काम रहति ? एही से हमनी सभा में लिखि के सरकार के पठौनी हाँ, कि जैजात में मेहरारू के उहै हक माने के चाहीं जौन मरद के हवे ।

सीता : आ इहौ फूआ ! कि जैसे एक मरद अछैत मेहरारू दुसरा मरद के ना बियाहि सकैले, वैसे मरदो एक मेहरारू के रहतै दूसरा मेहरारू के बियाह ना कर सकै ।

सूखा : इहौ ठीक ।

लछिमी : आ इहौ कि राजकाज चलावें में बहुरियाजी के उहे हक होखे के चाहीं जौन रायबहादुर के रहे ।

सूखा : इहौ ठीक ।

लछिमी : जैसे बहुरिया जी के राज-काज चलावे में मरद के बरोबरे हक मिले, वैसेही सरकारी राज-काज चलावे में कुलि मेहरारुन के मरद के बरोबर हक होवै के चाही ।

सूखा : बेटी ! जे मेहरारुन के सभा में ऐसन निम्मन बाति होले, त हमरौ के ले चलिहे ।

(सब मिली के गीत गावत बाड़ी)

उठु उठु रे ते भुखबन्हुई, उठु रे धरती के अभगिया ।
बा न्याव बजर घरहावत, जनमत बढ़िया संसरवा ॥
पुरुषिज फिनु नाही बान्ही, उठु रे अब नहि ते बन्हुई ।
नइ नेव उठत बा जगवा, ना रहली सब किछु होइबी ॥
आ जुटहु नु सखिया समुहें, ई आखिर बेरि लड़इया ।

(परदा गिरि गइल)

रामेश्वर सिंह काश्यप

रामेश्वर सिंह काश्यप के जनम 16 अगस्त सन् 1927 के सासाराम के नजदीक 'सेमरा' (रोहतास) गाँव में भइल रहे । काश्यप जी मुंगेर जिला स्कूल से 1944 ई. में प्रवेशिका पास कइलीं आ पटना विश्वविद्यालय से 1950 ई. में एम. ए. (हिन्दी) । पढ़े में तेज रहला गुने उनका सब में प्रथम श्रेणी मिलल रहे ।

एम. ए. पास कके ओही साल उहाँ के बी. एन. कालेज, पटना में हिन्दी के प्राध्यापक हो गइलीं । बाद में एस. पी. जैन कॉलेज, सासाराम में प्राचार्य होके चल गइलीं आ अंतिम काल ले रहलीं । उहाँ के निधन अक्टूबर 1992ई. में हो गइल ।

काश्यप जी के कलम हिन्दी आ भोजपुरी के कहानी, कविता, निबंध आ नाटक आदि विधा में चलत रहे बाकी उहाँ के मसहूर भइलीं अपना हास्य-व्यंग्य-लेखन लेके ।

काश्यप जी के 'अपराजेय निराला', 'समाधान', 'काशी से भेंट', 'उलट फेर', 'बेकारी के इलाज' आदि नाट्यकृति छप चुकल बा । एगो बाल उपन्यास 'स्वर्णरेखा' भी छपल रहे ।

बाकी ई सब तब दब गइल जब रेडियो से उनकर 'लोहासिंह' नाट्य-श्रृंखला 1962 से प्रसारित होय लागल । एकर निर्देशक आ नायको उहाँ के खुदे रहीं । कहीला आकाशवाणी के ई पहिल धारावाहिक रहे जे एतना लोकप्रिय भइल । 'लोहासिंह ने मुरब्बे खाये', 'लोहासिंह ने खेती की', 'लोहासिंह ने डाक्टरी की' आदि नाम से जब जइसन देश आ समाज में परिस्थिति आइल, काश्यप जी के लोहासिंह के कड़ी ओह संदर्भ में लिखात आ प्रसारित होत गइल । 'लोहा सिंह ने मुरब्बे खाये और अन्य करतूतें' नाम से एक-दू खंड में उनकर लोहासिंह पुस्तको प्रकाशित भइल रहे । फिल्मो बनल बाकी चलल ना ।

बिहार के अनेक संस्थन से काश्यप जी के सम्मान मिलल । बिहार सरकार उनका के भोजपुरी अकादमी के अध्यक्ष पदो पर बइठवलक । भारत सरकार पद्मश्री से अलंकृत कइलक बाकी सबसे बड़का सम्मान जनता के ऊ प्यार रहल जवना से ऊ खुदे 'लोहा सिंह' कहाये लगलन । ई कवनो सृजन के लोकप्रियता के चरम ह जब कृति के साथ कृतिकार के नाम एकमेव हो जाय ।

भउजी से भेंट

[कवनो छोट शहर में एगो साधारन आमदनी वाला क्लर्क के कमरा, एह कमरा के अगल में एगो रसोई घर बा । सूते-बइठे खातिर बस इहे एगो कमरा बा । पत्नी एगो कुर्सी पर स्वेटर बीनत-बीनत सुत गइल बाड़ी । छींट के रंगीन साड़ी आ ब्लाउज पेन्हले बाड़ी । उनका के देखला से बुझाता कि बिआह कइला चार-पाँच बरिस से अधिका ना भइल होई । साँझ के समय बा, पति बाहर से तेजी से आवत बाड़न । कुर्ता, धोती आ बंडी पेन्हले बाड़न ।]

पति : एजी सुतल बाड़ू । हमार एगो साथी आइल बाड़न । सूत गइलू का ? भला इहो कवनो सूते के बेरा ह । साँझ हो रहल बा उठऽ, उठऽ ।

पत्नी : (घबड़ाइले जाग के) ऐ का कहत बानीं ? फिर कवनो राउर साथी आइल का ? ऊँह ! अबे आँख लागल रहे, लेके जगा देलन ।

पति : कहतानीं इहो कवनो सूते के बेरा ह ?

पत्नी : कहीं ना ?

पति : पहिले आँख त खोलऽ । अइसन कहला से फयदे का कि आधा बात सुनत-सुनत फिर सूति जा । इहे तोहार आदते ह !

पत्नी : रउरा जइसन त अदिमिए ना देखलीं ? केहू के सुतल-बइठल देख ना सकीं । हरदम बीखे बोलत रहींला । हम अइसन सूते वाली हो गइलीं कि राउर पूरा बातें ना सुनब । जब देखऽ तब, हरदम हमरा में कवनो-ना-कवनो गलती खोज के ठेन बेसाहत रहेलन । (खड़ा हो जात बाड़ी-आ स्वेटर बीने वाला कुरुस आ ऊन कोना में बीग देत बाड़ी ।) लिहीं, हो गइलीं खड़ा । अब त भइल न करेजा ठंढा ? कहीं, का कहत बानीं ।

पति : (तनी मोलायम पड़के) एतना अनराज काहे होत बाड़ू । हमार एगो साथी आइल बाड़न । तनीं तू भीतर चल जा त उनका के एहिजे बोला लिहीं ।

पत्नी : बाह रे ! 'एहिजे बोला लिहीं' । ई घर ह कि कवनो धरमसाला हऽ ? बहरकन के आउर कहीं जगह ना मिले त एहिजे टपक पड़ेलन स । ऊफर परो इनका साथिन पर ।

(बाहर साथी दरवाजा के सिकरी खटखटावत बाड़े आ पुकारत बाड़े)

साथी : (बाहर से) का भाई ? चल जाईं का ? का विचार बा ? अतना देरी काहे हो रहल बा ?

पति : सुनत नुं बाड़ू ? ऊ हल्ला कइ रहल बा । बचपन के साथी हऽ । का कहीं ? तनी भीतर चल जा ।

पत्नी : (अवाज ऊँचा कइके) हल्ला करत बा त कइल करो । हम त ना हटब । जब देखऽ तब, जब देखऽ तब, अदोबद के, हमरा पर हुकुम झारत रहेलन । इहाँ बइठ, उहाँ उठ, जइसे इनकर हम कवनो दाई-लौंड़ी होखीं ।

पति : भला हम तोहरा के दाई कब कहलीं ? झूठो के न अछरंग लगावत बाड़ू । तनी भीतर चल जा । ऊ बेचारा कबे से गली में खड़ा बा ।

पत्नी : (आऊर पहिले से ऊँचा अवाज में) ऊँह ! बड़ा हमरा डर लागल बा इनका इआर-दोस्त के । बाहर खड़ा बाड़न त रहसु खड़ा । हरदम त इनका इआरन के तांता लागले रहेला । एगो जाला त दोसर चल आवेला ।

पति : (खुशामद से) अरे भाई धीरे बोलऽ ! अइसे नरेटी फाड़ के अललात काहे बाड़ू ? हमार साथी सुनी त का कहीं ?

पत्नी : (आउऊर ऊँचा आवाज में) लऽ, अब हम जोर से बोलेवाली हो गइलीं । इनकर संघतिआ लोग बोली में मिसिरी घोरेला आ हम अललाईला । अभी थोरिके देर पहिले आइल नु रहे राउर एगो साथी । बहरका, ऊफर परवना, हमरा के सुना-सुना के, कइसन खराब-खराब कविताई पढ़त रहे । ओकर बोली पूरा महल्ला में गूँजत रहे । तनी इनकर बात त सुनीं ? कहत बाड़न कि हम जोर से बोलत बानीं । हमार बोली सुनके रउआ कान के पर्दा फाटत होखे त लगालीं अपना दूनों कान में ठेपी । हम रउआ के खूब चिन्हींला जी ।

पति : (अनसा के) ना चुप रहबू ? अइसे बेबात के चिचिआत काहे रहेलू ? एह मेहरारू के मारे त नाक में दम हो गइल बा भाई !

पत्नी : (रोवे-रोवे हो के) लऽ, अब त ई हमरा के डाँटहूँ लगलन । इनकर साथी लोग लाट साहेब ह आ हम जइसे कुछ हइए ना हई । रउआ से बिआह का भइल, हमार जिनगी खराब हो गइल । एकरा से त इहे ठीक रहे कि मतारी-बाप घाठी देके हमरा के कवनो कुइआँ में डाल देतन । हम जान गइलीं, रउआ अइसन आदमी संगे हमार निबाह ना होई । आवे दिहीं भइआ के ।

पति : बड़ा डर लागल बा इन्हिका भइया के । कहऽतानीं कि धीरे बोल, धीरे बोल । बाते नइखी सुनत । हम त आजीज आ गइलीं ।

पत्नी : आवे दीं भइआ के । राउर सभ हाल उनका से फरिआ के कहब । एके

गो त ले-दे के एह घर में सूते-बइठे के कोठरिए बा, ओकरो में हरदम इनकर इयार-दोस्त आके अड्डा मरले रहेलन आ सभ मिल के हमार दिल्लगी उड़ावत रहेलन लोग । हम सुनीं ना का ?

पति : अरे भाई, हमार साथी लोग त तोहार बड़ा तारीफ करेला । तूँ का जाने कइसे उल्टा के पुल्टा सुन लेलू ।

पत्नी : लऽ । अब हम बहिरो हो गइलीं ।

पति : धत्तेरी ! हम तोहरा के बहिर कब कहत बानीं ? हम त कहत रहीं कि हमार साथी लोग तोहरा बारे में जे कहेला, ओकरा के तूँ उल्टे समझ ले लू ।

पत्नी : एकर मतलब त ई भइल कि हम बेकूफ हईं । कवनों बाते ना समझीं । आवे दीं भइआ के । हम रउआ संगे एको छन एह घर में ना रहब । आजे उनका संगे नइहर चल जाइब । हम का त बेसमुझ बानीं ? इनकर इआर-दोस्त लोग बड़ा काबिल बा । बड़ा आइल बाड़न हमरा के बेसमुझ कहेवाला ।

पति : काहे के बेमतलब बक-बक करत रहेलू ।

पत्नी : हम बक-बक करींला आ रउआ बोली से फूल झरेला । जीव जुड़ा गइल राउर बोली सुनके । अपने कटाह कुक्कुर लेखा किट-किटात रहेलन आ हमरा के दोस देलन ।

पति : अच्छा भाई ! हम दुनिआँ के सभ खराबी के जड़ हईं आ तू सरबगुनआगर बाड़ू । अब खुस भइलू ? अब चल जा ओह कोठरी में मेहरबानी कइके । हमार बेचारा दोस्त बाहर आसरा जोहत-जोहत अबले जवान से बूढ़ हो गइल होई । अबो त जा ओह कोठरिआ में ।

पत्नी : अरे बाह रे बाह ! कोठारी में भेजेवाला ! एकरा के छोड़के कवनो कोठारी बड़लो बा एह घर में ? साफ-साफ कहीं ना कि चउका में चल जा ।

पति : भाग मनावऽ कि अइसनो मकान मिल गइल । आजु-काल्हु मकान के कइसन तंगी बा, जानत नइखू ? अच्छा, अब देर मत करऽ । जा रसोइए घर में चल जा ।

पत्नी : ओहिजो हमरा के चैन से बइठे ना तु देब रउआ ? तुरंते फुरमावे लागब कि हमरा दोस्त खातिर चाह बना दऽ । हमरा से बिआह का कइलन, मंगनी में रसोइआदारिन बहाल कर लेलन । देखीं, हम साफ कह देत बानीं । कान खोल के सुन लीं । जहाँ चाह बनावे के कहलीं, त हम लागब चिचिआ-चिचिआ के रोवे ।

पति : धन्य बाड़ तुहूँ । जब मन करेला लागेलू चिचिआ के रोवे आ उहो एतना जोर से कि छत के पलस्तर झर जाला । तोहार रोआई सुनके पास-पड़ोस के लोग घबड़ा जाला । पूरा महल्ला दुआर पर जुट जाला । हम त अजीज आ गइलीं तोहरा से ।

पत्नी : हम रउओ से पहिले अजीज आ गइल बानीं । नाक तक पानी आ गइल बा । अबकी भइआ के आवते राउर लच्छन सुनाइब ।

पति : बात-बात में अपना भइआ के डर का देखावेलू ?

पत्नी : भुला गइलीं ? पिछला बेर कइसन पटकले रहन ? हप्ता भर हरदी-गुर पिए के परल रहे ।

पति : तोहार भाई देहाती भुच्चड़ हऽ । हम त हीत जान के छोड़ दिहींला । हमरा दूबर-पातर हाड़ पर नत जइहऽ । फौलाद के बनल बानीं । तोहार भाई त फूल के कोंहड़ा हो गइल बा । दिमाग में भूसा भरल बा– भूसा ! बात-बात में पहलवानी के दाँव हमरे पर अजमावे लागेला ।

पत्नी : बघार लीं सेखी उनका पीठ पीछे । उनका सामने त भींजल बिलाई बन जाईला । अइबे करिहें आजे-काल्ह में । चीठी आइल रहे कि एही हप्ता में जरूर आइब । उनका के भुच्चड़ आ लंठ कहींला नू ? आवे दीं भइआ के । ना कहलीं त हमार नाम ना ।

पति : कवनो झूठ थोरे कहत बानीं । लंठ त हइए हवन । लिख लोढ़ा पढ़ पत्थल ।

पत्नी : रउआ से तनी कम पढ़ल बाड़न त ओकरा से का ? रउआ से पाँच गुना अधिका कमालन । रउआ त तीस दिन आफिस में कोल्हू के बैल लेखा कलम घिस-घिस करींला त दू सै रोपेआ घरे ले आईलीं । एकरा से अधिका त भइआ अपना हरवाहन के दे देलन । बाह रे, चलल बाड़न हमरा भइया से बरोबरी करे । भइआ फूंक दिहें त उधिआ जाइब ।
(बाहर दोस्त केवाड़ी के सिकड़ी जोर-जोर से खटखटावत बा ।)

पति : अच्छा अब घसकबू कि ना एहिजा से ।

पत्नी : बाकिर चाह खातिर कहब त ठीक ना होई । अबहीं तुरंते चूल्हा बुताइल हा । फिर से चूल्हा जरावल हमरा मान के नइखे । (रसोई घर के ओर जात-जात) संघतिआ, संघतिआ, संघतिआ..... जब देख, तब जमदूत लेखा इनकर संघतिआ कपार पर सवार रहेला । हम भइआ के लिखिओ देले बानीं । अबकी अइहें त रउआ सब संघतिअन बूझिहें । (रसोई घर में चल जात बाड़ी)
(पति केवाड़ी खोलत बाड़न आ उनकर संघतिआ भीतर आवत बाड़न ।

कपार पर झोंटा बा । फ्रेंच कट दाढ़ी-मोंछ रखले बाड़न, रंगदार मार्का बेलबॉटम आ टी शर्ट पेन्हले बाड़न ।)

साथी : हम इहाँ घंटा भर से आसरा जोहे में टापत-टापत सूख के खटाई हो गइलीं आ तूँ भीतर आवते कान में तेल डाल के बइठ गइलऽ । भउजी से अइसन का बतकही होखे लागल कि हमार इआदे बिसर गइल ।

पति : बइठऽ बइठऽ । बात असल में ई भइल कि हम उनका से तोहरे खूबी के बखान करत रहीं आ तोहार खूबी एगो-दूगो त बा ना कि तुरंते ओरा जाव ।

साथी : रहे दऽ, रहे दऽ । झूठो के पलाइस मत करऽ । हम अपने घाघ हईं । चलऽ, जल्दी दूगो रोपेआ निकालऽ ।

पति : दूगो रोपेआ ? पहिले बइठऽत । ई दू रोपेआ के का करबऽ ?

साथी : (खटिआ पर बइठ के) लऽ, बइठ गइलीं । अब निकालऽ पइसा । बाहर आसरा में खड़े-खड़े एक पाकिट सिगरेट फूंक देलीं ओकर पइसा के दीही ?

पति : (हँस के) बड़ा दिल्लगीबाज बाड़ऽ भाई ?

साथी : बात मत बनावऽ । तुरंत रोपेआ निकालऽ । बगल झँकला से ना फरिआई ।

पति : (पाकिट से पइसा देके ।) अच्छा भाई लऽ । अब त खुस भइलऽ नूँ ।

साथी : (पाकिट में पइसा रख के) हमार खुस भइल का अतना सस्ता बा ? पुकारत पुकारत नरेटी झुरा गइल । खाइल-पिअल सभ पच गइल । तुरंत गरमागरम कचउड़ी आउर चाह बनवावऽ । बिआह के बाद त हाथहीं ना लागत रहऽ । आज डबल कसर निकालब ।

पति : (घबड़ा के) देखऽ यार ! साँच बात ई बा कि.....

साथी : हई देखऽ तोहार त हाँथे-गोड़ फूले लागल । पसेने-पसेने काहे होखे लगलऽ भाई ?

पति : तूँ चाह खातिर नु कहत रहऽ ?

साथी : खाली चाहे काहे, ओकरा संगे जलपानो गंभीरे चाहीं । कुछ मोहनभोग होय, पकउड़ी होय, कचउड़ी होय तब नु चाह के रंग आई । छूंछे चाह से ना फरिआई ।

पति : हँ, से त ठीके मगर.....(चुहानी में झाँक के घबड़ा के लवट आवत बाड़न ।)

साथी : एकरा में अगर-मगर के का सवाल बा ?

पति : अबहीं तोहार भउजाई साइत पड़ोस में चल गइल बाड़ी । घर सून बुझाता ।

साथी : बोलबऽ झूठ । अबहिंए नूँ कहत रहऽ कि तूँ भउजी से हमार तारीफ के

पुल बान्हत रहऽ । अब कहत बाड़ऽ कि पड़ोस में चल गइल बाड़ी ।

पति : अबहीं थोरिका देर पहिले साचो रही । अँगनइओ में एगो चोर दरवाजा बा । बुझाता, ओनहीं मुँहे चल गइली ।

साथी : जब जीव में आवेला तोहरा से बिना पूछले पड़ोसी घरे चल जाली । ई त बड़ा खराब बात बा ।

पति : ना ना अइसन बात नइखे । बुझाता कि पड़ोस के कवनो मेहरारू उनका के कवनो जरूरी काम से बोला ले गइल बाड़ी ।

साथी : जब उनका ई मालूम हो गइल रहे कि हम आ गइल बानीं त ऊ गइबे काहे कइली ? उनका हर हालत में घर में रहे के चाहत रहे । बाह जी बाह, तूँ भउजी से हमार अइसन तारीफ कइलऽ कि ऊ घर छोड़ के पड़ोसी के घरे चल गइली । भउजी त हमार नीमन सत्कार कइली । ई त हमार सरासर बेइज्जती बा ।

पति : गलत मतलब मत लगावऽ भाई ! ऊ त तोहरा आवे के खबर सुनके अतना खुस भइली, अतना खुस भइली कि कुछ मत पूछऽ । कहत रही कि राउर साथी जे केवाड़ी ठकठकावत बाड़न आ सिकरी बजावत बाड़न त जीव जुड़ा जात बा । ओकर लय आउर ताल सुन के मन मोर लेखा नाचे लागत बा ।

साथी : साचे ? भउजी अइसन कहत रही । इहे कहीं कि हमरा बेर-बेर केवाड़ी पीटे के मन काहे करत रहे । एक बेर त मन भइल कि केवरिए तूर दीहीं, बाकि कसहूँ अपना मन के रोक ले लीं ।

पति : अच्छा कइलऽ भाई ! किराया के मकान हऽ । डाँड़ देबे के पर जाइत ।

साथी : तूँ त जनबे करेलऽ इआर, हम देखावा इचिको पसंद ना करीं । भउजी कवनो जरूरी काम से पड़ोस में चल गइल बाड़ी त जाए दऽ । उनका खातिर हमनी के चाह-जलपान थोड़े रुकी । हम तुरंत हलुवा, कचउड़ी आ चाह बनावत बानीं । चलऽ, चुहानी के रासता बतावऽ जल्दी । केने बा ? एनहीं बा नूँ

पति : (घबड़ा के रास्ता रोक लेत बाड़न) अरे ठहर ठहर भाई ! ऊ तुरंते पड़ोस से लवट अइहें ।

साथी : अइहें त हम भउजियो के अपना हाथ के बनावल कचउड़ी आ हलुवा खिआइब । भउजिओ इआद करिहन । तूँ त जनबे करेलऽ कि रसोई बनावे में हमार बरोबरी बड़-बड़ बबरची ना कर सकसु । चलऽ, हटऽ, रास्ता छोड़ऽ यार !

पति : (साथी के जबरदस्ती बइठावत) तूँ बइठऽ त भाई ! तोहार भउजी सुन लिहन कि तोहरा अपना हाँथे चाह बना के पिये के परल त बहुते बुरा मान जइहें ।

साथी : उनका नीमन लागो भा जबून, परवाहे के करत बा ? बड़ा आइल बाड़ी दुख मानेवाली । यार तूँ त साँचो जोरू के गुलाम हो गइलऽ ?
(रसोई में जोर से कवनो बरतन गिरे के आवाज आवत बा ।)

पति : अरे, कवनो बरतन गिरल का त ? बुझाता ऊ आ गइली ।

साथी : ना । भउजी आइल रहती त हमरा से मिले एहिजा ना अइती ? होई कवनो बिलाई-ऊलाई ।

पति : ठहरऽ तनी देख लीहीं ।

साथी : लमहर बकलोल बाड़ऽ भाई ! बिलाई के दरसन करे जात बाड़ऽ ? बिलइआ के डंटा से मारे के काम बा । कहीं दूध पी गइल त चाह कइसे बनी ? तोहरा से कुछ ना होई, चलऽ हम मारत बानीं । डंटा कहाँ बा ?

पति : तूँ बेमतलब अकुताइल बाड़ऽ । बइठऽ ना चुपचाप । हमरा बुझाता कि तोहार भउजी आ गइली ।

साथी : तनी सुनऽ । हमार कपड़ा फिट-फाट बा नूँ ? तनी देखऽ त ? भउजी से भेंट करे के बा । लिफाफा चौंचक होखे के चाहीं ।

पति : उहे खिस्सा बा कि पानी में मछरी आ नौ कुटिआ बखरा । तनी हम देख त आईं ?
(पति रसोईघर के ओर जात बाड़न आ साथी पाकिट से ककही निकाल के आपन बाल सँवारत बाड़न आ सिटी पर गाना गुनगुनात बाड़न ।)
(एहि समय बाहर से पति के पहलवान साला आवत बाड़न । धोती, कुर्ता, कान्हा पर गमछी हाँथ में डंटा, मोंछ बिच्छू के डंक लेखा ।)

साला : रउआ के हईं जी ? हम पूछत बानी रउआ कवना खेत के मुरई हईं ?

साथी : इहे सवाल हम रउआ से पूछीं तब ?

साला : मिजाज त राउर सातवाँ आसमान पर चढ़ल बा । बुझाता कि रउआ पाहुन के कवनो संघतिआ हईं ।

साथी : आ चेहरा मोहरा से बुझाता कि रउआ हमरा दोस्त के दुश्मन हईं ।

साला : नीमन भइल कि रउआ आवते भेंटा गइलीं । सेन्हे पर धरा गइलीं । खोजे के ना परल । मुन्नी रउआ लोग के बारे में सभ कुछ लिख चुकल बिआ । रउए लोग के पूजा करे आइल बानीं । तनी रह जाईं रिक्सा पर से समान उतार के ले आवत बानीं, तब बताइब रउआ के धोबिआ पाट

आ कालाजंग में का फरक होला । बलुक कहीं त एक बानगी अब देखा दीहीं । (ताल ठोंक के आगे बढ़त बाड़े ।)

साथी : ए अलगे से बात करऽ, अलगे से । (खटिआ के नीचे लुका जात बाड़े ।)

साला : अच्छा, समान लेके आवत बानीं तब अइसन गोलहारब, अइसन गरदन के मइल छोड़ाइब कि हाड़-गोड़ एक हो जाई । (साला जात बाड़े)

साथी : (खटिआ के नीचे से बाहर निकल के पसेना पोंछत) अजब पगलेट के पाला परल बा भाई ! भइ गति साँप छुछुन्नर केरी ।
(रसोई घर के ओर पुकार के) अरे सुनत बाड़ यार ! चाह खातिर गइलऽ त चाहे हो गइलऽ ? (रसोई घर से पत्नी के रोआई सुनात बा ।) भउजी रोवत बाहे बाड़ी ?

पति : (रसोई घर से आके) बड़ा झंझट हो गइल भाई ! आजे चिट्ठी आइल ह कि तोहरा भउजी के भाई के हैजा हो गइल रहे, बेचारे के टिकट कट गइल ।

साथी : त भउजी एह से रोवत बाड़ी । चलऽ हम उनका के समझावत बानीं । एह दुनिआँ में जे आइल बा, ओकरा एक दिन जाहूँ के बा । चलऽ हमहूँ चुहानिएँ में चलत बानीं । एहिजा रहल खतरा से खाली नइखे । तोहरा इहाँ एगो डकैत लेखा आदमी आइल बा ।

पत्नी : (तेजी से रसोई घर से आवत बाड़ी ।) कवन कहत बा कि हमरा भाई के हैजा हो गइल बा । निकल भाग इहाँ से । (रोवे लागत बाड़ी ।)

साला : (बाहर से एगो बक्सा, झोरा, मोटरी ले ले आवत बाड़न ।) का भइल मुन्नी ? काहे रोवत बाड़ू ।

पत्नी : भइया तूँ आ गइलऽ ? ई लोग तोहरा बारे में बहुते खराब-खराब बात कहत रहे ।

साला : अबहीं मरम्मत करत बानीं दूनों जाना के । तूँ चुप रहऽ । ई लोग के गत्तर-गत्तर छटका के रख देब ।

साथी : ई के हवन ?

पति : पहिले भाग मरदे सड़क पर जान लेके, ओहिजे बताइब ।
(साथी आ पति तेजी से भागत बाड़े । पर्दा तेजी से गिरत बा ।)

सीतारामचन्द्र शरण 'राम'

स्व. श्रीसीतारामचन्द्र शरण 'राम' जी 'सरल जीवन महत् चिंतन' के दुर्लभ नमूना रहीं । दूबर-पातर देंहि पर बेमन के पहिरल धोती-कुरता, आँख पर चश्मा आ गर्दन में बैस्नवी धागा, कान्ह पर से लापरवाही से लटकत झोरा, जवना में से झाँकत दू चारि गो किताब-कापी-इहे रहे, श्री 'राम' जी के बाहरी रूप । पुस्तैनी घर सीवान जिला का महाराजगंज थाना के बगौरा गाँव में, बाकिर ध रम-करम में लवलीन इहाँ के बाबूजी सेवा-निवृत भइला पर भगवान राम का जन्म नगरी अयोध्या में बसि के भजन-पूजन में लागि गइलीं । ओहिजे हिन्दी-भोजपुरी के सुख्यात कवि, कहानीकार, नाटककार आ एकांकी लेखक श्री सीतारामचन्द्र शरण जी के जन्म भइल । ओही परम-पबित्तर माँटी पानी से इहाँके जिनिगी के इमारत के नेंव परल । छपरा से सन् 1931 ई. में मैट्रिक आ फैजाबाद से सन् 1923 ई. में इंटर परीक्षा पास । बिहार सरकार के सिंचाई विभाग में सन् 1972 तक राजकीय अधिसेवा । इनका करेजा में मातृभाषा भोजपुरी खातिर ममता उमड़ल । 'भोजपुरी परिवार' (पटना) के स्थापना भइल त ओकरा संस्थापक सदस्यन में श्री रामजी रहीं । जब कलम भोजपुरी का ओरि चलल त ओसहीं सरपट । श्री 'राम' जी खास तौर से भोजपुरी के एगो कुँआर विधा-एकांकी के हाँथ पकड़लीं आ बड़ा तन-मन से ओकरा के साजि-सँवारित रहलीं । इहाँ के 'बहिरन के बटोर' आ 'बानर के करेजा' से त 'अँजोर' में चारि चाँद लागि गइल रहे । 'एकादसी' नाँव के एगो भोजपुरी एकांकिन के संग्रहो निकलल बा । आकाशवाणी, पटना से केतना बेरि इनकर भोजपुरी एकांकिअन के प्रसारन भइल बा ।

एह संग्रह में 'के पाई राजगद्दी' नाँव के श्रीरामजी के लिखल एकांकी के आखिरवाला तीन गो दृश्य दिहल जात बा । एह में इतिहास के एगो उजागर पन्ना सोझा राखे के कोसिस कइल गइल बा ।

के पाई राजगद्दी

पात्र

भाणी : मेवाड़ के राना उदय सिंह के लहुरी रानी ।
अखयराज : जोधपुर के राजा ।
परताप : जेठकी रानी के राजकुमार ।
जगमाल : लहुरी रानी के राजकुमार ।
सगर : जगमाल के छोट भाई ।
सामंत वगैरह.....

[मेवाड़ के राना उदय सिंह के अस्त भइला पर लहुरी रानी, राजगद्दी के असली हकदार परताप के जगह पर आपन बेटा जगमाल के बइठावे खातिर उतजोग में लागल बाड़ी । बाकि अखयराज के ई सोहात नइखे । सामंत लोगन के इच्छा के खेलाफ ई काम हो रहल बा । बाद में परताप मेवाड़ के राजगद्दी प जात बाड़े । बड़ एकांकी के नीचे दिहल अंत के तीन गो झलक में एकरे तस्वीर खिंचाइल बा–सं.]

झलक-1

[राज-दरबार । जगमाल सिंहासन पर बइठल बाड़े । परताप के नाना अखयराज टेढ़े तिकवत ढुकताड़े]

अखयराज : का हो, जगमाल ? (मुँह अइँठत)

जगमाल : (अखयराज के अचक्के आइल देखि के) आहा, परताप के नाना जी ?

अखयराज : (खीसि से) परताप के नानाजी आ तोहार केहू ना ?

जगमाल : (लजाइ के) माफ करीं, नानाजी ।

अखयराज : हमरा से माफे कराके तूँ मेवाड़ के राजगद्दी के हकदार ना हो जइबऽ, जगमाल ।

जगमाल : से हम बूझत नइखीं ? ओकरा खातिर त अपने सभन के असिरबाद आ मूँड़ी पर वरद हस्तो नू चाहीं ।

अखयराज : बाकिर बरदहस्तो त ओकरे नुँ भेटि सकेला, जे ओकरा जोग होखे । तूँ त ना जोगे बाड़ऽ, ना तोहरा राजसत्ता सम्हारे के बले बा ।

जगमाल : हम जोग नइखीं ? ई अपने का कहि देलीं ? रउरा जोधपुर के राजा बानीं आ उहाँ खातिर रउरा कुछऊ भा सभ कुछ हो सकीलें, बाकिर मेवाड़ के राजगद्दी खातिर रउरा जोग-अजोग चुनेवाला ना हो सकीलें, जोधपुरनरेस !

अखयराज : जोधपुरनरेस ? तूँ हमरा के खाली जोधपुरनरेस बूझऽ ताड़ऽ ? हम मेवाड़ के राज के अब दरबारी सामंतो के पद पर रहत बाइल बानीं । तुहूँ अपना जिनिगी में हमार बात कबो ना उठवलऽ । एह से जे हम कहऽतानी से तोहरा माने के परी जगमाल !

भाणी : (दुकत । एने-ओने ताकि के) के ह ?

अखयराज : हम अखयराज हईं, राजमाता ।

भाणी : परनाम पिताजी, असिरबाद दीं कि जगमाल राज-काज नीके चलावसु ।

अखयराज : (खीसि से) ऊ खाली असिरबादे से ना नुँ चलेला, राजमाता !

भाणी : तब ?

अखयराज : ओकरा खातिर बल-बउसाव आ काबिलिअत-लिआकत चाहीं ।

भाणी : हो नुँ जाई, पिताजी! रउरा सभे के छोह रही त सभ कुछ हो जाई ।

अखयराज : हम अइसन नइखीं समुझत, राजमाता ! तूँ अइसन समुझताड़ु, एकर कारन, ई बा कि तोहरा पाले माता के करेजा बा, माता के ममता बा । मतारी बराबर इहे मनावत रहेले, चाहत रहेले कि हमरा पूत के उनती-बढ़न्ती होखे । मतारी के एके आँखि होले आ ओह से ऊ बस इहे देखेले भा देखे के चाहेले ।

भाणी : तब त हमरा कहला के दुख जनि मानबि पिताजी ! हमरो इहे बुझाता कि अपनहूँ ममते के बसी होके अपना नाती के पीठि पर मदत करे धावत आइल बानीं, बाकिर राना अपना जिनिगिए में, राजगद्दी जगमाल के मिलो, ई फैसला कइ देले बाड़े।

अखयराज : हो सकेला, राना ई फैसला रनिवास में कइले होखसु, काहे कि मोंतिरिओ लोग आ हमरो एकर कुछ पता नइखे राजमाता !

भाणी : हँ, हँ ! हो सकेला कि एकर पता अपने का ना हो सकल होखे तबो राना के ई फैसला बहुते पबित्तर आ परहित में बा । एह से अपने सभे के एकरा के माने के चाहीं ।

अखयराज : राना अइसन फैसला कइले, एकर कवनो कागद-पत्तर भा केहू गवाहो-साखी त होखी ?

भाणी : एकर साखी त हमहीं बानीं पिताजी ।

अखयराज : बाड़ू, बाकिर तोहार साखी मानल ना नुँ जाई ।

भाणी : ऊ काहे ?

अखयराज : एह से कि एह साखी के साँच मानि लेला पर, नाफा तोहरे होई ।

भाणी : तब का रउरा लोगनी राजा के फैसला ना मानि के उनुका परलोकवासी अतमा के दुखी करब ?

अखयराज : राना के अतमा दुखी काहे होई ? ऊ त अउरी तिरपित होई; खुस होई कि राना के राज के बिरासत परताप अइसन जोग बली के सँउपाता ।

भाणी : तब इहे ना कहीं रउरा सभे आँखि मूँदि के परताप के पच्छ करे के चाहऽतानीं ।

अखयराज : ई पच्छ परताप के ना, नेआय के होई राजमाता !

भाणी : नेआय के कि अनेआय के ? कबिलिअत आ बल के दोहाई देके रउरा आपन सवारथ पूरा करे के चाहऽतानीं, इहे हमरा नइखे बुझात ?

अखयराज : अब हमरा समुझ में आ गइल, राजमाता कि तूँ ऊ ना समुझि सकेलू, कबो ना समुझि सकेलू जे तोहारा समुझे के चाहीं । सम्बन्ध का बिचार से परताप आ जगमाल दूनों राजकुमार हमरा अपना दूनों आँखि अस बरोबरे पिआरा बाड़न; बाकिर राज आ परजा के हित में एह दूनों में जे अधिका होखे, हमनी के ओकरे के चुने के चाहीं ।

भाणी : राजगद्दी मिलि गइला पर अब चुने के सवाले कहाँ बा ?

अखयराज : मुट्ठी भर सरदारन आ सामंतन के समरथन पर हमनीं के जगमाल अइसन अजोग, अबल आ कुपातर सासक ना सहाई राजमाता !

भाणी : जोग आ बली के जाँच के जवन एगो मोको हाँथे लागल बा, ओकरा के त रउरा सभे छिनवावे के चाहऽतानीं । ई का अपने सभे के जगमाल के साथे अनेआय नइखे ?

अखयराज : राज बरिआरा के होला । जे अबरुआ, निरबल आ अजोग होई, ओकरा हाँथ से राज के बागडोर आजु ना त काल्ह छिनइबे करी । राजगद्दी के सवाल कवनो राजमाता के हुकुम ना ह, जवना के सभे बे सोचले-बिचरले मानि ली ।

(ई कहत अखयराज जाताड़े । परदा गिरऽता)

झलक-2

[नगर के रास्ता । एगो सामंत परताप से भेंटाताड़]

सामंत : नूँ एने-ओने का छिछिआत फिरऽताड़, राजा ? हमनी के जगमाल के गद्दी पर से उतारि के तोहरा के राजा बनइबे करब ।

परताप : काहे ? रउरा सभे हमरा निअर तुच्छ अदिमी खातिर अतना साँसति काहे सहबि ?

सामंत : एह वास्ते कि नेआय खातिर लड़ल हमनी के आपन धरम समुझऽतानीं आ ओह जनहित के कार में तोहार जोगदान जरूरी बा, परताप !

परताप : ओह कुल्हि खातिर हम कहाँ भागऽतानीं सामंतजी ? होइसन लोक-हितारथ खातिर, जनम देबेवाली जननी खातिर भा जनमभुँइ के सवाल खातिर, त ई जिनिगिए अरपित बाटे ।

सामंत : तब तूँ अपना अधिकार से अइसे बेखबर काहे रहऽताड़ऽ ? तूँ राजा बने के तइआर होखऽ, तब नूँ हमनी के तोहार समरथन करब । मेवाड़ के पबित्तर राजगद्दी पर हमनी का तोहरे निअर जोग आ तेआगी राजा के राजतिलक चाहऽतानीं ।

परताप : हम अपने के बिचार के आ भाव के सराहऽतानीं, बाकिर ओह से छोटकी राजमाता के मन में दुख होई, एकरे सँकोच होता आ छोट भाई जगमालो के मन छोट हो जाई सामंतजी !

सामंत : एही से का तूँ नेआय के गरदन रेति देबऽ ? निरपराध परजा के पीरा के परसाद बँटबऽ ? अधिका सोझ, सँकोची भा सुजन भइलो त कबो-कबो कदराइए में गनाला । ई कवनो लरिकन के खेलि ना ह कि जेही चाहे, उहे अपना मने राजा के राजगद्दी पर बइठि जाय आ हकवाला टुकुर-टुकुर ताकत रहे ? राजगद्दी का कवनो लरिकन के झुन-झुना ह, जवन कवनो लरिका के हाँथ में, रोअला पर, चुप करावे खातिर, धराइ दिहल जाय ? तूँ हीं कहऽ ई कहाँ तक ले उचित बा ?

परताप : ना.....

सामंत : तब ? (दोसरा सामंत के आवत देखि के) हँ, हई भाईजी आवऽतानीं, इहाँ से पूछऽ आ समुझऽ कि हम जे कहऽतानीं, ऊ सही बा कि गलत ? (दोसरा सामंत से) परनाम, कहीं, कहीं भाईजी, केने से आसन आवऽता ?

दोसर सामंत : परनाम, राजेदुआर से त ।

सामंत : राजेदुआर से ? तब त रउरा जरूर कुछ समाचार मिलले होई ।

दोसर सामंत : मिलल बा, जरूरे मिलल बा, बाकिर.....

सामंत : बाकिर का ? आ जोधपुरनरेस हमरा पता लागल ह कि ओनहीं गइल रहले ह ।

दोसर सामंत : जोह का लागल ह, गइले रहले ह ।

सामंत : त राजमाता से उनुकर बतकही भइल हा ?

दोसर सामंत : भइल हा त, बाकिर कुछु उजिआइल ह ना ।

सामंत : ऊ काहे ?

दोसर सामंत : राजमाता अपना हठ पर अड़ल बाड़ी ।

सामंत : ऊ का ?

दोसर सामंत : ऊ राज-सत्ता जगमाल के हाँथ से हटा के परताप के देबे के नइखी चाहत ।

सामंत : तब त बीरन के तरुअरिए उनका के रस्ता पर ले आई । बुझाता ई कुल्हि अब बे लड़ले-भिड़ले ना फरिआई । त बाजो रन के भेरी !

परताप : ना, ना रन के तइआरी जनि करीं रउरा सभे । ई कुल्हि खून-खराबी परताप खातिर जनि होखो । परताप अपना सवारथ खातिर लड़ाई के नेंवता नइखन देबे के चाहत । बलुक गद्दी जगमाले के दिआ जाउ, परताप के तनिको दुख ना होई ।

सामंत : परताप के त ना होई दुख, बाकिर परजा त हरमेस दुख के सागर में डूबत-उतरात रही, परताप ! जोग सासक मुदई के चढ़ाई कइला प परजा के एक ओर रच्छा करेला त दोसरा ओर अपना कड़ाई से अनेआय के दबावेला, अनेति के नासेला, बाकिर अजोग आ बल से हीन राजा परजा के कवनो सहारा ना दे सके । ओकर बरदानो बीखि हो जाला ।

परताप : त बोलीं, रउरा सभे का चाहऽतानीं ? हमरा के का हुकुम देतानीं ?

दोसर सामंत : हुकुम ? ना, ना, हमनी के हुकुम देबे के नइखे । तोहरा से अरज करे के बा, राजा !

परताप : अरज ?

दोसर सामंत : हँ, परताप ।

परताप : ऊ का ?

दोसर सामंत : इहे कि तूँ जोधपुरनरेस के लगे चलऽ आ ऊ जवन-जवन कहऽताड़े, ओही-ओही पर, बिचार करऽ, जेह में कार आगा टकसो ।

परताप : चलीं, हम तइआर बानीं ।
(तीनूँ जाना जाताड़े । परदा गिरता)

झलक-3

[राजदरबार राजसिंहासन पर जगमाल उदास बइठल बाड़े]

सगर : रउरा अतना उदास काहे बानीं भइआ ?

जगमाल : (अकचका के) उदास ? ना, ना, (कुछ सम्हरि के) बाकिर हँ, कबो-कबो हमरा संका हो जाता सगर, कि हम राजा के राजगद्दी पर बइठि के कवनो गलती त ना कइलीं ।

सगर : हा-हा-हा-हा, ई लरिका निअर रउरा का सोचऽतानीं ? राजा कतो गलती करेला ?

जगमाल : ना ? बाकिर कबो-कबो हमरा अइसन बुझाता । हमार अतमा हमरा के रहि-रहि के धिरकारता कि हम परताप के हक छीनि के, लमहर बेजाँइ कइ रहल बानीं ।

सगर : ओह कुल्हि से राजा के ना डेराए के चाहीं भइआ । केकरा देंहि में अतना बूता आ बल बा, जे राजा से लोहा ली ?

जगमाल : आ सुनऽ, हमरा इहो पता लागल हा कि सरदारन आ सामंतन में हमार बिरोधी अधिका बाड़न ।

सगर : ओह से का होला ? राजसत्ता एक-एक जाना के भुरकुस कइ घाली । आ राजा के हाथ में जवन साम-दाम-दंड-बिभेद के हथियार होला, ऊ कवना दिने कामे आई ? रउरा निहचिंत सूतीं, महराज, राउर बाल बाँका ना होई । जतना लोग ऊँट निअर अइहें, सभे रउरा अस पहाड़ के सोझा छोटे लगिहें । कुल्हि जाना के लोहा के चना चबावे के परी ।

जगमाल : बाकिर हम इहो सुनलीं हँ सगर, कि राजगद्दी के सवाल पर सरदारन आ सामंतन में बड़ा तनाव हो रहल बा । अगर तुरंत कवनो समझवता ना होई त हो सकेला कि ऊ लोग लड़ाई लगवा दे ।

सगर : लड़ाई से के डेराला महराज ? लड़ाई से त उहे डेराला, जे कायर भा निरबल होला । हमनी के डेराए के सवाल नइखे ।

जगमाल : देखऽ, देखऽ कुछ लोग एनहीं आ रहल बा आ ओह लोग के गोड़ राजभवन के हाता में ढूके में तनिको थथमत नइखे ।

सगर : हँ, कुल्ह जाना त राज के सरदारे-सामंत बुझाताड़े । आ जाव लोग, सभ जना संगहीं बन्हुआ बना लिहल जइहें । रहीं, हम सिपाही लोग के सादा पोसाक मे एह हाता के चारू ओर घूमत रहे कि भितरिआ हुकुम दे देतानीं

(गोड़ से एगो घंटी दाबता, जेह से केनहूँ घंटा के अवाज होता ।)

जगमाल : बाकिर ना, ओह लोग के आगा-आगा त जोधपुरनरेस अखयराजो अगुअई में आ रहल बाड़े ।

सगर : केहू होखे, सभके एके लउरी हाँके के परी, भइआ ।

जगमाल : ना ननोजी के ?

सगर : त दोसर का ? लड़ाई में नाना-दादा के कवनो नाता ना रहे । जे आवेला ऊ चाहे अपना दल के होला चाहे मुदई के दल के । आ ओह में अपना दल के बँचावल जाला आ मुदई के मुआवल जाला । इहे रन के नीति ह ।

जगमाल : चुप रह । ऊ लोग नगिचा आ गइल ।

सगर : त सचेत हो जाईं ।

अखयराज : (पहुँचि के ऐने-ओने ताकत) आवे के चाहऽतानीं ।

सगर : (उठि के सोझा आके अगवानी करत) आवल जाय ।

जगमाल : सोवागत बा, आवल जाय नानाजी !

अखयराज : (पाछा घूमि के पाछे आवत लोग से) आव आव, आव जा लोगन । तोहू लोगन के आवे के इजाजत बा । आपन आपन आसन ले लऽ जा । (सभ लोग बइठता । जगमाल ओरे अँगुरी से इसारा करत) इहे हवन जगमाल, (सभ लोग जगमाल ओरे देखता । तब दोसरा ओर बइठल जगमाल के समरथक दल के देखा के) आ इहे बा इनिकर मुट्ठी भर सरदारन आ सामंत के समरथक दल ।

सागर : (खिसिआइल उठि के) एह लोग के रउरा मुट्ठी भर जनि समुझीं, जोधपुरनरेस !

अखयराज : ना हो, ई लोग त भाड़ फोरेवाला चना बा ।

सगर : का कहऽतानीं अपने ? ई बीरबाँकुड़ा लोग अपने के सउँसे बिरोधी

दल के पीसि के पी जा सकेलन ।

अखयराज : बाकिर हमरा त बुझाता कि एह बीरबाँकुड़ा लोग के दूध के दाँत रन के नाँवे सुनि के भहरा जाई । आ जवना बीर दल के तोहरा अतना अभिमान बा ऊ गिनती में त हमनी के दल के चउठी ले अधिका नइखे बुझात ।

सगर : अगर गिनतिए बल होखे, त रउरा दल के दोबरी सैनिक एह राजभवन के गुप्त रूप से घेरले घूमि रहल बाड़े, जे हमरा एक इसारा पर रउरा सभे के बन्दी बना सकेले ।

अखयराज : अपने मने, बिना राजा के हुकुमे के ?

सगर : बिना राजा के हुकुमे के काहे ? राजा (जगमाल ओरे संकेत करत) का हुकुम दे ना सकेले ?

अखयराज : कवन राजा ? जगमाल ? इहे जे धोखाधड़ी से राजगद्दी पर बइठ गइल बाड़े ?

सगर : के कहता अइसन ?

अखयराज : हम ।

सगर : मानि लीं धोखेधड़ी से राजगद्दी लिहल गइल बा, त रउरा कहे के का बा ? रउरा जाँगर में जोर होखे, त आईं, जंग करीं ?

अखयराज : तोहरा से आ जगमाल से जंग कइल जाई ? जंग त समान बलवाला से होला । एगो बेंगुची के केहू मारि के मुआइए दे, त ओह से कवनो बाघ के नाँव होई ?

सगर : ओहो, अब अपने के आगा-पाछा के पैंतरा के मरम बुझाइल । जंग के जोसो बा आ हार के डरो । साफे-साफ कहीं ना कि अपने का चाहऽतानीं ?

अखयराज : हम जे चाहऽतानीं से कइ के देखा देतानी ।

सगर : (आगे बढ़ि के दाती उतान कइ के) देखाईं ।

अखयराज : (अपना दल ओरे देखि के) राजा रामसिंह तँवर !

तंबर : (उठि के) हुकुम ?

अखयराज : आगा बढ़ि के जगमाल के बावाँ बाँहि धरऽतऽ (तंबर बिजली निअर पहुँचि के जगमाल के बावाँ बाँहि धरऽताड़े) आ तूँ दहिना राउत किसुन दास ! (ओही मुस्तएदी से राउत किसुन दासो जगमाल के दहिना हाथ धरऽताड़े) बस तूँ दूनों जोधा जगमाल के गरदनिआ देके राजगद्दी पर से उतारि द आ ओकरा के हमरा सोझा ले आके खड़ा

करऽ (जगमाल के राजगद्दी से उतारि के अखयराज के सामने खड़ा कइल जाता । जगमाल ओरे घिरिना से घूरत) अब एकरा के इहें, नीचे, सिंहासन के सामने बइठा द । (बइठावे के कोसिस होता) जगमाल, तें मेवाड़ के राना ना बनि सकेलस ।

सगर : (खीसी भूत भइल) ई अनेआय ?

अखयराज : बोलऽ जनि, ना त तोहरो पुरहचरन हो जाई ।

जगमाल : (बइठावत जोधा लोग से झक्काझोरी कइके छरकत) छोड़ि द, छोड़ द हमरा के । जेकरा बीचे इज्जत ना, ओकरा लगे असथान का ? अब हम मोगलन के जमात में जातानीं, जहाँ से हम तोह लोग से एह अपमान के बदला नीके तरी ले सकीं ।

अखयराज : जा, मुँहें करिखा लगावऽ, हमनी के तोहरा अइसन देस-द्रोही के, राना के ऊँच राजगद्दी पर बइठा के, ओकरा के अपबितर नइखे करे के । उठऽ परताप, अब तोहार राज के अधिकार निहकंटक हो गइल । राना उदय सिंह के मरजादावाला मुकुट पहिरि के, तूँ राजगद्दी के सोभा बढ़ावऽ । (परताप राजगद्दी पर बइठ ताड़े । चारू ओर से जय-जयकार के नारा गुँजऽता) जय, जय ! राना परताप के जय ! कुँअर परताप के जय ! मेवाड़ के जय !

(दूनों ओर से झंडा लेले हल्ला-गुल्ला होता । परदा गिरऽता ।)

डॉ. बसंत कुमार

डॉ. बसंत कुमार के पूरा नाँव ह– डॉ. अयोध्या प्रसाद सिंह । बसंत कुमार उपनाँवे से इहाँ के साहित्य सिरजना करीला । इहाँ के जनम 3 जनवरी सन् 1930ई. के गोपालगंज जिला में खजुहदी गाँव के एगो साधारन परिवार में भइल । पिता के नाँव श्रीबाबूराम सिंह ह । राजपूत स्कूल छपरा से हाई स्कूल कइला के बाद कॉलेज के शिक्षा पटना कॉलेज में भइल । सन् 1955ई. में संस्कृत से एम. ए. कइला के बाद बी. एन. कॉलेज, पटना में प्राध्यापक पद पर नियुक्ति भइल । सन 1967ई. में इहाँ के डी. लिट. के उपाधि मिलल । जुलाई 1976ई. में राँची विश्वविद्यालय में रीडर पद पर इहाँ के नियुक्ति भइल, जहाँ आज विभागाध्यक्ष आ प्रोफेसर पद से सेवा-निवृत्त होके संन्यासी के जीवन जी रहल बानी ।

भोजपुरी में प्रकाशित पुस्तकन में बसंत कुमार जी के 'लहर-लहर में सावन' (भोजपुरी कविता-संग्रह) आ 'अकसरुआ' नाँव से एगो एकांकी संग्रह बा । इहाँ के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पत्रिका के प्रधान सम्पादक रहल बानीं ।

ए संग्रह में बसंत कुमार जी के लिखल 'अकसरुआ' नाँव के एगो एकांकी दिहल जात बा । 'अकसरुआ' संस्कृत के भाण शैली में लिखल भोजपुरी भाण ह । भोजपुरी नाटक साहित्य खातिर 'अकसरुआ' एगो नया प्रयोग बा ।

एकल अभिनय

अकसरुआ

[पृष्ठभूमि से जोर से सीटी बजावत रेलगाड़ी के सड़ाक से निकल जाये के अवाज । एकरा लगले बाद में एगो पुरुष कंठ–]

घुरबहारन : जा पँचबजिये गाड़ी चल गइल । बरखा-बूनी के दिन बा । बुझाता जे मलिकार का घरे चहुँपत-चहुँपत रात हो जाई । ओहिजा तेज बोखार में डूबल रुपिया मउँसी अकुला-अकुला के हमार पेंड़ा जोहत होई घुरबहारन के गइला हातना देर हो गइल, अबहीं ले ना अइले..... का का करसु घुरबहारन ? लोग उनका के चले-चलबलाए दे, तब नूँ ? केहू के नादहा में लेदिए घट गइल बा, केहू के भइँस नादहा के अखाड़ते बीआ, केहूके गाँव के बाजार से कवनो सउदे मँगवावे के बा हजार गो लोग, हजार गो काम आ एगो घुरबहारन । केकर-केकर काम बजावसु ई ? आपन काम बिला जाव, बाकी लोग के काम बन जाए के चाहीं । .....घर में आज आठ दिन से रुपिया मउँसी बेमार परल बीआ, तबहूँ लोग हमार जान नइखे छोड़त ।

(कुछ करुन अंदाज में) अपना जनमे के पहिलहीं बाप के खा गइलीं । छव-सात महीना ले केहू तरे मतारी के आँचर मिलल, ओकरा बाद अपना एकलउता घुरबहारन के छोड़ के उहो सरग सिधार गइली । (कुछ व्यंग्य का साथ) हूँ, जम से बँचावे खाती नाम रखाइल घुरबहारन । मतारी के छोह जे ना करावे ! बाकी घुरबहारन त जम्हुराजो के सरदार निकलले जनमते बाप-मतारी के खइले आ कुछ सेआन भइला पर जनाना आ बेटा के चबा गइले । ऊ त कहीं, जे मुसमात रुपिआ मउँसी के आँचर के छाँह मिल गइल, घुरबहारन बाँच गइले । .....बाकी साँच पूछीं त हमरा बाँचे के चाहत ना रहे । जे हमरा मतारिओ से बढ़ के जनलस-मनलस, ओह रुपिओ मउँसी के कवनों सुख ना दे सकलीं । जिनगी के चालीस बरिस पसेना बहावत हो गइल, बाकी कहिओ ठीक से पेट ना भरल । मलिकार के काम से एको दिन देह ना चोरवलीं, बाकी उनकर करजा माथ पर चढ़ले रह गइल । .....घुरबहारन के सुख चाहे दुख के अब उहे त एगो संघतिआ बाँचल बीआ । अगर उहे ना रही त घुरबहारन के के आपन रह जाई, के डाँटी, के पुचकारी, के लोर पोंछी ? ..... बोखार टूटे के नाँवे नइखे लेत । एको अधेली पास में नइखे जे किछु दवा-बीरो कराईं । अब तनी झटक के चलीं । मलिकार पाँचो गो रोपेया दीतन त रुपिया मउँसी के डाकदर बाबू से देखइतीं, किछ दवा-बीरो करइतीं त हाली दे आछा हो जाइत ।

(घटा गरजत बा । बिजुली के कड़कड़ाहट दूर तक ले फइल जाता ।)

ऐं ? ई त घटा गरजे लागल । भंडार कोना से करिआ घाटा उनहल चलल आवता । सावन-भादो के महीना में अइसन अबरखन आ सुखार कहाँ भइल रहे ? ....बरिसऽ हे ईनर, बरिसऽ, धरती के झराइल ओठ के तर क दऽ ?

(टिप्-टिप् बूनी परे के अवाज । साथ में हवा के सिसकारी आ मेघ के धीमा गरजन ।)

बाह रे भाग, बूनी त परे लागल । अब हम बीच रहते घेरा गइलीं । कतहूँ लुकाएब ना त पूरा भींज जाइब । हमरा आगा निगिचे में धरीछन बाबा के घर लउकता । चलीं, थोरहीं देर ओहिजे बिलम जाईं । .....बाड़ऽ .....हो धरीछन बाबा । तनी हाल दे केवरिआ खोलऽ हो ।

(केवारी ढकढकावे के अवाज बरखा आ हवा के तेज झोंका के बीच से सुनाई परता ।)

आरे हम हईं हो, घुरबहारन बदरी बरखा में भींजऽतानी ।

(पुरान केवारी चरमरा के खुलत बा ।)

(अचरज से) आरे ! धरीछन बाबा, तूँ ? .....(इआदि क के) ओ हो,

हम त एकदमें भूला गइल रहीं जे बाबा टटके बिआह क के घर बसवले ह । बाह, तोहार अजगुत रूप त देखत बनता, ए बाबा ! झुराइल झरकट के लकड़ी अइसन टाँग आ सूखल करिआ चाम पर पिअरी धोती देख के मिजाज सचहूँ लहालोट हो गइल । खोढ़िला अइसन धसल आँखन के सिकुरल कोर पर सुरमई काजर । बुझाता जे धुक-धुकात दीआ पर टेम के करिखा फइल गइल होखे । बिना दाँत के मुँह में पान चाभऽताड़े त लागता जे झगरू लोहार के भँथी चल रहल बा । आछा बाबा, हम बहुत देर ले बिलमब ना, हमरा के देख के सिटपिटा काहे गइलऽ । .....ऐं ?

का कह ताड़ऽ ? तोहार बतिआ सुनात नइखे, ऐ घुरबहारन कान से किछु ऊँच सुनाला । ओ-हो-हो-हो ! (व्यंग्य के हँसी के साथे) ई त हमहूँ बूझतानी जे तूँ ऊँच सुने ल । बाकी हमरा नजर में तहार काने ना, आँख, मुँह, हाथ, गोड़ आ दिमाग सभ ऊँचे काम करेले सँ । .....का कह ताड़ऽ ? का करीं, घर में केहू करनिहार ना रहे, लोग बालाजोरी बिआह करा देलस ।

हँ..... हँ, बतिया सवासोरह आना ठीके कहऽ ताड़ऽ । तोहार दुख भला हम काहे ना पतिआइब । जवान बेटा के घर में कुँआर रखले बाड़ऽ..... आछा, नगदे कइलऽ । मूवे का बेरा घर बसा ले ल । ऐं ? का कहऽ ताड़ हमरा सामने मूवे के नाँव मत ल..... नया-नया सादी क के आइल बानीं आ तूँ आजुए असगुन मनावे लगलऽ..... ?

ना, ना, के कहता जे तूँ जल्दिए मूँ जइबऽ । अबहीं तहरा देंह में अइसन चर-चर गो मेहरिआ राखे के ताग बा । जम्हुराजो का तहरा लगे आवे में दू-चार

बेर सोचे के पर जाई । का कहऽ ताड़ 'अइसन मत कहऽ घुरबहारन, हम त एह सादी में बिका गइलीं हाँ, बरबाद हो गइलीं । जवनो बाप-दादा के कमाई बा, ओकरो के बेंचि के एही में सोवाहा कर देलीं । सउदा बाड़ा महँगा परहल हो.....।

सउदा ! (व्यंग्य के हँसी) कवनो फिकिर मत कर, सउदा चोखे मिलल बा नूँ बाबा ! का कहऽताड़ऽ, 'अगर इहे रहित त अपसोसे कवना बात के रहल ह.....। समुझिहऽ जे नव बरिस के नेउरी बझा के ले आइल बानीं– अबहीं बाड़ा पोसे के परी हो ।'

त नेउरिआ नव बरिस के बीआ नूँ ? फिकिर मत करऽ । छोटहनो नेउरिआ बड़का-बड़का गहुँअन के चबावेली सँ.....। ई त नव बरिस के बीआ । .....ल, बतबगड़ में नीमन के बतिआ बिसर गइल रहे । तनी हमरा नयकी नव बरसी आजी के देखइबऽ ना, बाबा ! का कहऽताड़ऽ ? भगबे कि ना एहिजा से ई तोर आजी ना ह, भउजी कहिहे, भउजी ।

गलती हो गइल बाबा, छिमा कर द । तोहार कहनाम एकदम ठीक बा– तूँ हमार बाबा, ऊ हमार भउजी । .....(कुछ इयाद कइ के) ओह, ना बाबा, आज जाए द । फेर कहिओ भउजी के देखे आइब, आज बाड़ा हुलबुली में बानीं । बाहर बरखा छूट गइल । अब चलऽतानीं– राधा-किसन के ई जोड़ी बनल रहो ।
(दूर से मस्ती में आ अटपटा देहाती सुर में गीत गावे के अवाज । अवाज धीरे-धीरे नजदीक भइल जाता–)

'नन्हका बलमुआँ ले के सुतलीं अँगनवाँ
बनवारी हो, जरि गइले एड़ी से कपार ।
चुप होखु, चुप होखु नन्हका बलमुआँ
बनवारी हो, रहरी में बोलेला सिआर !

अरे, ई त सामने राहता पर तपेसर भइअवा ह– टीसन पर से चकुनी हाथी लेखा मस्ती में बिहरत आ रहल बा । आज बाड़ा फुलहार बुझाता, कुछ बात जरूर बा । माथा पर ई कवना चीज के बड़का मोंटरी लदले आवऽता । (पुकार के) हो तपेसर भाई, आरे तनी हमरो पर दीठ द हो । तनी बिलम के खइनियों त खियावऽ । आज बड़ा मिजाज में बुझाताड़ऽ भाई ! का बात बा ? का कहऽ ताड़ऽ ? आज दू मन चीनी, पाँच रोपेआ किलो बिलेक से बेंच के आवऽतानीं । ढेर दिन पर आज पाकेट गरमाइल बा । हई लऽ– तनी मोंटरिआ नीचे धरवा द आ बनावऽ खइनी । (मोंटरी हुमच के नीचे धरे के नाट्य)

बाप रे, ई त भाला बड़हू ! अइसन भारी बा जे हमार त नारा उकस गइल । भीतर ई लोहा भरले बाड़ऽ का हो ? अतना भारी मोटरी माथा पर लाद के

दू कोस से चलल आवताड़ऽ । का कहऽ ताड़ऽ । भारी मत कहऽ ए भाई ! बिलेक हमार लछिमी हऽ । हमरा खाती त ई रुई लेखा हलुका बा ।
(खइनी थपथपावे के अवाज)

हँ भाई, तोहरा लेखा चानी काटे आइत त दुखे कवना बात के । का कहऽ ताड़ऽ, चानी काटे खाती अकिल के जरूरत होला हो, असहीं ना हो जाए ?

(खइनी ओठ में ध के आ थुकर के)-- बतिआ त ठीके कहऽताड़े भइअवा, हम तोरा लेखा अकिल के मोंटरी ले के त आइल नइखीं । बाकी हमरा मोंट बुद्धी में ई बात आँटत नइखे-- आखिर एतना चीनी बिलेक करे खाती तोहरा मिल कइसे जाला ? का कह ताड़ऽ, एकर राज सुनके का करबऽ ? कवनो गुनी अमदी आपन गुन के डगरे-डगरे ना कहत चलेला । बाकी इआर हवऽ तोहरा से लुका के राखब कहवाँ ? आज का जबाना में कवनो चीज मोसकिल नइखे, ए घुरबहारन भाई ! थोड़ देर खाती ईमान आ सचाई ताखा प ध द तब, चुटकी बजावत में काम निकल जाई । बाकी खबरदार, ईमान आ सचाई के फेर में परलऽ कि ता जिनगी भटकते रह जइबऽ .....सूखल रोटिओ दुलम हो जाई ।

तूँ त बड़का गेआन के बात कहऽ ताड़ऽ ए तपेसर भाई ! बाकि तोहार लेचर सुने के हमरा पास टाइम नइखे । अपना गेआन आ उपदेस के पेटारी मत खोलऽ, सीध बतावऽ जे ई सभ हो कइसे जाला ? चीनी के त कोटा बान्हल बा । का कहऽताड़ऽ ? आरे कोटा-बोटा मुरुखन खाती बा । हम त जेतना चाहीं, चीनी हँथिया लीं ले । कुछ साहेब लोग के पाकिट गरम क दीले सभ काम अपने से हो जाला । समुझिहऽ जे दस रोपेआ खरचीलें त पचास रोपेआ मुनाफा होला । अब एकरा से नीमन, बेझंझटवाला सउदा दोसर का होई, बतावऽ ?

तोहार सउदवा त साँचे नीमन बुझाता ए भाई, बाकि अकेले रोपेआ गाँजत जात बाड़ऽ, इहे खराब लागऽता । हमार बात मानऽ, गाँव में एगो टरेनींग इसकोल खोल द । हमरा अइसन जाहिल लोग के बड़का कल्यान हो जाई । एमे बीए के डिगरी ले के केतना भाई लोग गली-कूचा छान रहल बा । केहू ओह लोग के पुछनिहार नइखे । पढ़े फारसी, बेंचे तेल, देखऽ भाई करम के खेल । तोहरा से टरेनींग ले के सभे, बड़का-बड़का डाकदर आ परफेसर लोग के कान काटे लागी । आखिर पइसवे के नूँ महातम बा हो । का कहऽ ताड़ऽ ? बस अब तूँ असलीअत बूझ गइलऽ भइया । इहे बतिआ त हमहूँ बरमहल गूनत रहींले ।

जले बिलेक ना करत रहीं, तले लड़िका सभ भूखे बिल-बिलात रह सँ । मेहरारुओ दुनूँ बेरा बढ़निए से बात करे-- रोजे अपना नीमनका में से दस-बीस गो सुनावे । ऊ बराबर इहे दोहरावे-- खिआवे ना पिआवे, माँग टीके धावे । अब त

समुझिहऽ जे जहिआ से एह रोजगार में हाँथ लगवलीं सभ आपरूपी ठीक हो गइल बा। पाका के घर बनाइए लेलीं, दुआर पर दू-चार गो पस होइए गइले सँ, अब उहे मउगी बिआ जे हमार चरन पखारेले आ जले गोड़ ना दबावे तले सुतहीं ना देवेले।

ई सभ भाग के बात ह, ए तपेसर भाई ! भाग के साँढ़ बाड़ऽ एही से तोहरा पर बिलेक माई के किरपा भइल बा। हमरा-तोहरा रोजगार में आ धरीछन बाबा के रोजगार में कवनो जादे तफरका नइखे बुझात। फरक खाली अतने बुझाता, जे ऊ बिलेक से मेहरारू उगाहऽताड़े आ तूँ बिलेक में पइसा उगाहऽताड़ऽ। .....आछा भाई, अब हमरा के जाए द, कुछ जरूरी काम से निकलल बानी। हई ल, मोंटरी फेर तोहरा मुड़ी पर धर देत बानी (मोटरी धरे में हुमचे के नाट्य)। आछा, तनी हमरो पर खेआल रखिहे भइअवा ! (खइनी थूके के अवाज) अब तनी हमहूँ डेगारे चलीं। साँझ भइल आवऽता। हमरा सामने बाबू के आम के बगइचा बा-अँसवारी लउकता। गछिए मँहे हमरा जाए के रहता बा। चल रे मन, कहूँ अइसन मत होखे जे तोहरो के दुबर-पातर जान के लोग बिलेक के सउदे बना लेबे। (साँझ पहर के चिरइन के सोर। बीच-बीच में गोरू के रँभाइल सुनाई परऽता आ दूर से बँसुरी के मीठ सुर आ रहल बा।)

अब त पूरा साँझ हो गइल। चरवाहा भाई लोग माल-गोरू चरा के अपना-अपना घरे लवटल जा ताड़े। बाबू के एह गाछी में अबहिंए अन्हार हो गइल बा। बरखा भइला से रहता त गील होइए गइल बा, भींजल पतइन पर से पानी टघर-टघर के हमरा देंह पर पर रहल बा।।

(कुछ दूर से बहुत करुन अवाज में स्त्री-कंठ के सुसुकल सुनाई परऽता।)

ऐ ! ई का सुन रहल बानीं ? कतहूँ अगल-बगल में त दोसर केहू बुझात नइखे। .....बाछा, हऊ हमरा सामने जे बड़का पीपर के गाँछ बा, ओकरा जर तर कवनो मेहरारू बइठल बुझातिआ। ऊजर धप-धप साड़ी। बाप रे, ई त बड़का फेर में पर गइलीं। गाँव-जवार से दूर आधा माइल के हलका में बाबू के ई गाँछी फइलल बा। सुनसान गदहबेर बा। हमरा निगिचा दोसर कवनो अदिमी लउकतो नइखे। जरूर ई कवनो चुरइल हऽ-हमार रहता रोक के सुसुकतिआ।

(सुसुके के आवाज बहुत करीब आ जाता।)

अचरज से आरे, ई का देख रहल बानीं साँय-साँय अवाज में। ई त छोटकी चाची हई, मलिकार के मुसमात पतोह। बाकी ई त आज तले अपना घर के चउखटो नइखी लँघले। का बात बा ? ओ हो, जरूर उहे हई। अब पूरा चीन्हा गइली। बेचारी सादी भइला का दुइए महीना का बाद मुसमात हो गइली। बड़का कुलखनदान के बेटी ! रूप अइसन कि अन्हारा घर में अँजोर हो जाय। बाकि अब

त ई सभ अकलंक हो गइल बा । घर में सास-ससुर, भसुर-गोतिनी, ननद सभे इनका पर अनेरे किटकिटात रहेला । बेचारी गारी-बात सभ सहेली, केहू के जबाब ना देसु, तबहुँओं इनकर गुजर भइल मोसकिल बा । .....मलिकार के अँगना के सभ केहू से हमार बोल-चाल बड़ले बा, त काहे ना तनी इनका से चलके पूछीं जे का बात बा ? (नजदीक जा के) चाची, सलाम– हम घुरबहारन हईं, अपने के मजूरा । का बात बा चाची, अपने गाँव-घर से बहरी एह सुनसान बगइचा में कइसे आ गइलीं ? का तकलीफ बा, काहे रोवऽतानीं ?

(सुसुके के अवाज में अवरू तेजी आ जाता)

धीरजा धरीं चाची, अपने के घर के इज्जत के सोहरत सउँसे जवान में बा । अइसन हालत में अगर केहू बाइली अदिमी अपने के देख ली त मलिकार के पगरी नीचा हो जाई । कवनो दुख होखबो करे त अपने धीरजा धरीं, चुप हो जाईं । कवनो तकलीफ के बात होखे, त अपने दिल खोल के कहीं– घुरबहारन के जान सेवा में हाजिर बा । ऐ ? का कहऽतानीं ? हमरा के.....छोड़ द.....जहाँ जा ताड़ऽ.....जा ।

ना चाची, ई अपने का कहऽतानीं ! अपने के अइसन हालत में तेज के घुरबहारन एको डेग आगे ना बढ़ सकसु । अपने के नीमक हमरा खून में बा । का कहऽतानीं ? आज जान सकलप क के..... चलल बानीं, सतबजिआ गाड़ी के पँएड़ा .....जोहऽतानीं । .....अब जी के का होई ? .....हमरा आगा पीछा के बा ? ..... मर जाइब त.....सभे जाई । तूँ जा बबुआ.....तोहार गोड़ परऽतानीं.....हमरा के छोड़ द ।

ना चाची, ई त कबहूँ होइए ना सकेला । हमार किरिआ, अपने लवट चलीं । हम अपनेहीं के घरे त जा रहल बानीं । का कहऽतानीं ? हम कहाँ जाईं हो ! .....ओह घर के दरवाजा हमरा खाती बन्द हो गइल बा । .....कसूर इहे रहे, जे आज सासुओ के गारी हमरा से ना सहाइल । हम अतने कहलीं जे गारी मत दीं । बस, सरग में आग लाग गइल । .....जादे का कहीं ! तोहार मलिकारे हमरा घेंट में हाथ लगा के घर से निकाल देले बानीं । .....अब बतावऽ, हम कहाँ जाईं ? हम त सात अभागतिन में एगो अभागत बानीं । .....बाप मातारी, भाई-भउजाई (पिघलल अवाज में) .....केहू त नइखे, जे एह असरन के सरन देउ । (फेरु सिसुके लागऽताड़ी)

चुप हो जाईं चाची, धीरजा धरीं । हम सभ समझ गइलीं । मलिकार के अइसन ना कइल चाहत रहे । घर के लछिमी के निकाल के केकरा सुख होई ? का कहऽतानीं ? जे लछिमी होखे ऊ नू ? .....हम त अभागिन दुखिआ हईं । (गला खसखसा जाता) सभका आँखिन के काँटा । .....हमराके के चाहीं, काहे चाही ?

अपने जे कहीं चाची, अपने के रहन-गुन त सउँसे गाँव-जवार गावेला । बिध-बरह्मा के रेख– तकदीर खराब हो गइल, हो गइल । बाकी हीरा के कोइला के ढेरिओ में राख दिआव त हीरा हीरे रहेला । अपने घबड़ाई मत । मलिकार खीस-पीत में सभ भुला गइलीं हाँ । उहाँ के जरूर पछताइब । (कुछ देख के अचरज आ खुसी के साथ) आहा, हऊ देखीं, राउर दुलरुआ छोटका देवर बबुआ जी अपने खोजत दउरल आवऽतानीं । भगवान के किरपा । .....अब हमार एहिजा रहल ठीक नइखे । हम रहता बदल के चल जाइब । हमार किरिआ जे अपने घरे ना लवटीं । अच्छा चाची, माफ करीं .....सलाम ।

अब कवनो सुबहाँ के बात नइखे, हम बँसवारी के आड़ ले के आगे बढ़ अइलीं । का जाने आज केकर मुँह देखके उठल रलीं हाँ । किसिम-किसिम के अमदी से भेंट हो रहल बा । दुइओ डेग रहता चलल मोसकिल बा । .....गाँछी त हेल गइलीं । अब गाँव के सँड़क पर आ गइल बानीं । .....हऊ के ह, जे पीठी पर बभनगेंठरी लदले, मिरजई पहिरले, मुरेठा बन्हले आ लिलार पर बड़का टीका लगवले हमरे तरफ बढ़ल आ रहल बा ? लाठी टेक के चलऽता त बुझाता जे एकर सउँसे देंहे भहरा के गिर जाई । मलिकार के भुसउल लेखा थुलुर-थुलुर तोन के अपना लतरी हाथ से सुहुरावत आ सनकाह लेखा बुदबुदात, ई के ह भाई ! गाँव के कुकुर एकरा के खदेरत इहाँ तक ले ले आइल बाड़े सँ ।
(दूर से कुकुरन के भोंकला के अवाज सुनाई परऽता ।)

ओहो, ई चुल्हाई पाँडे महपातर हवन । अब बुझा गइल जे जतरा खराब बा । का जाने केकर सराध करा के पाँड़े जी लथरिआत डगरल आवऽताड़े । .....पाव लागीं ले महराजजी, चीन्हऽ तानी हमरा के ? का कहऽतानीं ? बराह्मन के असिरबाद के लोग अतना ससता बूझि लेले बा । गिरह में से एको धेला दान-दछिना ना निकली, बाकी असिरबादे चाहीं !

आरे, हम अपने के रमचेलवा हईं महराजजी-घुरबहारन । अतना काहे खिसिआइल बानीं ? का कहऽतानीं ? अच्छा, तें हवस ? जीअऽ बबुआ, नाती-पोता से घर भरो । आरे का पूछले बाड़ऽ । तरेंगन बढ़ई के कारज रल हा, ओजिएँ से चलल आवऽतानी । अब त धरम-करम सभ बिला गइल, घनघोर कलजुग बा, बराभन के महातम अब के समझी ? बाकि ओकर दलिदरा सातो जनम में ना छूटी, तें देख लीहे ।

काहे ए देवता, अपने सरापत जातानी ? अपने के बात त बरह्मा के लकीर ह । ई केकर भाग खराब हो गइल बा ? का कहऽतानीं ? आरे तरेंगना के देख । बाप मर गलहिस । सभ किरिआ करम करा के ओकर परलोक बना देली हँ । बाकि

तरेंगना के हिमाकत त देख । एक त आधा पेट छिअवलस ह । पत्तल में सेर भर ले चूरा, आधा सेर ले मूरही आ बीस-पचीस गो पूड़ी । बस इहे पोरमाइल रहे । अब तेंही बताउ, एह जलपान से कहूँ पेट भरो । जब आउरी माँगे लगलीं हँ त उलटे बात सुनावे लागल हा । .....दान-दछिना जेही-सेही, आ बात करे के दू-दू मन के । अब परलय हो जाई– ई दुनिया रहे लायक नइखे ।

तरेंगन त साँचो बड़ा नजायज काम कइले बाड़े । अब त बड़ा आफत बा । गलती करसु तरेंगन आ ओकर फल भोगे सभ केहू ! रउवे बताईं, परलय हो जाई त एगो तरेंगने ना नु डूबी । हमनी के निस्तार अपनहीं के करे के होई, का कहऽतानीं ? हमार ई संकलप बा, जे हम सभका के डुबाइब, केहू खाती दाया ना करब । सभे छली-कपटी हो गइल बा, केहू सराहे लायक नइखे । घटी-बढ़ी माफ कइल जाय देवता । कम-से-कम अपना रमचेलवा पर त किरपा करीं । अपने कवना फिकिर में परल बानीं ? एगो तरेंगने के बाप के मुवला से का होई ? रोज-रोज लोग के मुँवही के बा । अपने के दान-दछिना बरोबर फुलाइल रही । का कहऽतानीं ? इहे रहित त अपना राम के दुखे कवना बात के रल हा । अब त सभ कुछ बदल गइल । पहिले लेखा लोग मुअतो कहाँ बा ? पहिले के लोग धरमातमा रहे– एह नरक-लोक में जादे दिन बिलमते ना रहे । हर साल हएजा, फ्लेग आवत रहे आ अइसन केतना धरमी लोगन के सीधे सरग पहुँचा देत रहे । अब त का पूछले बाड़ऽ ! हई डकदरवा तबाह क देले बाड़े सँ । केहू के हाली से मुवहीं नइखन स देत । रोजगार पर पाला पर गइल बा । आपन दुख केकरा से कहीं ।

सभ कलजुग के करतूत बा ए महराजजी ! ना त अपने जइसन धरमातमा अदिमी के रोजगार कहूँ पीटाए वाला ह ।

(फेर दू-चार गो कुकुरन के भोंकल निगिचे में सुनाई परऽता ।)

हई देखीं, तनीं बचाईं अपना के, कुकुरा कटाह बुझा ताड़े सँ । का कहऽतानीं ? मार ससुरन के ! ए लोग के अदिमी नइखे चीन्हात, हम जानुक जनावर हईं । फेरु, चुप ।.....

पाँड़ेजी त लाठी ले के ढहत-ढिमिलात कुतवन के लखेदत ओने ले गइले । हमार जान बाँचल । चल हे मन, एह सनीचरा के मुँह से बाँचि के आगे बढ़ । .....अब मलिकार के दुआर निगिचा गइल । सामने बड़का दलान लउकता । मलिकार अपना ओसरा में चउकी पर बइठल बाड़े । हाथ में गुड़गुड़ा बाटे । खीझिआइल बुझा ताड़े । मलिकिनी कुछ कहे अइली ह त उनका के डाँटि के अपना लगे से भगा देले ह । अइसन हालत में मलिकार लगे जाहूँ में डर लागऽता । बाकि उपाय का बा ! इहाँ के मरनी-जिअनी में हमरे ना, हमरा बापो-दादा के साथ देले

बानीं, पोसले, पलले बानीं । अब आपन दुख-तकलीफ इहाँ से ना बतिआइब त केकरा से कहब ? आछा, अब डेरइला से काम ना फरिआई । चलीं, उहाँ के मन टोई.....सलाम मालिक ! हम हईं घुरबहारन । का कहतानीं ? कड़के के का बात बा ? तुहूँ हमार कपार खाए आ गइलऽ । कहऽ, कहवाँ चललऽ हा ?

मालिक.....अपने किहाँ ना आइब त केकरा पास जाइब ? अपने हमार माई-बाप हईं । आजु दू दिन से घर में खरची नइखे, अबरखन का ओजहे कतहूँ मजुरिओ नइखे मिलत । अपना पेट के ओतना फिकिर नइखे, बाकि रुपिआ मउँसी के दुख सहात नइखे सरकार ! अब ऊ मूवे का किनारा आइल बिआ, हम ओकरा के कुछऊ सुख ना दे सकलीं हजूर ! का कहऽतानीं ?

'त तूँ चाहत का बाड़ऽ' ।

कुछउ ना सरकार । इहे आठो-दस गो रोपेआ मिल जाइत त.....। का कहतानीं ? हमरा सामने अइलऽहा ढोंग पसारे । तोहार सभ चाल बूझऽतानीं । जनलऽ हे जे मलिकार आपन रोपआ मँगिहें, एही से ओकरा पहिलहीं अइलऽ जाल पसारे । हमरा पाले एको अधेली नइखे । अबहीं तोहरा जनाना के बेमारी में दूध के धोवल दू सई रोपेआ खरच कइले बानीं, तोहनी के खरची चलावे में डेढ़ सई देले बानीं से अलगे बा । साढे तीन सइ त ई मूरह भइल । एकर सूद दू सइ भइल बा से अलग । साढ़े पाँच सइ रोपेआ पहिले ले आवऽ, फेर कवनो बात करऽ ।

हम एतना अबहीं कहाँ से देब मलिकारऽ ? मर जाइब । किरपा करीं अपने से लुकाई के हम काहाँ रहब । जिनिगी रही त कमा के चुका देब । का कहऽतानीं ? 'फजूल बात मत बोलऽ, ना त लतिआवल जइबऽ । जादे अधिकई ना करे के । साढ़े पाँच सइ ना त पहिले दू सइ सूद तोहरा काल्ह साँझ पहर ले हमरा घरे चहुँपा जाए के होई । ना त तोहार मड़ई पलानी उजरवा देब, तोहार चल्हौंकी कवनो काम ना करी ।'

गोड़ परऽतानीं मालिक, हम अपने से झूठ नइखीं बोलत । अपने तारीं चाहे बुड़ाई-अपनहीं के सरन में बानीं । का कहऽतानीं 'ए कवनो बाड़ऽ सँ रे ? हेकरा के कनइठी दे के दुआर पर से भगाव सँ त रे ! .....कवन ? झगरुआ ! चल त, घेंटिआव एकरा के.....।'

(घिघिआइल अवाज में) हम, हम चलि जात बानीं, मलिकार.....दोहाई हजूर के.....अब, अब मरिओ जाइब त ना .....आइब .....ना आइब माई-बाप..... छोड़वा दीं हमरा के.....

हे राम ! झगरुआ त हमार गरदन मरोर के जान लेवे पर तइआर रहल । हमरा के घेंटुआ के दुआर पर से खेदि देलस । मलिकार अपना दुआरी पर बइठल

हमरा ओरि देखि-देखि के अबहिओं हमरा सात पुहुत के तार रहल बाड़े । मलिकार के ई कवनो नया बात नइखे । केतना बेर घेंटिअवले बाड़न, जे ना कहे के, से कहले बाड़न । मगर हमनो करीं त का करीं ? एको धुर आपन खेत नइखे । बापे-दादा के टाइम से मलिकार के जमीन में झोंपड़ी गिरा के रहतानीं सँ । सरन कहाँ बा ? गारी बात अदिमी ना सहो त का करो ? अब हम मउँसी का सामने खाली हाथ लेके कइसे जाईं ? का करीं ? .....(करुन अवाज से) हाय रे नन्हका के माई ! तेहूँ गइले नन्हको के लेले गइले । तें हमार जनाना, मतारी, बहिन सभ कुछ त तेहीं रहिस । कवनो दुख तकलीफ में हम परीं त ते हँस के, मुसुका के, बात बना के हमरा दरद के बुझा देत रहिस । तोरा बेमारी में दू सइ रोपेआ खरच कइलीं, कवनो फैदा ना भइल आखिर हमरा के अकसरुआ छोड़ि के तें चलि गइलिस । घुरबहारन के लोर अब के पोंछी, के इनकर दुख पतिआई ? हाय रे करम ! कहिआ से भाग लवटी ? ई करजा के बोझ, गारी बात, बेइजती कहिआ ले सहाई, हे राम !.....

(तेज करुन संगीत में घुरबहारन के अवाज डूबि जाता । संगीत धीरे-धीरे मधिमो आ दूर भइल जाता, आ कुछ देर में अलोपित हो जाता ।)

डॉ. रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक'

निर्भीक जी के जनम 21 मई, 1932ई. के भोजपुर जिला के 'निमेज' गाँव में भइल रहे । अपने के बाबूजी श्री ब्रह्मदेव नाथ ओझा भोजपुरी के कवि रहीं । साहित्य के चसका निर्भीक जी के बचपने से बाबूए जी का चलते लागल । सन् 1951 में हाईस्कूल के परीक्षा पास कइला के बाद 1957ई. से फेर शुरू भइल पढ़ाई में निर्भीक जी स्वाध्याय के बल पर एम. ए. आ 'बिहार की भोजपुरी लोक कथाओं का सांस्कृतिक अध्ययन' विषय पर राँची विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. के उपाधि लेनीं ।

1948ई. में इहाँ के पहिल भोजपुरी किताब छपल, एकरा बाद त भोजपुरी के लगभग हर विधा में किताब लिखनीं । एह किताबन में नाटकन के संख्या जादे बा । जइसे– 'बुरबक बनलीं', 'तमाचा', 'रंगमंच', 'परिछाहीं' वगैरह ।

सन् 1953ई. तक थल-सेना में काम कइला के बाद इहाँ के जमशेदपुर के टेल्को कारखाना में सुरक्षा विभाग में पदाधिकारी रहलीं । 1960 से 'जमशेदपुर भोजपुरी परिषद्' के प्रधान सचिव रहलो इहाँ के भोजपुरी-सेवा के सबूत बा । फिलहाल सेवा-निवृत्त होके इहाँ के अपना गाँवे 'निमेज' रह रहल बानीं । 'तमाचा' निर्भीक जी के बाल एकांकी संग्रह बा जवना से इहाँ 'बालक अब्दुल कादिर' बाल एकांकी का रूप में देहल जा रहल बा ।

बालक अब्दुल कादिर

पात्र-परिचय

बालक अब्दुल कादिर : ईरान देश के जीलान गाँव के एगो बालक । पढ़े के सवख बचपने से ।

अम्मा : अब्दुल कादिर के विधवा महतारी ।

जुमन : व्यापारी दल के नेता । कुछ डाकू आ ओकर सरदार ।

झलक-1

[अब्दुल कादिर के घर]

अब्दुल कादिर : (तुनुकत) अम्मा !

अम्मा : का बेटा ?

अब्दुल कादिर : हम पढ़े बगदाद जाइबि ।

अम्मा : बगदाद पढ़े कइसे जइब ? तहरा किस्मत में पढ़े के रहीत त तोहरा जनमते तहरा अब्बा जान के खुदा अपना भीरी बोला लेते ?

अब्दुल कादिर : (तुनुकत) अम्मा, हम जाइबि । हमरा के रहीम भा जुमन चाचा के संगे भेज दीं । उ लोग ओहिजा व्यापार करे जाला ।

अम्मा : बगदाद एहिजा से पचास कोस दूर बा बेटा तू थाकि जइब । तहरा से ओतना दूर चलले ना जाई । फेरू ओहिजा तोहार निगरानी के करी ?

अब्दुल कादिर : हम थाकबि ना अम्मा । उ लोग हमरा के ओहिजा रहे के इन्तजाम क दी । हम बतिअवले बानी । हम खूब पढ़ि के नेक इन्सान बनबि । हमरा के जाये दीं अम्मा ।

अम्मा : तब जा के जुमन के बोला ले आव । हमहूँ पूछि लीं ।

अब्दुल कादिर : (खुश होके) अच्छा अम्मा !

(जात बाड़े । कुछ देर के बाद जुमन के संगे कादिर के प्रवेश)

जुमन : सलाम भउजी ।

अम्मा : खुश रह जुमन । तू कब बगदाद जा रहल बाड़ ?

जुमन : इहे दू चार दिन में ।

अम्मा : कादिर ओहिजा पढ़े खातिर जाइल चाहत बा ।

जुमन : हँ भउजी, ई हमरो से कहत रहल हा ।

अम्मा : भला ओहिजा इ अकेले कइसे पढ़ी ?

जुमन : ओहिजा बहुत मदरसा बाड़े स भउजी । हमरा चिन्हापरिचो के व्यापारी भी ओहिजा बाड़े स। कवनो के दोकान पर राखि देबि । ओह से ई अपना पढ़ाई के खर्च-बर्च चलाई । कवनो मदरसा में हम एकर नाँवो लिखवा देबि ।

अम्मा : तब इ तहरे ऊपर जाई । एकर सभ इन्तजाम क के लौवटीह ।

जुमन : तू हमरा प भरोसा रख भउजी ! कवनो हरज ना होई । हमनी का दस-बारह व्यापारी एके संगे रवाना होखबि जा ।

अम्मा : तब ठीक बा साथे लीआ जा ।

अब्दुल कादिर : चाचा फेरु हम तेयारी करत बानी ।

जुमन : ठीक बा बेटा ।

(जुमन सलाम करके चल जात बाड़े ।)

अम्मा : (कादिर के फतुही में चालीस गो असरफी सियत) बेटा तोहार बाप अतने धन छोड़ि के मरल बाड़े । एकरा के होशियारी से काम में ले अइह । सम्हरि के रखिह । हमार एगो बात कबो मत भूलिह । खुदा के मेहरबानी प विश्वास रखिह ।

अब्दुल कादिर : ठीक बा अम्मा ओइसहीं करबि ।

झलक-2

[रास्ता में बनजारा-दल जंगल पहाड़ से गुजर रहल बा । डाकू-दल अधिक तदाद में उन्हनी प धावा बोलिके सभ समान लूटि लेत बा । मारो-पीट होत बा ।]

एगो डाकू : सरदार ! (कादिर के तरफ अंगूरी देखावत) इ लइका त खालि हाथ बा । बुझात बा कि गरीब होखे । एकर कपड़ा लता भी फाटल पुरान बा ।

डाकू सरदार : (कादिर से) क्यों बे, तोरा पास कुछ नइखे ?

अब्दुल कादिर : (बे हिचक) बा काहे ना ? हमरा पासे त चालीस गो असरफी बा ।

डाकू सरदार : (खिसिया के) मारबि एक तबड़ाक कि उलटि जइबे । हमरा से ठाठा करत बाड़े ? जानत बाड़े तें केकरा सामने खाड़ बाड़े ?

अब्दुल कादिर : ना सरदार ! हम ठाठा नइखीं करत । हई देखी हमरा भीरी चालीस गो असरफी बा । (फतुही उतार के देखावत) ना पतिआइबि त देखि लीं

डाकू सरदार : (अचरज से) छोकड़ा इ तें जानत बाड़े कि हमनी का तोर असरफी छीन लेबि जा, त तें एकरा के काहे के देखवले हा ?

अब्दुल कादिर : सरदार ! हमार अम्मा हमारा के कबो झूठ ना बोले के सबक सिखवले बिया । फेर एह असरफी बचावे खातिर हम झूठ कइसे बोलीं । जदि तोहनी लोग हमार असरफी लेइयो लेब त खुदा हमरा प दया करिहें । हमरा एकरो से अधिक असरफी मिलि जाई । उ हमार कवनो काम रूके ना दीहें । एह से तू एकरा के ले जा ।

डाकू सरदार : वाह रे खुदा के बन्दे ! तोरा बात से त हमरा आँखि के पटर खुलि गइल । तें आपन असरफी त अपना भीरी रखबे करू आ हई लूट के सभ असबाब आपन-आपन ले ल लोग । हमनी का एकरा के खुशी से लौटावत बानी जा छोकड़ा आज से हमनी का लूट ना करबि जा । खुदा के दया प विश्वास करबि जा (दोसरा डाकून से) तोहनी लोग सभ समान एह व्यापारीन के वापस कर द जा ।

सभ डाकू : जइसन हुकुम सरदार ।
(समान वापस दे देत बाड़े स)

जगन्नाथ

जगन्नाथ जी के जनम बक्सर जिलान्तर्गत ईटाढ़ी प्रखंड के कुकुढ़ा गाँव में 19 जनवरी 1934 ई. के भइल ।

दूरसंचार में सहायक महाप्रबन्धक के सरकारी नोकरी से अवकाश प्राप्त क के अपने के स्वतंत्र लेखन आ एगो भोजपुरी कविता केन्द्रित तिनमाही पत्रिका 'कविता' के सम्पादन-प्रकाशन में लागल बानी ।

जगन्नाथ जी के रुचि गीत, गजल, कहानी, एकांकी आ निबंध-लेखन आदि कई विधन में रहल, बाकिर उहाँ के छन्द-विधान में विशेषज्ञता आ गीत-गजल सृजन में निपुणता हासिल बा ।

जगन्नाथ जी के प्रकाशित कृति बा–
'पाँख सतरंगी' (गीत-संग्रह : 1966), 'लर मोतिन के' (गजल-संग्रह : 1977), 'गजल के शिल्प विधान' (छंदशास्त्र : 1997), 'भोजपुरी गजल के विकास-यात्रा' (साहित्येतिहास : 1997), 'हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी के समरूप छंद' (तुलनात्मक अध्ययन : 1999) आदि । एगो कहानी-संग्रह आ एकांकी-संग्रह भी प्रकाशन के क्रम में बा ।

एकरा अलावे 'भोजपुरी के प्रतिनिधि गजल' (1978) आ 'समय के राग' (2003ई.) इहाँ के सम्पादन-कला के देन बा ।
जगन्नाथ जी के वर्तमान पता बा–

प्रथम मंजिल, ए/21
साधनापुरी, रोड नं. 6डी,
गर्दनीबाग, पटना-800002

लिखंत

[लाटरीवाला गाड़ी खड़ा क के लाटरी का टिकटन के परचार कर रहल बा । गाड़ी का चारो ओर लोग चूँटा-माटा बस लूझल बा । रामदहिन आ लखन लोगन का मजमा में एक ओर ठाढ़ बा लोग ।]

लाटरी वाला : भाई सभे, बहिन सभे, सुनीं सभे खुसखबरी एगो गौर से । आ गइलि लखपति बनावेवाली परचार गाड़ी सबौर के । आईं, टिकट लीं लाटरी के । केरल के लीं, यू. पी. के लीं, पंजाब के लीं, सिक्किम भा नागालैंड– जवना राज्य के मन होखे, लीं । यू. पी. के त फाइनल निकासी काल्हुए बा । बस पाँचे गो टिकट बाँचल बा, भाई सभे । आईं, जल्दी करीं । मोका चुकला पर जिनगी भर अफसोसे के परी ।

रामदहिन : का हो लखन, का बिचार बा ? लिआई लाटरी के टिकट ?

लखन : तोहार का बिचार बा ?

रामदहिन : आरे, हमरा त लेबहीं के बा हो । तूँ आपन त कह ।

लखन : बाकिर, ए मरदे, ई त जुए नू खेलल भइल हो । मिलल त मिलल, नाहीं त एगो रुपया सोगहग गइल ।

रामदहिन : ओहो ! तोहरा कपारे त हरमेसा दलिद्दरे चढ़ल रहेला । भिखार हो जइब का एगो रुपया का गइला से ?

लाटरी वाला : मीन-मेख मत निकालीं, भाई सभे । शुभ काम में ढेर सोचे-बिचारे के ना । के जानता, काल्ह के लखपति होखे वाला बा ? बाकिर, केहू होखो, होई त ऊहे, जे लाटरी के टिकट ली भा लेले बा ।

रामदहिन : ए लखन, हम त जातानी हो । टिकट कहीं बेंचा गइल, त ममिले गड़बड़ा जाई ।

लखन : चल, हमहूँ पाछा ले आवते बानीं ।

(दूनों जना लाटरीवाला के पँजरा जाताड़न आ टिकट लेताड़न)।

रामदहिन : ए लखन, कुल्हि काम त सँपराइये लिहलीं जा हो । कर-कचहरी

के कार-टहल फरिआये गइल । सउदा-सुलुफ होइये गइल । अब का कइल जाई ?

लखन : कइल का जाई । चल कतो बइठ के तनी सुस्ताईं जा । दिनभर त मकवड़ा मारत-मारत बीतल । गोड़ निठाहे भर गइल बा । आ जो सुस्ताये के मन ना होखे, त चल, एही लगवहिएँ गाँवे लवट चलीं जा ।

रामदहिन : मरदे ले के, गाँवे त चलहीं के बा । कवनो छवनी थोरे इहाँ छावे के बा, बाकिर अतना हड़बड़ा काहें गइलऽ ?

लखन : हड़बड़ाइल नइखीं हो । हड़बड़ाइब काहें ?

रामदहिन : त, चल ना एगो काम अउर क लीं जा । तनी हाथो देखवा लीहल जाउ । पंडित जी छाता ओढ़ले बइठल बाड़न ।

लखन : हाथ का देखइब हो । हाथ के चिचिरी ईहे नू कही कि जिनगी भर जांगर ठेठावे के करम में लिखाइल बा ।

रामदहिन : तू मरदवा लेके, हर बात के निकिआवहीं लागेलऽ । चल, उठब कि उठाईं तोहरा के ।

लखन : चल, जवन मन में आवे कर । एहीं से नू कहत रहली कि गाँवे लवट चलीं जा । जबले रहब, कुछ खुर-खार कहते रहब ।

(दूनों जना दू-चार डेग चल के जोतिसी जी के पास पहुँचता । जोतिसी जी रानू के कवनो उपन्यास पढ़े में लवलीन बाड़न । धूप से बचे खातिर एगो डंटा गाड़ के ऊ ओह में छाता बान्ह देले बाड़न । एकरंगा का पट्टी से ऊ चउकोर चहरदेवारी बनवले बाड़न, जेकरा भीतर जोतिस के खल-खल के औजार जइसे छोट-छोट किताब, छपल सगुन कार्ड आ हस्तरेखा के फोटो आदि सरिहाइ के राखल गइल बा । चहरदेवारी का भीतर एगो पिंजरा बा, जवना में तोताराम बाड़न ।)

रामदहिन : पाव लागीं, पंडित जी ।

लखन : हमहूँ गोड़ लागतानी, बाबा ।

पंडित जी : (अकचकाइल) खुस रहीं जजमान । जुग-जुग जीहीं सभे । आरे, अस्थिराह बइठीं सभे । कहाँ घर ह अपने सभे के ?

रामदहिन : घर त पंडित जी, इहाँ से दू कोस के रास्ता बा ।

पंडित जी : कवन गाँव जी ?

रामदहिन : बिनिकपुर, ए बाबा ।

पंडित जी : आरे लीं, तब त रउवा सभे हितइये के भइलीं जी । शंभू मिसिर का लइका के सार का बेटी से हमरा छोट भाई के सादी भइल बा ।

रामदहिन : (हँसत) अच्छा तब त हमनी का नीमने जगे पहुँचल बानी जा । रउवा त घरे के अदिमी निकललीं, बाबा ।

पंडित जी : सोरह आना सही, जजमान । कहीं सभे, अपने सभे के हाथ देखीं कि माथ देखीं कि सुग्गा से सगुन निकलवाईं ?

रामदहिन : (चिहाइल) रउवा हाथ आ माथ दूनो देखीला ?

पंडित जी : जजमान, एही काम में उमिर सिरा रहल बा ।

लखन : आरे, बाबा जोतिस के कतना किताब घोंखले होइहन, ठेकान बा ? देखल ह ना, हमनी का अइलीं हँ जा, त कतना मोट किताब पढ़े में लवलीन रहलन ह ।

रामदहिन : हँ हो, ठीके कहताड़ । अच्छा ए पंडित जी, हितई-नतई अपना जगे बा । कइसे-कइसे रेट रखले बानी ।

पंडित जी : आरे, जवन बुझाई, तवन दे देब सभे, जजमान । रेट कवन महँगा बा । हाथ के एक रुपया, माथ के दू रुपया, आ सुग्गा से सगुन निकलववला पर दूनो के बीच के डेढ़ रुपया, बाकिर ई खाली भविष्य के रेट ह । भूत, वर्त्तमान आ भविष्य तीनो के समिलात देखवला पर रेट तिगुना हो जाई ।

रामदहिन : वर्त्तमान त सोझे बा, पंडित जी आ भूत-दूत पर पइसा खरच कइल गोंइठा में घीवे सुखावल बा । अपने का खाली भविष्य के उचारल जाउ ।

पंडित जी : अच्छा, बाबू साहेब, जवन राउर मरजी । पूछ लीहल हमार धरम ह । (पंडित जी रामदहिन के दहिना हाथ के तरहत्थी अपना हाथ में ले लेताड़न आ तरहत्थी के एने-ओने फइलाइ के गौर से निहार ताड़न ।)

पंडित जी : वाह! वाह!! ई त तरहत्थी के चिचिरी चिचिया-चिचिया के कह रहल बाड़ीसन कि जजमान का घरे लछिमी जी के अपार किरिपा होखे जा रहल बा । जसवाला हाथ बा राउर, जजमान । अरदुआइ त पूरे सइ बरिस के बा । जबले जीअब, चैन से जीअब, सान से जीअब ।

रामदहिन : (मने-मने खुस भइल) ए पंडित जी, ई त भइल हाथ के हाल तनी माथो के जाँचल जाई ?

पंडित जी : काहें ना जजमान । ई का कहलीं ? इहे कुल्हि खातिर नू हम आसन डिसा के बइठल बानी आ ऊहो रऊवा जस जोतिस के परेमी लोगन से भेंटे कहाँ होला ? रऊवे अस जजमान लोगन से त फुटपाथी

जोतिस अबले जी रहल बा । राउर बात एकदम वाजिब बा । हाथ का संगे-संगे माथो देखावल जरूरी होला । हाथ के चिचिरी जवना बात पर चुपा जालीसन, माथ के चिचिरी ओही पर चिकरे लागेलीसन । हँ, त तनी पँजरा आईं । माथ पर के पगरी हटा दीं । लिलार के लखार होखे दीं । (लिलार के एक-दू मिनट ठीक से निरेख के) जय जजमान के । माथो के चिचिरी ऊहे उचार रहल बाड़ी सन, जवन हाथ के चिचिरी । जजमान का अचके अनचितले अफरात धन भेंटाये के जोग लिखल बा ।

रामदहिन : ए बाबा, एगो बात कहीं ।

पंडित जी : एगो का सइगो कहीं, जजमान ।

रामदहिन : ए बाबा अब रउवा से का छिपाईं । अनासे मन में आइल ह, लाटरी के एगो टिकट कीन लिहलीं ह । तनी देखीं ना लिखतंग का कहता ।

पंडित जी : अच्छा त जजमान, हाथ-माथ के चिचिरी परगटे कह चुकल बाड़ीसन कि अकूत धन के आगम बा । आईं तनी तोता महाराज से कहल जाउ कि रउरा भविष्य के भेद खोलसु । (पंडित जी पिंजड़ा खोल के सुग्गा के निकालताड़न । सुग्गा एने-ओने डुगुरता आ चीं-चीं करता ।)

पंडित जी : महटिआईं मत, ए सुग्गा महाराज । जजमान राउर ठोर सोना से मढ़वइहन ।

(पंडित जी कार्ड के एगो पैकेट सुग्गा के सोझा करताड़न । सुग्गा एगो कार्ड निकालता । पंडित जी ओह कार्ड के हाथ में लेके पढ़ताड़न ।)

पंडित जी : जजमान काम सिद्ध होई, कवनो अनेसा मत जानब ।

रामदहिन : ए लखन, हमार त फरिया गइल हो । अब तूहूँ देखवा ल ।

लखन : हँ ए बाबा, इची हमरो देख लीं ।

पंडित जी : का देखीं जजमान । हाथ कि माथ ।

लखन : जवन रामदहिन के देखलीं ह, तवन हमरो देखीं ।

पंडित जी : बूझ गइलीं, जजमान । रउओ जोतिस के अगाध परेमी बानीं । एकदम निफिकिर रहीं । खूब सज के राउरो हाथ-माथ देखब ।

(पंडित जी लखन के हाथ आ माथ देखताड़न)

पंडित जी : वाह! आज त एक से एक हाथ-माथ से भेंट हो रहल बा । लखन जजमान, राउर त जबाबे नइखे । ठीके कहल गइल बा– चाकर आ ऊँच लिलारवाला बड़ भागमान होला । जजमान का मिथार अस लिलार के चिचिरिन के इहे बाटे उचार कि जजमान का घरे बरिसी

धन-दउलत अपार । सब गरह कट चुकल बा । दुंख के दिन बिला चुकल बा । चानी काटे के दिन आ रहल बा । चानी कटले ना कटाई, जजमान । खरहरा से रुपया बटोरब अपने का ।

लखन : (खूब खुस भइल) ए बाबा, हमहूँ लाटरी के दूगो टिकट लेले बानीं । तनी एहनिओ के देखीं ना ।

पंडित जी : आरे, लखन जजमान घबड़ा काहें गइलीं । सुग्गा जी रउरा सेवा खातिर हाजिर बाड़न । हँ त ए सुग्गा जी, तनी लखन जी के लिखंत बताईं । (सुग्गा एगो कार्ड निकालता । पंडित जी कार्ड के पढ़े लागताड़न ।)

लखन : (अधीर भइल) ए बाबा, चुपा काहें गइलीं । हाली दे कहीं ना, का लिखल बा ।

पंडित जी : जजमान, आज ले ई पत्री केहू के भाग के ना निकलल रहल ह । साँच पूछीं त, हम चिहा गइल बानीं ।

रामदहिन : का हो लखन, तोहरा मन में अइसन पाप कइसे समा गइल ह हो ?

लखन : कइसन पाप ए दादा ? ई का कहताड़ ?

रामदहिन : बन मत लखन, ना त ठीक ना होई ।

लखन : सनक गइल का मरदे तू । काहें खिसिया के बनूक भइल बाड़ ?

रामदहिन : अच्छा त, तू हमरा के सनकी बूझे लगल । जिनिगी भर हमरे राइ-सलाह से चलल आ हमरे के सनकी समुझ लीहल । आरे, गुरु हईं लखन तोहार । जानेल कि ना– गुरु से कपट साहु से चोरी, कि होई निरधन कि होई कोढ़ी ।

लखन : त का कपट कइले बानीं, साफ-साफ काहें नइख कहत । बात के घुरिचिअवला से कवनो फायदा बा ?

रामदहिन : साफ-साफ कहतानी, तोहार नियत खाम हो गइल बा । तू इहे नू चाहताड़ कि हम गुरु गुरे रह जाईं आ तू चेला चीनी हो जा । हमरा लाटरी के एगो टिकट लेत देखल ह त तू दूगो ले लेल ह ।

लखन : त एमे कपट का भइल हो, राम दहिन ।

रामदहिन : देख बुरबक मत बनाव । हमरे दीहल अकिल से हमरा के चित करे के जनि सोच । हम खूब बूझतानी, तोहरा मन में का बा । तू इहे नू चाहताड़ कि हमरा से दोगुना धन तोहरा मिलो ! बाकिर ए लखन, एगो बात बूझ ल । कतनो एँड़ी उठइब, रहब हेंठे हमरा से ।

लखन : ए भाई, ई त तोहार नया रूप आज देख रहल बानी । कबो जरल बानी तोहरा के देख के, जे अइसन अछरंग लगावताड़ ? आरे, हम

त ई सोचलीं ह कि जुआ खेले बइठिये गइलीं, त जइसे एगो रुपया जाई, ओइसे दू गो जाउ । एगो नन्हका का माइयो का नाँवे ले लिहलीं ह ।

रामदिहन : बात मत गढ़ । जा बटोर खरहरा से रुपया, बाकिर तनी ध्यान से सुन ल– ई रुपया तोहरा रसे ना पाई । आ तू का बूझत बाड़ हमरा के । काल्हे तोहरा पर चार किता मोकदमा ना ठोकलीं, त हमार नाँव रामदहिन ना । बेसी ना, एकाधे महीना में टेकुआ अस सोझ हो जइब ।

पंडित जी : आरे जजमान, ई झूठो के हउँजार का नधलीं सभे । सभ केहू आपन-आपन करम लेके आइल बा । हमार दान-दछिना दीहीं सभे, खुसी-खुसी घरे जाईं सभे ।

रामदहिन : ए पंडित जी, दान-दछिना त मिलबे करी रउवा के, बाकिर अबहीं त हमहूँ जाके लाटरी के एगो टिकट ले लीं आ सुग्गा से जाँच करा लीं तब ।

पंडित जी : दान-दछिना दे दीं जजमान आ फेरु टिकट लेके आईं । सेतिहे देख देब ।

रामदहिन : ए बाबा, रउवा त सभकर भाग देखतानी । हमार कुल्हि चिचिरी रउवा पढ़ गइली, तबो ना रउवा बुझाइल कि हम बिसवासी आदमी बानी कि ना । दान-दछिना रउरा करम के होई त जाई कहवाँ ? जबले हम टिकट लेके आवतानी, तबले रउवा जोतिस से हिसाब लगाईं कि दान-दछिना रउरा भाग के बा कि ना ।

पंडित जी : (लखन का ओर मुड़ी क के) ए लखन जजमान, राउर त सभ काम फिटे बा । रउवा त कम से कम दछिना दे दीं ।

लखन : ए बाबा, हमरे के नेवर बूझतानीं ? कवना चीज में ऊ हमरा से सेसर बाड़न ? ऊ डाढ़-डाढ़, त हम पात-पात । ऊ दू गो टिकट लीहन, त हम चार गो लेब । आ हाथ त पहिले ऊहे देखवले बाड़न । एह से दछिना पहिले उनके देबे के चाहीं ।

(लखनो उठ के चल दे ताड़न । पंडित जी कपारे हाथ ध ले ताड़न ।)

(परदा गिरता ।)

श्री सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश'

स्व. सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश' के जनम छपरा शहर के 'नबीगंज' महल्ला में सन् 1928 के बइसाख महीना में भइल रहे । एम. ए., बी. एड. तक शिक्षा लेके सतीश जी स्कूल, कालेज आ फिल्मी संस्थन से आपन सम्बन्ध बनवले रहलीं आ फेरु बाद में, बिहार विश्वविद्यालय के एल. एस. कालेज, मुजफ्फरपुर के भोजपुरी विभाग के भोजपुरी पढ़ावे वाला पहिलका प्राध्यापक होखे के गउरव इनका मिलल । लरिकाई से रंगमंच से सम्बन्ध रहला के वजह से इनका हिरदया में बइठल नाटककार जाग उठल आउर हिन्दी आ भोजपुरी के अनेकानेक एकांकी, प्रहसन, सम्पूर्ण नाटकन के सिरजना इनका कलम से भइल । छपरा में भूतपूर्व राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद के बड़ भाई बाबू महेन्द्र प्रसाद के नाँव पर स्थापित रंगशाला 'महेन्द्र मंदिर' के मंच पर सतीश जी के हिन्दी आ भोजपुरी के कई गो नाटकन कं मंचन भइल बा । बनारस से श्री राधामोहन 'राधेश' जी के सम्पादन में निकले वाला 'भोजपुरी जनपद' नाँव के पत्रिका में इहाँ के लिखल कइगो भोजपुरी के एकांकी आ प्रहसन प्रकाशित भइल बा । बाबू रघुवंश नारायण सिंह के सम्पादन में निकले वाला 'भोजपुरी' नाँव के पत्रिका में सतीश जी के लिखल भोजपुरी संगीत नृत्य रूपक 'आवेवाला दिन' छपल बा । फेरु भोजपुरी साहित्य मंन्दिर, वाराणसी से सतीश जी के लिखल सँउसे भोजपुरी नाटक 'माटी के दिया घीव के बाती' के प्रकाशन भइल । एह किताब पर उनकरा शिववचन सिंह पुरस्कार मिलल बा । 'माटी के दिया घीव के बाती' के मंचन छपरा, कुल्हड़िया (भोजपुर), जमशेदपुर, सरायकेला वगैरह इलाकन में सफलतापूर्वक भइल बा । 'भारतीय जन नाट्य संघ', पटना के द्वारा इहाँ के लिखल कइगो बैले रूपकन के प्रशंसनीय प्रदर्शन भइल बा ।

एह संग्रह में सतीश जी के लिखल एकांकी 'सिहंनाद' दिहल जा रहल बा । 'सिंहनाद' में सन् 1857 के बीर बांकुड़ा बाबू कुँअर सिंह के आखिरी लड़ाई जे 'दुलउर' में भइल रहे, ओकरे तस्वीर खींचल गइल बा ।

सिंहनाद

पहला दृश्य

[जगदीशपुर के बड़का बंगला । बीर केसरी बाबू कुँअर सिंह अलग एगो ऊँच स्थान पर बइठल बानीं । ई छोटहन दरबार में हाली-मोहाली लोग उनका के घेर के बइठल बा ।]

कुँअर सिंह : काहो अमर सिंह, कमिश्नर के पास पटना केकरा के भेजले रहऽ.....?

अमर सिंह : कमिश्नर से भेंट करे हमनी के मुंशी गइल रहले– पूजन !

कुँअर सिंह : पूजन सिंह । कमिश्नर टेलर के का फरमान बा हो ?

पूजन : सरकार ! ऊ सभ बात हमरा से कहे के मत कहीं । ऊ सभ फरमान ना ह सरकार– ऊ अगिनबान ह, जे करेजा के झोंकार दिही ।

कुँअर सिंह : (रोस में) का कहत बाड़ऽ पूजन ?

पूजन : ठीक कहत बानीं सरकार ! जवना रोब से ऊ सेखी बघारत रहे, ऊ सभ सुन के करेजा मचल के रह गइल । अपने के हुकुम ना रहे, ना त काँचे चबा घलतीं ओकरा के ।

कुँअर सिंह : हूँ । त ऊ सेखी बघारत रहे । बनरघुड़की मारत रहे ।

पूजन : जी सरकार ! टेलर कहलन कि बाबू साहेब से कह दिहऽ कि कम्पनी बहादुर के खिलाफत करे वालन के साथ मत दिहें । ना त.....(चुप हो जाताड़न)

अमर : चुप काहे हो गइलऽ पूजन ! कहऽ– सभ बात साफ-साफ कहऽ । भइआ तनी आपन दोस्त के बात सुन लेतन । दोस्त टेलर साहब के बात । हूँ.....।

पूजन : का कहीं बबुआ अमर सिंह ! कहत रहे कि खिलाफत करे वाला केतना जमींदार लोगन-राजा लोगन के गरदन फाँसी के रस्सी में लटका दिहल गइल । कुँअर सिंह अगर अइसन करिहें त उनकरो आवाज गरदने में बंद कइ दिहल जाई ।

कुँअर सिंह : (खीस में जोर से) पू.....ज.....न ! तूँ ई सभ सुनके चुप रह

गइलऽ ? तोहरा त कमीना टेलर के खून चीभ जाये के चाहत रहे । ऊ हमरा के बूढ़ समझले बा । अस्सी बरिस के बूढ़ । हा-हा-हा ! बाकी ऊ नइखे समुझत कि बूढ़ राजपूत के तरुवार में केतना जोर बा, केतना ताकत बा ।

अमर : भइआ टेलर के ई मजाल ! हुकुम द । हुकुम द भइया ! हमार तरुवार बहुते पिआसल बा । हम त तोहार दोस्ती के बात सुनके चुप बानीं, ओकर पहिलका फोटो देखके मन मरले बानीं । ना त आज हमरा घोड़ा के टाप 'आरे' में सुनाइत ।

कुँअर : (गंभीर हो के) दगाबाज ! निमक हराम फिरंगी ! मधुरी बोली बोल के आपन दोस्ती के जाल हमरा पर फेंकत रहे, अमर सिंह ! अब दोस्ती के काँच सूता टूट गइल । टेलर के दगाबाजी के पोल खुल गइल, अमर सिंह !

ढोल के पोल मालूम हो गइल ।

(नेपथ्य में सोर सुनाई परत बा– 'सरकार रछेआ करीं । हमनी के मदद करीं, मालिक !')

कुँअर : हँए ! ई दुआर पर कइसन हल्ला बा ? अमर सिंह देखऽ त, बहरा के चिचिआत बा ।

(अमरसिंह के प्रस्थान)

कुँअर : पूजन ! अब अंग्रेजन के दिन अदिन नजर आवत बा । कम्पनी के नेंव के ईंटा खसके चाहत बा ।

(अमर सिंह के प्रवेश)

अमर : भइआ ! बहरा दानापुर के विद्रोही लोग खाड़ बा । बड़ा बेहाल बा लोग ।

कुँअर : दानापुर के लोग आइल बा, विद्रोही लोग ! .....बोलावऽ भीतरे बोलावऽ ओ सभे के ।

(पूजन के प्रस्थान)

(अमर सिंह बाहर आके विद्रोही लोग के बोलावत बाड़े । सभ आवत बा । एगो आदमी धड़ाम दे कुँअर सिंह के गोड़ पर गिर परत बा ।)

रामसनेही : अब त सरकार के गोड़ छान लेले बानीं । जब ले सरकार हमनी के बचन ना देब, हम अपने के गोड़ ना छोड़ब, ना छोड़ब ।

कुँअर : अरे ! ई का करत बाड़ऽ रामसनेही ! उठऽ आपन समाचार कहऽ ।

रामसनेही : (उठ के) सरकार से बस एगो बचन लेवे के बा । ना त हमनी के

रछेआ ना हो सकेला । गोरा पलटन हमनी के देंहिएँ ले नइखे कबारत, अब त बहिनो-बेटी के ईजत-लाज लूटे में दुसासन के नाक काट रहल बा ।

देवल : मालिक, हमनी के ऊपर अंगारा बरसावल जात बा । भरल-पूरल खेत खरिहान में लंकादहन हो रहल बा । सगरो गाँव-घर में सिआर फेंकरल सुनाई परत बा ।

अमर : हे भगवान ! अइसन अतिआचार ! अइसन लूट-मार ? अब ई ना देखल जाई ।

रामसनेही : ऐतने ले ना बबुआ ! जवार भर के नवछँटिअन के छाँट-छाँट के बन्दूक दाग दिहल जात बा । आज जे लरिका माई के गोद में बा, काल्ह ठीक नइखे कि कब ऊ संगीन के नोखी पर टंगा जाई । सरकार, अब त अपनहीं के आसरा बा ।

देवल : मालिक ! अब नइखे सहात । बलुक ई अच्छा होई कि रउरे आपन तरुवार से हमनी के गरदन काट घालीं । हमनी के चैन से जान निकल जाई । बाकी फिरंगिअन के हाथे मार खाइल ई हमनी के ना सहाई । अपने हमनी के उबार लिहीं मालिक ! उबार लिहीं ।

कुँअर : बस करऽ देवल ! रोअल बंद करऽ । रोवेला ऊ, जे कमजोर होला । हम तोहरा लोगिन के आँखि में आग देखे के चाहत बानी– आग ! अमर सिंह ! आजु ले हमरा आँखि पर पट्टी बन्हाइल रहे । अब ऊ पट्टी खुल गइल । दुसमन से दोस्ती कई के हम बड़ा गलती कइलीं । बड़ा गलती कइलीं ऐतना समय के नुकसान कइके । एसे का ! अब समय आ गइल बा । जगा द भोजपुर के । बिटोर द गोहार । कुँअर सिंह अब जाग उठल बा । अब तोकर तरुआर मेआन में ना सुतल रही । फिरंगिअन के गरदने ले नइखे काटे के– तोप के नालो ले काटे के बा । टेलर अइसन दगाबाजन के देखा द भोजपुरिआ पानी के– भोजपुर के जवानी के ।

(सभे कुँअर सिंह के जयकार मनावत बा आ परदा गिरत बा)

दूसरा दृश्य

[अँग्रेजी पलटन के एगो खेमा । डगलस बेचैन होके घूमत बा । नेपथ्य से बाबू कुँअर सिंह के वीर जवानन के सिंहनाद सुनाई परत बा । जवानन के बोली बा :-

'रुद्र देवता जै जै काली ।'
'हर हर बम बम ।'
'बीर कुँअर सिंह जिन्दाबाद ।'

ई सभ नारा के सुन के डगलस के लिलार पर चिन्ता के रेखा उभर आवत बा आउर ऊ तेजी के साथ टहले लागत बा ।]

डगलस : कुँअर सिंह एक पेटी लैन्ड लौर्ड होकर सरकार को गेराना माँगटा । अइसा कभी नहीं होने सकटा । हमरा टोप पल्टन शब को भूँज डेगा । कम्पनी बहादुर से टकराना और जीटना आसान नहीं हाय । (जोर जोर से चुरूट फूँके लागत बा) अरे कोई हाय ? सिपाये । सिपाये ।

सिपाही : (सैलूट करऽता) हाजिर बानीं सर !

डगलस : सर का बच्चा ! जाव, जल्दी मिलमैन साहब को खबर करो । क्या देखटा है ? डैम सुअर जल्दी जाव । क्विक् !
(सिपाही चल जाता ।)

डगलस : मिलमैन ने हमारी ताकत को एस्पोआइल कर दिया । कावर्ड ! डरपोक कहीं का ।

मिलमैन : (प्रवेश कके) हलो मिस्टर डगलस ! क्या मुझको बुलाया ?

डगलस : हलो । बट यू आर ए कावर्ड ! तुमसे तो अच्छा भोजपुर का जनाना लोग है, जो हम इंगलिस पीपुल से लड़ने को तैयार हाय ।

मिलमैन : एक्सक्यूज मी सर ! वह तो एक धोखा था, जो कुँअर सिंह ने हम लोग को दिया । जिससे हमें बुलोक कार्ट-आई मीन बैलगाड़ी से भागना पड़ा ।

डगलस : और इस तरह टुमने हमारा लोग का झंडा नीचा कर दिया । वो फुलिस आदमी ! हम टुमको नहीं देखना माँगटा । यू गेट आउट । (मिलमैन सर झुका के चल जाता ।)

आर्थर : (भीतर आके) गुड इभनिंग सर ! हीयर इज गुड न्यूज फार यू । बाड़ी अच्छा खबर लाया हूँ । हीयर मी । (आर्थर डगलस के कान में कुछ कहत बा)

डगलस : (ठहाका मार के, हँस के) सचमुच अच्छी खबर है आर्थर ! क्या कुँअर सिंह का मैनेजर हरेकिसन हम लोगों का जासूस बनेगा ? तब तो कुँअर सिंह को बरबाड हम कर डेगा– हमारा फउज उस बूढ़े को कुचल डेगा ।

आर्थर : आफ कोर्स । हरेकिसन हमारा मदद करेगा । बट थोड़ा ओ लालची हाय । ग्रीडी-आईमीन ग्रीडी पीपुल

डगलस : हा-हा-हा ! तो क्या हुआ जगदीशपुर उसे देबेगा । कुत्ते के सामने हड्डी फेंक देगा । अच्छा हम उससे मुलाकात करना चाहता ।

आथर : ही इज हीयर, हम बुलाता हाय । (नेपथ्य में झाँक के) बहादुर हरेकिसन सिंह इदर आओ, साहेब टुमे देखना माँगटा ।
(हरेकृष्ण सिंह प्रवेश करत बाड़न)

हरेकृष्ण सिंह : सलाम हजूर के ।

डगलस : वो ! तो टुम हरेकिसन सिंह हाय, कुँअर सिंह का मैनेजर ?

हरेकृष्ण सिंह : हँ सरकार, मनेजर ना, कुँअर सिंह के दुश्मन हई, दुश्मन । ऊ सरकार बहादुर से गद्दारी कइले बाड़न ।

डगलस : ठीक कहता है हरेकिसन ! वो गद्दार नहीं, गद्दार ऑफ-इन्डिया हाय ।

आर्थर : कुँअर सिंह समझटा हाय कि अँग्रेजों के फउज को कुचल डेगा । ऐसा अब कभी नहीं होगा । अब टो हमको हरेकिसन जैसा बदादुर जवान मिल गया हाय ।

हरेकृष्ण सिंह : हँ सरकार, कम्पनी बहादुर के जहाँ पसेना गिरी उहाँ हरेकिसुन के खून गिरी, बाकी.....

डगलस : घबराव नहीं, घबराव नहीं हरेकिसन ! टुमको जगदीशपुर मिल जायगा । कुँअर सिंह के लाश पर तुम्हारा किला खड़ा होगा ।

आर्थर : बिलकुल ठीक । तुम राजा बनेगा हरेकिसन ।

डगलस : मिस्टर आर्थर ! फौज को तैयार करो, कुँअर सिंह के साथ हम लोगों का आखिरी मुकाबला होगा । हम उसको जीते बिना आराम नहीं करेगा ।

आर्थर : आई ऐम रेडी सर, चलो हरेकिसन
(हरेकिसन आउर आर्थर के प्रस्थान)

डगलस : गाड सेभ दी किंग । कहो कुँअर सिंह ! अब टुम नहीं बचेगा । हमारा कम्पनी तुमको बरबाद करेगा । हमारे ताकत से मत टकराव । हमारा सूरज दुनिआ में कहीं नहीं डूबता । हम तुम्हें डुबा देगा । बरबाद करेगा । हा.....हा.....हा.....हा । (डगलस जोर-जोर से हँसत बा आ परदा गिरत बा)

तीसरा दृश्य

[एगो पड़ाव-जहवाँ बाबू कुँअर सिंह घवाहिल होके बइठल बाड़े । एगो बाँहि जे में गोरन के गोली लागल रहे, ऊ तरुवार से काटि के गंगा मइआ के दे दिआइल । ऊ घाव बाबू साहेब के मन आ सरीर में बड़ले बा । उठके टहरत बाड़े ।]

कुँअर : बाँह में गोली मारके, समझ लेलऽ कि कुँअर के खेत कइ दिहलीं । बाकि कुँअर अभी ले जिअते बा । कुँअर सिंह जिअते रहिहें जनम जनम ले जिअते रहिहें । जब ले गोरन के भोजपुर के धरती से खदेर ना दीहें-कुँअर सिंह चैन से ना सुतिहें । भोजपुरिआ जवान तेगा ना उठावे-बाकी जब एक बेरा तरुवार हाथ के मुठ्ठी में आ जाई– बिजुरी लेखा लपलपात रही– दुसमन के गरदन के छप-छप काटत रही । चुप ना बइठी । (चुप हो जात बाड़े आ फेरु अवाज बदल के बोलत बाड़े) ऐ गंगा माई ! आपन भोजपुर के रछेया खातिर तोहार जल लेके हम किरिआ खइले रहीं । एहि से नूँ गोरन के गोली से अपबितर भइल बाँह तोहरा के काटि के दे दिहलीं । बाकि आजुले हम ऊ किरिआ भुलाइल नइखीं । महतारी के किरिआ केहू भुलाला । कहिओ ना भुलाए । त हम चुपचाप इहवाँ काहे बइठल बानीं । जुझार सिंह ! अरे ए जुझार सिंह !

जूझार : (प्रवेश कइके) का हुकुम बा अपने के ?

कुँअर : हम दुलउर जाये के चाहत बानीं । तू जलदी से तइआरी करऽ..... । ना, जाने, उहवाँ का होत होई ।

जूझार : ई कइसे होई सरकार ! बबुआ अमर सिंह के किरिआ धरावल अपने असहीं भूला देहब ।

कुँअर : ओह ! हो । अमर सिंह त हमरा गोड़ में बेड़ी डाल देले बाड़न । लड़ाई के मैदान में छोट भाई लड़ी आ बड़ भाई इहवें लुकाइल रही ?

सैनिक : जय हो बाबू साहब के ! दुलउर में लड़ाई जोर पकड़ लिहले बा । हरेकिसन सिंह अँग्रेजन के ओर से बाड़े ।
(सैनिक समाचार दे के चल जात बा)

कुँअर : हरे किसुन ! निमकहराम ! जे पत्तल में खइलस ओही में छेद कर रहल बा । जुझार सिंह, ई लड़ाई में सभके सबक सिखावे के बा । डगलस, आर्थर, हरेकिसुन सभके । ई बिभीसन आ जयचन्द के औलाद के मूड़ी-काट के गेंदा जइसन लतिआवे के बा । अकेले अमर सिंह का करिहें ? ना-ना-ना हमरा जाये के चहबे करी । हम जइबे करब ।

दुलउर के लड़ाई हमार अखिरी लड़ाई ह । जीत, चाहे हार । जुझार सिंह, जलदी कर भाई, हाथी पर हउदा कसवा दऽ । ओपर तकिआ रखवा द । जा देर मत करऽ ।

(जुझार सिंह जात बाड़न)

कुँअर : आज भारत के कोना-कोना में जवालामुखी के लावा फूट परल बा । झांसी के महारानी, पेशवा नाना जइसन लोग जनमभूमि खातिर जान दे देवेला तइआर बा । मसाल जल रहल बा ओह मसाल में हजारन देस भाइअन के खून तेल लेखा जर रहल बा । ई कइसे होई कि ऊ मसाल भोजपुर में बुता जाई ! ऊ जरत रही– जुग-जुग ले जरत रही । कुँअर सिंह के देंह के गाढ़ खून से ऊ मसाल हरदम जरत रही । अमर सिंह.....अमर सिंह ! हम आवते बानीं-हम आवते बानीं भइओ ।

(प्रस्थान करेके तइआर बाड़े कि घायल अमर सिंह आउर सिपाहिअन के साथे आवत बाड़े)

अमर : (प्रवेश कइके) तेगा बहादुर कुँअर सिंह के जय ! भोजपुर के जय !! भारत माता के जय !!! भइआ-भइआ-तोहरा आसीरबाद से दुलउर के लड़ाई हमनीं जीत गइलीं । अब तोहरा कतहूँ जाये के जरूरत नइखे । कबहूँ ना ।

कुँअर : (खुसी में जोर से) अमर सिंह ! साबस बहादुर !! आज तें भोजपुरे के ना, समूचे देस के मुँह के लाली राख लिहले भइओ ! अब तनी हमरा करेजा से लाग जो ।

(अमर सिंह के अँकवारी में लेत बाड़न)

आज-आज हमार करेजा जुड़ा गइल । अइसन मालुम होत बा कि हम धरती पर ना सरग में बानीं । आ तू अमर सिंह एगो सरग के देवता लेखा लागत बाड़ऽ । आ, गेंदा सिंह कहवाँ बाड़े ? ओकर तरुवार के पानी त आउर जोर पकड़ले होई । का रे ! साँच बात बा नू ।

अमर : गेंदा सिंह गेंदा सिंह लड़ाई में वीर गति पवले भइआ ।

कुँअर : (फीका हँसी हँस के) गेंदा सिंह ! तू हमरा से पहिले बाजी मार लिहलऽ । हमनी के त साथे-साथे चले के किरिआ खइले रहलीं । कवनो बात ना..... कवनो बात ना ! एगो गेंदा सिंह ना, हजारों गेंदा सिंह के भोजपुर देवेला तइआर बा । अमर सिंह, चारो ओर खबर भेज द जीत के । खुसी में खाली जगदीशपुर में ना– सगरो दिवाली मनावल जाई । सरग में गइल हमार हजारन वीर बहादुरन के नाम पर गाँव-गाँव,

गली-गली में आज रोसनी होखे के चाहीं । आज के दीवाली इतिहास खातिर अजबे दिवाली होई । लोग आजु से दीआ में तेल जरावत रहे । अब एह दिवाली में बहादुर भाइअन के खून जरत रही । लाल-लाल लहू के लाली से भारत के आजादी के राह.....ओह राह पर आवेवाला जमाना के लाखन-करोड़न गेंदा सिंह, कुँअर सिंह, अमर सिंह चलत रहिहें । जब ले एह खून से सींचल झंडा एह धरती पर ना गाड़ दिहल जाई– अमर सिंह, हम आज बहुते खुस बानी । भोजपुर आपन पानी देखा दिहलस । आज हमनी आपन तीनों महतारी के लाज बचा लिहलीं । जय भोजपुर ! जय भारत !!

(अमर सिंह के साथ सभे नारा लगावत बा ।)

(परदा धीरे-धीरे गिरत बा ।)

शारदा त्रिपाठी

श्रीमती शारदा त्रिपाठी सुप्रसिद्ध भोजपुरी कवि स्व. मोती बी. ए. के सुपुत्री हई । बी. ए., साहित्यरत्न आ आयुर्वेदरत्न के उपाधि लेला के बाद समय पर इहाँ के विवाह देवरिया जिला के चकरवा निवासी पं. रमेश त्रिपाठी से हो गइल ।

श्रीमती शारदा त्रिपाठी अधिकतर एकांकी आ लघु नाटिका लिखले बाड़ी जवन पत्र-पत्रिका में प्रकाशित आ आकाशवाणी, गोरखपुर से प्रसारित होत रहल बा । एह में एकांकी 'सगुनी बाछा' आ 'मंगला हाथी' के विभिन्न जगहा सफलता पूर्वक मंचन विशेष महत्व के बात बा ।

इहाँ के प्रकाशित पुस्तक बा 'आस का दिया' (हिन्दी कविता संग्रह) आ 'सगुनी बाछा' (भोजपुरी एकांकी संग्रह) । 1993ई. में भोजपुरी संस्थान, इन्द्रपुरी, पटना-23 से प्रकाशित 'सगुनी बाछा' पुस्तक अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन से 'चित्रलेखा पुरस्कार' से पुरस्कृत हो चुकल बा ।

श्रीमती त्रिपाठी के वर्तमान पता बा- द्वारा, पं. रमेश त्रिपाठी
चकरवा, जिला देवरिया
(उत्तर प्रदेश)

मंगला हाथी

पहिलका दृश्य

राजपथ के चहल पहल

[दूगो अधबुढ़ मनई बिपरीत दिशा से आवत बाड़ें सँ दूनू ऊँच सुनेले सँ । एगो दूसरका से पूछता ।]

पहिलका : का हो राज दरबार से आवताड़ ?

दुसरका : आँय, तनी जोर से बोल । ऊँच सुनाला ।

पहिलका : का खोले के बा । भण्टा ह । तू काँहा जात बाड़ ? हथिसारे ।

दुसरका : आ नाहीं ! तनी हथिसारे जात बानी ।

पहिलका : हँ नू ! हम जनलीं हँ कि हथिसारे जात बाड़ !
(दू तीन जाने ओकनी के बात सुनिके हँसे लागता)

एगो : (हँसि के) का हो भाई ! ए बहिरन के बाति सूनल ह ?

दुसरका : तोहरा अधिका कान बा, तूँ सून ।

तिसरका : हँ माने, काँहे ना ! बहुत दिन पर लउकत बाड़ । कह केइसन बीतत बा ।

पहिलका : निमने बीतत बा । महराज हरिहर छत्तर के मेला से एगो मँगली हाथी मँगववलें हँ, जानत बाड़ कि ना !

दूसरका : हँ ए भाई, हमहूँ सुनलीं हँ । कइसन बा हथिआ ?

तिसरका : कइसन का बा, जाके देखि आव । हथिसरवे में त बा । सरकारी सड़क से लागल जवन बड़का-बड़का जँगलवा बांड़ें सँ ओही जू हथिआ लोहे के सीकरि में बान्हल रहेले । पहिले त ऊ बड़ा सुन्नर बा । ओकरे सूँढ़े पर जो हाथ फेरे त ऊ मूड़ी दुमावे लागी । धीरे-धीरे मस्ती में झूमे लागी । एइसन ताकति बा कि करेजा जुड़ा जाता ।

दोसरका : हँ नू, एइसन ! तब त ए हाथी के देखे के चाहीं ।

पहिलका : का देखे के बा ? आरे जबसे ई हाथी हथिसार में बन्हाइल तबसे जनिह जे राज में बड़ा रमन-चमन बा । का मरद, का मेहरारू, बूढ़-ठेल, बच्चा-सेआन, गोरू-बछरू, चिरई-चुरुंग सब अनन्द से बा । न रोग न बेआधि, न चोरी न चमारी ! बाहरे हाथी !

तिसरका : हमरे महराज के परताप, नाँव, जस बाढ़ि के पानी नीयर बढ़ता । दुसमन लुका अइल फिरताड़ें ।

दोसरका : तब त ए हाथी के पूजा करे के चाहीं ।

तिसरका : करे के चाहीं कि लोग करते बा पूजा ।

पहिलका : अच्छा, अब चले के चाहीं । राज दरबार के जूनि हो गइल बा ।

दुसरका दृश्य

राज दरबार

[संख, तुरुही, सिंगा आ तरह-तरह के बाजा बाजे लागल । महाराज के जय हो, महाराज के जय हो, जय-जयकार गूँजे लागल ।]

चोबदार : सभे लोग सावधान होके सुनि ल जा कि हमरे महाराज के सवारी आ रहल बा ! अब सब दरबारी लोग अपने-अपने आसन पर बइठि जाउ ! महाराज के हुकुम होत बा ।

महाराज : सूचना विभाग के मंत्री जी के बोलावल जाउ । शासकगण आ प्रजा आनन्द के धारा में बहे लागल । आपन-आपन कर्तव्य सभे भुला गइल । पड़ोसी राजा लोग ई हालत भाँपि के आपन एजेण्ट हमरे राज में भेजि के चोरी आ मार-काट के बाजार गरम क दिहलें । सब तरह के असामाजिक तत्व राज्य भरि में व्यापि गइल बाँड़े सँ । समूचे राज्य में भीतरे-भीतरे अराजकता फईलि गइल बा । राजपथ माने कि सरकारी सड़कि से सटि के जवन बड़े-बड़े जँगला बाड़े सँ ओहजा राति खां गोलहाँव होला असामाजिक तत्वन के ! अपराध के योजना बनेला ओहजा । लूट के माल खातिर आपुस में मार-काट होला । गाली-गलौज होला ! 'सुनते-सुनत मति काहें न फिरे केतनो हो मति धीर' हाथी समुझदार पशु न ह ! ओकर दिमाग बहुत तेज काम करेला । असामाजिक गिरोहन के ढंगढबार हथियो सीख गइल आ बउरा गइलि ! जवने कारन से नीमन हाथी बाउर हो गइल ओही कारन से बाउर हाथी नीमन हो जाई । निदान सही रही त कमवो सहिए होई ।

एगो सभासद : ई बाति त प्रधान मंत्री सोरहो आने साँच कहतानी ! जवने तरें हाथी बउराइलि ह ओही तरें हाथी ठीक होई, बाकी तरीका बदले के परी ।

प्रधानमंत्री : बेलकुल ठीक । तरीका जो ना बदली त हाथिया के नाहीं हमनियों का रसातल में चलि जाए के परी ! काहें कि हथिये नइखे बउराइल, पूरा राज्य ।

सूचना मंत्री : महाराज के जय । का हुकुम बा ?

महाराज : प्रजा के राजी-खुशी के हालि बतावल जाउ ।

सूचना मंत्री : महाराज, जबसे मंगली हाथी के पवरा अपने राज में आइल ह तबसे राज के बड़ा तरक्की भइल ह । सब पड़ोसी राजा लोग राउर अधीनता मानि लेले बा । सेना चुस्त बा । कहीं कवनो किसिम के सिकाइति नइखे । परजा बहुत सुखी बाड़ी । रउरे नाँव, जस आ परताप कें डंका चारों ओर बाजि रहल बा । ई कुल्हि, हमरे मंगली हाथी के चमत्कार ह ।

(अबहिन बेआन होते बा तवले सभा में 'जान बचाव, भाग, जान बचाव, भाग' जेइसन हो हल्ला आ भगदड़ मचि जाता ।)

नेपथ्य में सोर : भाग जा, भाग जा । आरे बाप-रे-बाप । आरे माई मुवलीं । आरे हमार लइकवा केने बा ए दादा ! हथिआ एनिए आवतिआ ! भगिहे, भगिहे, भगिहे । मंगली हाथी पगला गइल बा ! अब का होई हे राम ! ओन्ने मति जो रे ! केन्ने जाई ए दादा !

महाराज : ई केइसन हल्ला-गुल्ला हो रहल बा ? दूत के बोलवाव । सभे लोग पता लगावे !

दूत : (हड़बड़ा के आवता) महाराज, महाराज !

महाराज : जल्दी कहु नू रे कि एतना हल्ला काहें हो रहल बा ?

दूत : महाराज, मंगली हाथी बउरा गइल बा । ऊ जनपथ पर निकलि आइलि बा । कई जाना के धाही क देले बा । सभे घर-दुआरि बन्न क के लुका गइल बा । चारों ओर चिघ्घाड़ मचल बा कि राजा के हाथी पगला गइलि बा, राजा के हाथी पगला गइलि बा ।

महाराज : (डाँटि के) अब चुप्पो रहबे ! तब्बे से बकर-बकर बकधुन लगवले बाड़े । रक्षा मंत्री जी, का ताकत बानी ? जल्दी से हाथी के बस में करीं सभें कि हाथी खून-खराबा ना क पावे ! ए घटना के बारे में काल्हि राज दरबार में विचार होई । पूरा मंत्रिमंडल के रहल जरूरी बा ।

तिसरका दृश्य

(राज दरबार)

चोबदार : सावधान ! महाराज के सवारी राज सभा में पधार रहलि बा । (महाराज के जय हो, महाराज के जय हो के साथे बाजा बाजता बा । महाराज सिंहासने पर बइठत बाने)

महाराज : सभे मंत्री लोग आ गइल बा नू !
मंत्रिमंडल के सब सदस्य– हँ, महाराज ।

महाराज : रक्षा मंत्री जी, रउरा बताईं कि मंगली हाथी वाला ममिला में का कइल जाउ ! ईहो बताईं कि हाथी के का हालति बा ? हाथी काहें पागल हो गइलि बा ? कइसे ऊ ठीक होई ? हाथी मँगली ह । कवनो असुभ घटना त नइखे घटल चाहत । का होखो अब बताईं

रक्षा मंत्री : हमार त ई राइ बा कि जब हाथी पगलाइए गइलि त ओके पशुन खातिर बनावल पागलखाना में भेजि दीहल जाउ । एतनी घरी ऊ हथिसार में बान्हलि बा कसिके बाकी स्वस्थ नइखे ।

महाराज : कहीं जी स्वास्थ्य मंत्री जी, राउर विचार का ह ?

स्वास्थ्य मंत्री : हाथी के पागल खाना में ना भेंजि के दिमाग ठीक करे वाला चिकित्सिक लोगन के मदद लेबे के चाहीं आ हथिसरवे में हाथी के उपचारो भइल ठीक होई !

कुछ सभासद : स्वास्थ्य मंत्री जी के विचार ठीक बा ।

महाराज : शान्त होखीं सभें । अब हम ए ममिला में प्रधान मंत्री जी के राइ जानल चाहतानी कि मँगली हाथी बउरा काहें गइलि । प्रजा पर चाहे राज पर एकर का प्रभाव पड़ी आ ई हाथी कइसे ठीक होई । साफ-साफ आ खुलासा फरिआ के कहीं प्रधान मंत्री जी ।

प्रधान मंत्री : सभासद गण, माननीय मंत्री जी लोग आ महाराज, हम पहिले उपचार बतावत बानी कि हाथी कइसे ठीक होई । हथिसार के बाहर उत्तर ओर जवन सरकारी सड़कि बा ओ जगहि के पूरा साफ कराके हथिसार के जंगला से सटि के शानदार मंच आ मण्डप-पण्डाल बनाववल जाउ । सजावटो खूब बढ़ियाँ से होखे के चाहीं । मंगल कलश के ऊपर दीया जरावल जाउ । उत्तम विचार वाला नागरिक गण आमंत्रित कहल जाउ लोग । संगीतज्ञ, कवि, कलाकार, कथावाचक मंच पर बइठि के मधुर स्वर में ज्ञानवर्द्धक प्रवचन, कविता आ शास्त्रीय संगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत करे । वीणा, सितार, मृदंग, हारमोनियम, शहनाई, शंख, बाँसुरी, वायोलीन वगैरह पर भैरवी, जयजयवंती, वागेश्वरी राग में मधुर-मधुर न बजावल जाउ, ओपर नृत्य होखे, गायन होखे । ई कार्यक्रम रउरां सभें एक सप्ताह ले चलाईं । हाथी पहिलही लेखा एकदम निरोग हो जाई ।

स्वास्थ्य मंत्री : माफ करीं प्रधान मंत्री जी, राउर ई बाति समुझ में नइखे आवत । हाथी के दिमाग खराब भइला से आ गाना-बजाना, नाच, नौटंकी, कथा वार्ता, भजन, उपदेस से का सम्बन्ध बा । कहाँ रोग आ काहाँ इलाज ! हुः !

महाराज : हँ त नाहीं ए प्रधान मंत्री जी, ई बाति त हमरिओ अकिलि में नइखे आवत । जवन कहतानीं रउरा ऊ कईल कवन मुसकिल बा ? बाकी एसे का होखे के बा ?

प्रधान मंत्री : एहि से कुल्हि हो जाई । महाराज, राउर जय आ प्रजा के पूरा कल्याण होखे ! अब तनी ध्यान से सूनीं सभें उपचार, निदान आ रोग के सम्बन्ध ।

कुल्ही पशुन में हाथी सबसे अधिक समझदार आ बलवान ह । जबसे ई मँगली हाथी हथिसार में आइल ह राज में सुख-सम्पदा बहुत बढ़ि गइल । भीतरे-भीतरे खोंखर हो गइल बा । शासन में चुस्ती प्रथम आवश्यकता बा । असामाजिक तत्वन के मेटावल अनिवार्य बा । एसे पड़ोसी राज्यन के दालि इहाँ ना गले पाई । हाथी के ठीक भइल बहुत जरूरी बा ।

महाराज : सभासद गण, राउर सभन के का विचार बा ।

सभासद गण : (एक स्वर से) प्रधान मंत्री जी सत्य कहतानी ।

महाराज : त प्रधान मंत्री जी आपके संयोजन में ई काम पूरा होखे के चाहीं ।

प्रधान मंत्री : जो आज्ञा । (महाराज के जय के नारा से सभा समाप्त)

सभा मंच के दृश्य

(हथिसार के जंगला के सामने आदर्श सजावट हो गइल बा, संगीत के कार्यक्रम जमल बा । हाथी ए कार्यक्रम के बड़े मन से सुनि रहल बा, देखि रहल बा ।)

उद्घोषक : महाराज, महाराज हऊ देखीं हऊ । हथियो संगीत के ताल पर नाचे लागल । देखीं नू ओकरे लगे जाके लइका, कुल्हि खेलत बाड़ें सँ आ हथिओ ओ कुल्हन के संगे खेल तिआ । मँगली हाथी स्वस्थ हो गइल । हमनी के राज्य सम्हरि गइल । हमनी के स्वाधीनता अमर रहे । हमनीं का एकमत रहीं जा हरदम । हमनी के अस्तित्व अखण्ड रहे । महाराज की जय, प्रधान मंत्री की जय, मँगली हाथी की जय ।

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के जनम बिहार के नोनार, पीरो (भोजपुर) में भइल । कृषि-विज्ञान में स्नातक कइला के बाद इहाँ के कृषि-पदाधिकारी का रूप में सरकारी सेवा में चल गइनीं । एतीघरी प्रखण्ड विकास पदाधिकारी का पद से सेवा निवृत्त होके भोजपुरी साहित्य-सेवा में लागल बानीं ।

इहाँ के उपनाम 'आरोही' से भी साहित्य-सृजन कइले बानीं । अबले चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह जी के दर्जन-भर से ऊपर किताब छप चुकल बा जेकर नाम, विषय आ प्रकाशन-काल बा– 'माटी के महक' (कविता-संग्रह : 1967ई.), 'गीत जिनगी के' (कविता-संग्रह : 1978ई.), 'नया एगो सूरज' (गजल-संग्रह : 1987), 'बड़प्पन' (कहानी-संग्रह : 1990ई.), 'सही मंजिल' (कहानी-संग्रह : 1992ई.), 'बेगुनाह' (कहानी-संग्रह : 1997ई.), 'आदमियत' (एकांकी-संग्रह : 1992ई.), 'साक्षात लक्ष्मी' (नाटक : 2000ई.), 'आरोही हजारा' (दोहा-कोष : 2002ई.), 'बरवै ब्रह्म रामायण' (प्रबन्ध काव्य : 2004ई.), 'कुँवर गाथा' (कुँवर काव्य : 2004ई.), 'जयघोष' (कुँवर काव्य : 2008ई.) आदि । एकरा अलावे चौधरी जी के संदर्भ-ग्रंथ का रूप में 'भोजपुरी साहित्यकार दर्पण' तीन खण्ड में प्रकाशित बा ।

इहाँ के वर्तमान पता बा– नोनार, भाया-पीरो, भोजपुर-802207

देवता

झलक-पहिला

समय-दिन । स्थान-ग्रामीन क्षेत्र के चट्टी के सड़क ।

[कार चलल जात बिया । अगिला सीट पर ड्राइबर बा आ पिछला सीट पर कन्हइया अपना कार्यालय के स्टाफ बाकी हमराज दोस्त के साथ बइठल बाड़न । दूनो आदमी सूटेड-बूटेड बा ।]

कन्हइया : लोगिन के बात-व्यवहार नीक ना देख के नहकार देली हँ । ठीक भइल हऽ कि गलत ?

दोस्त : काहे ?

कन्हइया : पूछत बानी ।

दोस्त : ठीक त हमरो ना लागत रहे-लोगिन के बात-व्यवहार बाकिर ढेर दिन से बात चलत रहे, इहे सभ सोच के हम चुप्प रहीं ।

कन्हइया : अरे ! का भइल रहे । कबो कुछ लेले-देले त रहीं ना । बातो रहे कि लइकी देखला के बादे कवनो बात होई ।

दोस्त : तब का सोचल जात बा ?

कन्हइया : हम, हमार मेहरारू आ लइका । परिवार बिना घर-आँगन सुन्न-सुन्न आ उदास लागेला । कटावन । लइको सेयान हो गइल । हमनी के चाहत रहीं जा कि एह साल सादी हो-हवा जाइत । लोगिन के बात-व्यवहार दबो रहे त का भइल ? लइकिया ठीक रहित त कवनो बात ना रहे ।

दोस्त : फदगोबर, बउराहिन अस, अपसेट माइंडेड लागत रहे ।

कन्हइया : छोड़ ? ई सभ ना कहे के । आगे के सोच ।

दोस्त : का सोचे के बा ? सादी-बिआह कवनो गुड़िया के खेल ना हऽ !

कन्हइया : कवनो लइकी नजर में होखे तब कहऽ ।

दोस्त : लइकी त बिया एही जगह, लाखों में एक बाकिर.....

कन्हइया : बाकिर का ?

दोस्त : तोहरा बराबरी के नइखे ।

कन्हइया : मतलब ?

दोस्त : तू क्लास वन अफिसर ओकर बाप सरकारी गुरुजी । तू लखपति आ ऊ खाता-पिता तू छोट परिवार वाला आ ओकरा सात-सात बेटी, औरत आ लइका । खाए के सामानन के आवत देरी लागेला बाकिर औरात ना ।

कन्हइया : एह से का भइल ?

दोस्त : दोस्ती आ दुश्मनी बराबरी में सोभेला ।

कन्हइया : ई सभ छोड़ । पद-पइसा से केहू बड़ भइल बा ना होई । लइकी के कह ।

दोस्त : लइकिया के कुछ नइखे कहे के । बी. ए. हऽ । कतो पढ़ावेले घर के कामो करेले । सादा खाना-पहिरना । देखे में त कवनो देवी के सूरत अस लागेले ।

कन्हइया : तू कइसे जानत बाड़ ?

दोस्त : ओकर बाप हमरे, हमरा दुआरे पर रहि के, पढ़ावत रहन । आवत-जात रहेलन । हम उन्हुकरे पढ़ावल हई । हमार आदि गुरु ।

कन्हइया : चल । लौट चल । चल के बात करा सकेलऽ ?

दोस्त : काहे ना ? बाकिर उहाँ पर लइकी के सिवा कुछ ना मिली ।

कन्हइया : हमरा पास कवन चीज नइखे जे हम खोजब ?

दोस्त : बा त ढेर लोगिन के पासे । बाकिर निनानबेके फेर..... ?

कन्हइया : दोसरा से हमरा कवनो मतलब नइखे ड्राइवर के गाड़ी घुमावे के कहीं ?

दोस्त : ना । गुरु के पास खाली हाथ ना जाइल जाला । चलीं । पहिले कुछ फल-मिठाई, हम खरीद लीं तब चलल जाई ।

कन्हइया : कवनो झूठो नइखे । कहिह कि एने आइल रहीं जा त चल अइलीं हँ । तू खोलिह मत । (दूनो आदमी एक-दोसरा के देखत बा । दूनो आदमी के चेहरा पर हँसी-खुशी के भाव बा ।)

(पटाक्षेप)

झलक-दोसरका

समय-दिन । स्थान-पहिला झलक वाला ।

[कार रुकल बिया । अगिला सीट पर दुल्हा के पहिरावा में पप्पू (कन्हइया के बेटा) आ ड्राइवर अउर पछिला सीट पर दुलहिन के पहिरावा में राधा (कन्हइया के पतोह) बइठल बिया ।]

कन्हइया : (आके आ पप्पू के बगल में खड़ा होके) पप्पू !

पप्पू : जी बाबू जी ? (कार के दरवाजा खोलल चाहत बा ।)

कन्हइया : बइठल रह । (राधा के देखत) बहू !

राधा : (दूनो हाथ जोड़ि के) जी ।

कन्हइया : तोहार साड़ी फाटल बिया ?

राधा : (साड़ी के देखत मने मन) चचेरी भउजाई के पहिरल साड़ी ह । रफू करावे के रहे बाकिर पइसा के अभाव में न करवले रहे लोग । (स्पष्ट) जी । गाड़ी में चढ़त खा काँटी से फाट गइल ह ।

कन्हइया : चप्पल का भइल ?

राधा : हमनी किहाँ जइसे सादी कइल जाला तसहीं भेज देल जाला । सादी करत खा चप्पल ना पहिरल जाला ।

कन्हइया : दूकानदार के आदमी झोरा-डिब्बा लेके आवत बा । (झोरा-डिब्बा लेके पहिला सीट पर धरत) एहनी में दू सेट साड़ी-साया-ब्लाउज बा । उहाँ उतरे के पहिले कतहूँ बदल लिह । डिब्बा में चप्पल-पैताबा बा । (राधा कबो झोरा-डिब्बा त कबो जात ससुर के देखत बिया ।)

(पटाक्षेप)

झलक-तीसरा

समय-दिन । स्थान-सजल-सजावल घर ।

[राधा पलंग पर पहिर-ओढ़ के बइठल बिया । सास के आवत देख के पलंग से उतर के नीचे खड़ा हो जात बिया ।]

सास : बहू !

राधा : जी !

सास : तहरा बक्सा में देखनी हँ । ओह में पाँच सेट साड़ी बा । पाँचों के पाँचों एकदम साधारन ।

राधा : नेवता में आइल रहे ।
दाई-नौकर आवत बा । (दाई-नौकर लोग रख रख-अटैची-झोरा चल जात बा ।)

सास : (राधा के कबो समान आ कबो अपना तरफ चिहा-चिहा के देखत देख के) ई सभ तहरे हऽ । तहरा बक्सा के बात जान-सुन के तहार ससुर मँगवा देले हऽ । ओह साड़ियन के कबो निकलिह-पहिरिह मत । ओसहीं रहे दिह भा जे मन करे करिह । (राधा जात सास के देखत गद्‌गद हो जात बिया)

(पटाक्षेप)

झलक-चउथा

समय-दिन । स्थान-सजल-सजावल बइठका

[कन्हइया सोफा सेट पर बइठल बाड़न । कुर्ता-पैजामा में बाड़न आगा में सेंट्रल टेबुल पर कागज-किताब रखल बा । अखबार पढ़त बाड़न । अगरबती स्टैंड पर अगरबती जरत बाटे । बइठका में दुगो दरवाजा बा । एगो बाहर जाए खातिर त दोसर भीतर जाए खातिर । दुनो पर परदा लहरात बा ।]

कन्हइया : अखबार पर से नजर उठा के भीतर तरफ देखत बहू !

राधा : (भीतर से) जी बाबूजी ।

कन्हइया : एक गिलास पानी भेज ।

राधा : जी अच्छा । (आके पानी से भरल गिलास सेंट्रल टेबुल पर रख के मुड़ के जाए लागत बिया ।)

कन्हइया : बहू !

राधा : (रुकत-मुड़त) जी !

कन्हइया : ना । कुछ ना । तहार बाप दु हजार रुपया के बैंक-ड्राफट भेजेले रहन ।

राधा : (खुश होत) काहे खातिर ?

कन्हइया : (जेबी से पर्स आ पर्स से रुपया निकाल के राधा के तरफ बढ़ावत) सवनपुरिया लेके आवे के लोग के पास समय ना रहे । साथ के खत में लिखल रहे कि अपना मन से प्रबंध कर लेब जा ।

राधा : (रुपया लेत) त हम का करब ?

कन्हइया : पप्पू के साथ बाजार जाके अपना मन से आपन साड़ी-सायां आ अउर जरूरी समान खरीद लिह ।

राधा : (सवालिया नजर से देखत) खाली अपने खातिर.....?

कन्हइया : फल-मिठाई आ पूजा के सब सामान, सभ, मँगवा देलिं ।

राधा : (खड़ा ताकते रह जात बिया ।)

कन्हइया : सास-ननद के साड़ी-समान त ओ लोगिन के नइहर-सासुर से आइए गइल बा ।

राधा : (पाँव छूके प्रनाम करत बिया ।)

कन्हइया : सदा सुखी रह बेटी ! कइ एक दिन से परेसान रहू कि सबको नइहर-सासुर से सवनपुरिया आ गइल, का जाने बाबूजी भेजिहें कि ना ? देख तोहार बाबू जी तोहार कतना ख्याल राखेलन । बाप-मातारी अपना लइकन से बराबर प्यार करेला । खाली तू खुश रहल कर । (अखबार उठा के पढ़े लागत बाड़े । राधा चल जात बिया ।)

(पटाक्षेप)

झलक-पाँच

समय-दिन । स्थान-चउथा झलक वाला बइठका ।

[राधा भीतर से आवत बिया । बाहरी दरवाजा बंद कर देत बिया । फोन के चोंगा उठा के डायल करत बिया-सोफा पर बइठ के । घंटी होत बा ।]

राधा : हल्लो !

हम रउरा बगलगीर मास्टर साहब के बेटी, राधा हईं । तनी रउरा बगलगीर मास्टर साहब के बोलवा देब ।

हँ फोन पर रहब । अबहिएँ बोलवावत बानी ।

(चोंगा कान के पास रख, गर्दन से दबा के अखबार देखत बिया ।)

परनाम ।

सब केहू ठीक से बा नू ?

सब केहू के सवनपुरिया आइल । हमार ना आइल तब बड़ी उदास-उदास लागत रहे बाकिर बाबू जी के भेजल दू हजार रुपया आइल तब सब छूमंतर हो गइल ।

(चिहात, कान-पाट के) का भ गइल ?

अउर सभ ठीक बा नू ?

तब रखीं ?

गोड़ लागत बानी । (चोंगा रखे जात बिया कि आवाज होत बा फिर चोंगा कान के पास ले जात बिया ।)

कुछ बोललीस हा का ? .....।

सास-ससुर लोग त देवता ह । हमार ख्याल बराबर रखेलन जा । हमरा इहाँ पर कवनो बात के कमी नइखे । बेटी-पतोह के दू नजर से ना देखल जा । कहत रहीं कि काल्ह रक्षा बंधन ह ।

तनी भइया के भेज दिहितिस तब नीमन होइ त ।

का कहत बाड़ीस ? उन्हुकर तबीयत ठीक नइखे ?

का भइल बा ?

कतना दिन से ?

(उदास) तब जाए दे । फिर रक्षाबंधन का आई ना । अतने कहे के रहे । रखत बानी । रखीं ? गोड़ लागत बानी । (चोंगा रख के मने मन) सात-सात बहिन के एगो भाई । बाप-मातारी के आँख के पुतरी । बुढ़ापा के एक मात्र सहारा । ठीको रहित तब केकरा घरे जाइत आ केकरा घरे ना जाइत ।

(बाहरी दरवाजा पर 'खोल' कन्हइया के आवाज उभरत बा । राधा जाके

दरवाजा खोल के, बगलिया मुँड़ के जाए लागत बिया । कन्हइया सूटेड-बुटेड आवत, सोफा पर बइठत बाड़न ।)

कन्हइया : सात-सात बहिन के अकेला भाई शंभू कहाँ जाई कहवा ना । राधा चिहात आ ससुर के देखत बिया । बात के पकड़ के कोशिश करत बिया । जा तइयारी कर पप्पू से कह देले बानी । दूनो आदमी चल जा । संजू के राखी बाँध के..... ।

राधा : दीदी आवे के फोन कइले बाड़ी ।

कन्हइया : आई ? ठीक बा आवे । हम ओकरा के रोक लेब । तू लोग के अइला पर बाध के जाई ।

(राधा खुशी-खुशी चल जात बिया)

(पटाक्षेप)

झलक-छव

समय-दिन । स्थान-साधारन अगना ।

[चउकी पर साधारन बिछावन जवना पर राधा सुतल बिया । बाहर में भुनभुनाहट होत बा । राधा आँख मूँदले कान लगा के सुनत बिया । बगल के कमरा से ओकरा बाप मातारी के आवाज बुझात बा ।]

बाप : फोन कर के तूहीं बोलवले होइबू । कुछ समझत काहे नइखू ? अबहीं त बिआहे के कर्जा नइखे उतरल । बेकार-बेमतलब के हजारन के बोझ आ गइल ।

मातारी : तनी गवें-गवें बोलीं । दामाद बाबू सुनिहें त का सोचिहें । हम केहू के नइखीं बोलवले । हम का नइखीं समझत ? एही से त सवनपुरियो ना भेजले रहीं । संजू के बोलावे खातिर फोन कइले रहे तब बहाना कर देले रहीं । रउवे का तो दू हजार रुपया सवनपुरिया में भेजले रहीं ?

बाप : हम ?

मातारी : रधवे त फोन पर कहत रहे ।

बाप : हम भेजतीं त तू ना जनतू ?

राधा : मने-मने बाबू जी रुपया ना भेजले रहन । हमार उदासी देख के ससुर जी आपन पास से झठ बहाना कर के देले रहन । हमरा के सास-ननद, टोल-पड़ोस के नजर से गिरे से बचा लेले रहन । कतना महान बाड़न ?

(पटाक्षेप)

झलक-सात

[अगना गोबर से लीपल बा । बीचे आँगन में पीढ़ा रखल बा । संजू पेन्ह-ओढ़ के आगे पीढ़ा पर बइठ रहल बा । राधा हाथ के थारी में अक्षत-चंदन रोरी वगैरह लेके आवत बिया । मातारी आके खड़ा हो जात बाड़ी । पीढ़ा के आगा में अल्पना बनावल बा । राधा थारी रख देत बिया । रोरी से संजू के लीलार पर टीका लगावत बिया । अउरी बिध-व्यवहार करत बिया । संजू पाकिट से निकाल के, पचास आ एक के, दू गो नोट आगे में रख देत बा ।]

राधा : थारी में से 50 के नोट उठा के संजू के पाकिट में रखत भइया तहार रुपया ना तहार आसिस चाहीं । साथे-साथे ई अधिकार कि हम जब चाहीं, जब मन करे, बेधड़क आ जाईं ।

मातारी : ई का कह रहल बाड़ी स ? तोरा के आवे से के रोकले बा ई संजुए के घर ह तोर ना ? (राधा के नजर मातारी के नजर से मिलत बा । मातारी के नजर झुक जात बा ।)

(पटाक्षेप)

झलक-आठ

समय-दिन । स्थान-चउथा झलक वाला झलक ।

[कन्हइया अपना औरत के साथ सोफा पर बइठल बाड़न । कुर्ता-पैजामा में कन्हइया बाड़े आ साड़ी-ब्लाउज में उन्हुँकर औरत बाड़ी । फोन सेंट्रल टेबुल पर धइल बा । भीतर से राधा आवत बिया । दुनो लोग के देख के चल जात बिया ।]

औरत : समधी से कह दीं ।

कन्हइया : का ?

औरत : का हमनी के रुपया नइखीं जा देखले ? ऊ खुद ना अइहें भा केहू के ना भेजिहें तब रुपया मत भेजिहें । ना त हम उन्हुकर रुपया ओसहीं लौटा देब ।

कन्हइया : .....।

औरत : रअवा ना कह सकब त कहीं हमहीं कह दीं । फोन के देखत बाड़ी ।

कन्हइया : सोचत, तय करत, मुस्कात ठीक बा । हम कह देब अब तक ठीक ? दूनो के नजर मिलत बा ।

(पटाक्षेप)

झलक-नौ

समय-साँझ । स्थान-सजल-सजावल कमरा ।

[पलंग पर बइठल राधा किताब पढ़त बिया । दरवाजा पर पर्दा बा ।]

दाई : (पर्दा के बाहर से बीबी जी !)

राधा : पलंग पर किताब रखत, दुआर तरफ देखत का ह ? आव !
(दाई ढरे झोरा-वगैरह के साथ आवत बिया । सामान पलंग के बगल के टेबुल पर रखत बिया ।) देख के चिहात ई सब का ह ?

दाई : राउर भई आइल बानी । बाबू जी साथे बइठका में बइठल बानी । ई सब उहें के ले आइल बानी ।
राधा के सास आवत बाड़ी ।

सास : बहू ! तोहार भाई आइल बाड़न । कहत बाड़न कि जल्दिए लौटल जरूरी बा । भेंट करे के कहत बाड़न । इहवें भेंज देत बानी । सास जात बाड़ी । संजू आवत बा । राधा उठ के जाके गोड़ लागत बिया । हाथ से असीसत संजू जाके पलंग पर बइठ जात बा । राधा खड़ा बिया । दाई ला ला के नास्ता-पानी टेबुल पर लगा देत बिया । सब सामान पलंग के बगल के रेक पर रख देत । संजु नास्ता करत बा ।

राधा : सादी के बाद त आइल ना रह । घर-राह ईयाद रहे ! भुलइला ह ना ?

संजु : तोर ससुर गाड़ी भेज देले रहन । डाबर गाड़ी के पहिले उहाँ के आफिस पर ले गइल रहे । उहाँ से साथे-साथे अइनी हा जा ।

राधा : तर-ऊपर जात बिया ।

संजु : तोर तबियत ठीके देखत बानी । का भइल रहे ?

राधा : चिहात हमार ?

संजु : हाँ ।

राधा : हमरा त कुछ नइखे भइल । काहे ? केहू कुछ कहत रहे का ?

संजु : रेक पर के सामान सभन के देखत, देखावत एह सामान सभन के कवन जरूरत रहे । बाबूजी कतना खर्चा में पड़ गइल होइहें ।

संजु : हम नइखीं ले आइल ।

राधा : चिहात, तू नइखऽ ले आइल ?

संजु : ना ई सामान सभ तहरा ससुर के आफिस में गाड़ी में रखल रहे ।

राधा : (दीवार पर टागल अपना ससुर के फोटो के देखत बिया । मने मन रउवा सच्चो के महामानव बानी, देवता बानी ।)

संजु : कुछ सोचत, तय करत, उठ के चले लागत बा । राधा ई घर तोरा खातिर स्वर्ग समान बा । अपना स्वर्ग के स्वर्ग बनवले रखिहे । हमनी के तोरा तरफ से निश्चित भइलीं जा । बाकिर बहिन ! भाई के मत भुलइहे ।

(दूनो के नजर मिलत बा ।)

(पटाक्षेप)

झलक-दस

समय-दिन । स्थान अस्पताल के कमरा

[बेड पर राधा आँख मूँद के पड़ल बिया । मुँह छोड़ के पूरा देह कपड़ा से ढाँपल-लेपल बा । अगल-बगल के बेडवन पर दोसर-दोसर औरत बाड़ी स । नर्स आवत बिया ।]

नर्स : राधा के आँख खोलत देख के, नजदीक जाके लक्ष्मी आइल बाड़ी ।

राधा : मने मन लक्ष्मी ना खाक । जहँवा बेटी के जन्म लेते धरती बीता भर धस जात होखस, उहाँ बेटी के लक्ष्मी कहल सफेद झूठ बा । अपराध बोध से गड़त आ चिहात ई का भइल ?

सास, ससुर आवत बाड़न

कन्हइया : राधा बेटी तू हमनी के, ई नन्हा फूल देके, दादा-दादी बना देलु । एकरा के खूब सँभाल के रखिह ।

सास : चलीं । ईहाँ पर अउर देर मत करीं । चल के तइयारी करीं । धूम-धाम से समारोह करीं । बहुत दिन के बाद ई समय आइल बा ।

कन्हइया : काहे ना ? जहवाँ बेटी ढोर-डांगर समझल जात होइहें स तहवाँ मातम मनावल जात होई । हम त खुशी से नाचत बानी । ई हमरा आँगन के फूल ह । प्यार के खुशबू ह खर-पतवार ना ।

(राधा के चेहरा पर सुखद अचंभा के भाव उभरत बा ।)

तैयब हुसैन पीड़ित

डॉ. तैयब हुसैन पीड़ित के जनम बिहार में सारण जिला के गरखा अचंल-अन्तर्गत 'मिर्जापुर-बसंत' गाँव में 16 अप्रैल 1945 ई. के भइल ।

निम्न मध्यम परिवार में जनमल डॉ. पीड़ित बचपने से पढ़े-लिखे में मेधावी रहलन बाकी घर के खराब आर्थिक स्थिति उनकर प्रगति रोकत रहल । ऊ उच्चतर माध्यमिक परीक्षा जयगोविन्द विद्यालय, दिघवारा से पास कइलन, इन्टरमीडिएट विज्ञान के परीक्षा जगदम कॉलेज, छपरा से आ बाद के बी. ए., एम. ए. (हिन्दी) आ पी-एच. डी. (भिखारी ठाकुर पर) स्वतंत्र रूप से विभिन्न विश्वविद्यालय से, काहें कि बीच-बीच में अपना आ संयुक्त परिवार के जीवन-यापन खातिर उनका छोट-बड़ नोकरियो करे के पड़ल ।

आखिर में ऊ जेड. ए. इस्लामिया कॉलेज, सीवान (जयप्रकाश विश्वविद्यालय) से हिन्दी-प्राध्यापक के पद पर काम करत 2005 में सेवा-निवृत्त होके फिलहाल हिन्दी-भोजपुरी-साहित्य-सृजन में सक्रिय बाड़न ।

तैयब जी के प्रकाशित पुस्तक बाड़ीसऽ :

हिन्दी में– भिखारी ठाकुर (विनिबंध), लोकनारायण (नाटक), एक गुमशुदा इतिहास (नाटक) आ, भोजपुरी में– 'बिछऊँतिया' (कहानी संग्रह), 'भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त रूप रेखा' (साहित्येतिहास), 'भोजपुरी कविता के सामाजिक परिप्रेक्ष्य' (आलोचना) ।

डॉ तैयब हुसैन पीड़ित के साहित्य-सेवा खातिर अखिल भारतीय भोजपुरी भाषा सम्मेलन, पटना से 'रघुवंश नारायण सम्मान', अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, पटना से 'हरिशंकर वर्मा पुरस्कार', अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद्, लखनऊ से 'भोजपुरी शिरोमणि' आ 'भोजपुरी भास्कर' सम्मान आ बिहार राष्ट्र भाषा परिषद् (बिहार सरकार) से 'लोकभाषा-साहित्य-पुरस्कार' मिल चुकल बा ।

इनका सम्पर्क के वर्तमान सूत्र बा–

'टी. एच. ठौर'
न्यू अजीमाबाद कॉलोनी, पो. महेन्द्रू, पटना-800006

त्रिशंकु

पात्र:-

त्रिशंकु : दफ्तर के चपरासी

साहेब : त्रिशंकु के साहेब

बीबी : साहेब के बीबी

झलक-1

स्थान : दफ्तर में साहेब के कमरा

[साहेब फाइल देखे में मशगूल बारन । त्रिशंकु पर्दा हटा के बड़ा आदर से साहेब के सलामी दागता ।]

त्रिशंकु : सलाम हजूर !

साहेब : (आँख गुड़ेर के) केतना दिन पर आफिस अइले ह ?

त्रिशंकु : आठ दिन पर हजूर

साहेब : ई जानियो के कि हम गरहाजिर-दिन के पइसा काट दीहिले ?

त्रिशंकु : ना हजूर ! बड़ा साहब कहले रहलीं कि.....

साहेब : बड़ा साहेब ?

त्रिशंकु : जी हँ हजूर ! हम उहँहीं उनका डेरा पर काम करत रलीहं । साहेब कहले रहीं कि हम उनकर काम सम्हार दीं तब इहाँ आई । जब हम कहलीं कि साहेब आफिस में बिगरे लगीहें त कहे लगलन– हम बानी नू ? कवनो बात होय त कहिहऽ ।

साहेब : (अपने आप) कुछ बात होय त कहीहऽ ! ऑर्डर छाँटता कमबख्त । बॉस ना भइल जइसे लाट साहेब हो गएल ।

त्रिशंकु : कुछ कहत बानी हुजूर ?

साहेब : हँ ! तू कान खोलके सुनले, हम केहू से ना डेराईं ।

त्रिशंकु : बड़ो साहेब से ना ?

साहेब : (खीस में) ना-ना-ना ! जइसे तोर बड़ा साहेब नोकर वइसे हम..... । फेर हम केहू के दबाव काहे बर्दाश्त करब ? तोरा, सिवाय हमरा, आउर केहू के बात ना मानेला होई ! समझले ?

त्रिशंकु : बाकी..... अपनहीं त ओहदिन बड़ा साहेब के सामने कहले रहीं– (नकल कके) सर ! जब जवना चीझ के जरूरत पड़े– बस खाली हमरा के फोन कर दीं..... ।

साहेब : बेवकूफ ! जबान लड़ावतारे ? जो बाहर ! बड़ा बाबू से बोल दे कि तोहर बिल आठ दिन के काट के बनावस । (भुनभुना के) बड़ा साहेब के सामने हमरा के हेठ करता बदतमीज.....! (त्रिशंकु बाहर चल जाता) बीच में पड़लन त समझ लीहें बड़ो साहब ! आखिर वाइफ के मामा कवना दिने काम अइहें । तगड़ा मिनिस्टर बाड़े– माहमूली बात बा ? रहऽ बताइये दीं !

(फोन के डायल घुमावे लागतारन । लाइन मिलला पर)

साहेब : मामाजी ? ह-हँ..... जी ! हम भूषण बोलत बानीं । ऑय ? हँ-हँ राउर भगिनी मजे में बाड़ी ! .....आरे अपने का कहत बानीं– आराम-तकलीफ त अपना किस्मत के बात होले । आ उनका सुभाव के कड़ा भइल ? .....ई त रउरा सभके लॉड़-प्यार के परसाद ह जवन हमरा हिस्से पड़ल, आउर का ? (हँसे लागतारन) हँ-हँ कुछ कामे रहल । देखीं ना-आज फेरु ऊ हमर इन्सल्टिंग कइलख । हँ-हँ ऊहे हमर बॉस ! .....कइक बेर कहलीं रउरा से-ओकर ट्रांसफर जो एह आफिस से हो जाइत त बड़ा अच्छा होइत । .....ऐ ? अबहीं बहुत मुश्किल बा ? गोटी ना बइठी ! बाकी काहे ? राउर त धाक..... अबहीं ऊपर के सब लोग ओकरे कास्ट के बाड़न ? बाकी ई हमरा प्रेस्टिज के सवाल बा । जी..... जी..... जी ? का कहल गइल ? फेभर के लोग अइला पर..... ? तब तकले चपरासिये के बदल दी ! .....हूँ-हूँ..... लेकिन कइसे ? बौसवा आपन प्रेस्टिज इशु ना बना ली ? .....जी ! जी ! .....ओ हाँ-हाँ ठीक-ठीक ! आरे अपने सब के मोहरा थोड़े कबो मात खाले ? अच्छा देखत बानीं । ..... ना-ना .....चार्जेज ढूढ़ल कवन बड़का काम बा ? गुड आइडिया ! ओ. के. ।

प्रणाम..... । (थोड़का देर चुप्पी । साहेब कपार पर हाथ धके कुछ सोचे लागतारन, तबे फोन के घंटी बाजता)

साहेब : (फोन उठा के कान तर लगावत) हलो ! (हड़बड़ा के) नमस्ते सर ! ना-ना.....ना त-ऊ अपने के बात लेके ना सर ! ऊ आफिस के कवनो काम कबो ठीक से ना करे..... एही से..... त ऊहो डँटलीं हँ कहाँ ?.... हँ-हँ..... समझावते रलीहँ । जी-जी.....जी.... एक्सक्युज मी सर । अबसे अइसन गलती ना होई । (फोन रख के खीस में अपने आप) शैतान त्रिशंकु ! तुरते बड़ा साहब कन पहुँच गएल । शोख हो गइल बा- शिकाइत करत फिरता । अच्छा देखत बानीं एकरो हेठी..... । (कॉलबेल बजावतारन)

त्रिशंकु : (बाहर से कहत अन्दर) अइलीं हजूर !

साहेब : (डाँट के) अइली हजूर ! कहाँ चल जालस आफिस छोड़ के ? कबसे घंटी दे रहल बानी आ.....

त्रिशकु : कहाँ हजूर ! अपने त घंटी देलीं आ हम हाजिर भइलीं ।

साहेब : (जब कुछ गलती ना मिलल त-) आउर जल्दी आवे के सीख !

त्रिशकु : अच्छा हजूर !

साहेब : (दिमाग पर जोर डालत) हूँ ! पिछलो हप्ता में दू दिन अब्सेंट रहस ?

त्रिशंकु : ना हजूर !

साहेब : तब कवना हप्ता में ना आयेल रहस ?

त्रिशंकु : पिछल का हप्ता के पहिलका हप्ता में हजूर ।

साहेब : (जइसे लर मिल गइल) काहे ना आइल रहस ?

त्रिशंकु : बेमार रहीं हजूर ।

साहेब : काहे बेमार रहस ?

त्रिशंकु : (अपने मने) काहे बेमार रहीं.....? जी ! जी ! पेट के गड़बड़ी से बोखार..... ।

साहेब : आई मीन अपलिकेशन काहे न देले ?

त्रिशकु : देले रहीं हजूर !

साहेब : ना देले रहस ।

त्रिशंकु : देले रहीं हजूर !

साहेब : का सबूत बा ?

त्रिशंकु : ई का बा पाकिट में दरखास्त देला के रसीद..... (निकाल के देखावता)

साहेब : (झुझंलात-जइसे ईहो फेल गइल) कब देले रहस दरखास्त ?

त्रिशंकु : ओही दिन हजूर !

साहेब : ओही दिन काहे ? पहिले काहे ना ?

त्रिशंकु : बाकी बेमारी से पहिले.....कइसे हजूर ?

साहेब : कुछ ना– अप्लिकेशन एट लिस्ट एक दिन पहिले जरूर आ जाय के चाहीं..... समझले ?

त्रिशंकु : समझलीं त हजूर ! बाकी.....एक दिन पहिलहीं कइसे जानब कि काल्ह से बेमार....

साहेब : (डपट के) जबाब दे तारस ? चुप रह !
(चुप हो जाता ।)

साहेब : हूँह् ! (इयाद करत) ऊँ-हाँ ! ओह दिन हमर रजिस्ट्री कर देले रहस ?

त्रिशंकु : ओह दिन ना सर !

साहेब : ओह दिन काहे ना ?

त्रिशंकु : डाकखाना बन्द रहे हजूर !

साहेब : काहे बन्द रहे डाकखाना ?

त्रिशंकु : छुट्टी रहे हजूर !

साहेब : (वोही तेवर में) काहे रहे छुट्टी ?

त्रिशंकु : सन्डे रहे हजूर !

साहेब : काहे रहे सन्डे ?

त्रिशंकु : आँय ? काहे रहे सन्डे ? (माथा खजुआवे लागता)

साहेब : (अपना जिद में) हँ-हँ ! तोरा बहुत बके के आदत पड़ल जाता । काबिल बन गएल बाड़स ते ? तोरा ई हो पता नइखे कि अपना अफसर से कइसे बात करे के चाहीं ? हम इमिडियेट तोर ट्रान्सफर करत बानीं । बहुत जल्दी । आफिस में शोख हो गएल बाड़स तें ! (अपने मने) बड़ा साहब के भरोसे जबान लड़ावता । चल-हमरा डेरा पर औडरली बन के तब पता चलतऊ.... ।

झलक-2

[जगह, साहब के घर के ड्राइंग रूम । समय-आफिस जाये के । साहब कुछ फाइल लेले भीतर से आके धम्म सेन सोफा पर बइठ जात बारन । मिजाज चीड़ल लउकता । रूमाल से बारम्बार हाथ मुँह पोंछत बारन । दुझाता अबके खाना खा के अइलन हं । थोड़का देर फाइल उलिट-पलिट कइला के बाद दुआरी कावर कुछ के पैरा हेरत बारन फेर अपने मने बके लागत बारन-]

साहेब : कुफुत बा- हर जगेह कुफुत । आफिस में किरानी कपार खात रहेलन स आ घर में बीबी दिमाग चाट जाले । ना सुतत चैन बा ना खात । (घड़ी देख के) दस बजे के आएल । केहू तरेह खाना नसीब भइल त पानी नदारद ! अब समुझ में आवता कि कुछ लोग घर के बजाय होटले में खाना खाएल काहे पसन्द करेलन । एतना पर बेयरा के ऊ डाँट बतवती कि ओकर सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाइत..... बाकी घर में.....! हुँह ! (पुकारत) त्रिशंकु ! त्रिशंकु !!

त्रिशंकु : (आवत) जी हजूर !

साहेब : अबे आफिस में त तें एतना ओबेडियन्ट रहस- ई हमरा घरे आवते-आवते तोरा का हो गइल ? खाना त लगा देलस आ पानी ? बोलत काहे नइखस ? पानी खातिर का केहू अलग से पिउन बहाल होई ?

त्रिशंकु : जी.....जी.....बी.....बी जी त दूध ले आवे.....

साहेब : (बिगड़ के) बीबी जी के बच्चा ! पचास बेर कहलीं कि तें हमर औडरली बारस-हम्मर ! याने साहब के- बीबी जी के ना ! समझले ?

त्रिशंकु : जी.....जी.....

साहेब : जी-जी ना, कान खोल के सुनले; पइसा आफिस देले आ आफिस के साहब हम बानीं- एह से हुकुम हमर बजावे ला पड़ी समझले ? बीबी जी कवन होली तोरा से काम लेवे वाली.....

त्रिशंकु : अपने के मेम साहेब हुजूर.....।

साहेब : जबाब देवलस । शोख कहीं के । एक्सप्लानेशन भइल, प्रिवियस मन्थ के पेय विथ्हेल्ड भइल तबहूँ ना सम्हरले ?

त्रिशंकु : हँ-हँ मिलल रहे हजूर !

साहेब : मिलल रहे ? का मिलल रहे ?

त्रिशंकु : तनखाह हजूर ।

साहेब : (अचरज से) तनखाह ? मिलल रहे ? के देलक तनखाह तोरा के रे ? चल आज ओह कैशियरों के पता काटत बानी । बिना हमरा से पुछले.....

त्रिशंकु : बीबी जी देले रहलीह हजूर ।

साहेब : बीबीजी ? अपना पास से ? (कपार पीटत) हाय-हाय ! हमर सब कमाई तोरा पर लुटावल जाता । तबहीं सोचत रहलीं कि ई कइसे टिकल बारे अबतकले ? अच्छा-अच्छा जे होता-ठीके होता । चल ! चल ! जा बहरी ! मुँह का ताकत बारस ? जा के जल्दी पानी लाव एक-दू गिलास ! (त्रिशंकु चल जाता । माथा के पसीना पोंछत अपने मने-) कंठ सूखल जाता । हमरा कमाई पर सबके सब गुलछर्रा उड़ावत बारन । दफ्तर के बगावत दबावल जा सकेला बाकी का करी कोई जब मेहरे बागी हो जाय..... (चिल्ला के) त्रिशंकु ! त्रिशंकु !! अरे रे त्रिशंकुआ !!! जाके मर गएल कमबख्त का दो । (आउर जोर से) त्रिशंकु !!! अबे पानी लइले ?

बीबी : (तमक के बाहर आके) का जोर-जोर से नारा लगावल जाता । शांति से बात कहे के आदत नइखे ।

साहेब : (खीस में हाँफत) त्रिशंकुआ कहाँ गइल ? हम पूछत बानी त्रिशंकु गइल कहाँ ?

बीबी : काहे लाग ? का संदेह स्वर्ग भेजेला बा ओके ? हम पूछतानी का कारण बा विश्वामित्र जी के अइसे अँफरला के ?

साहेब : स्वर्ग ? हम जल्दीए नरक पेठावत बानी ओके । पियासे मर रहल बानी आ तोहरा दिल्लगी सूझता !

बीबी : ओ ! त साहेब के पानी चाहीं ? आज आफिस नइखे जाएला का ?

साहेब : काहे ? आफिस से पानी के का सरोकार ?

बीबी : सीधा सरोकार बा । उहाँ जा के पिउन से पानी मांगी । साइत पिया देवे !

साहेब : आ इहाँ ?

बीबी : इहाँ हमर अफसरी चलेला समझलीं ? हँ ! त्रिशंकु अपने पानी पियावे के बेसब्री में काँच के नएका गिलास तूड़ पललक ह । एह से हम हुकुम देले बानीं जब तकले तूँ अपना पइसा से हू-ब-हू ओइसने फूलदार गिलास खरीद के ना ला देबे तब तकले अपना साहेब के पानी ना.....

साहेब : ओफ् हो ! कहाँ बा कमबख्त ?

बीबी : बाजार तरफ गिलास खोजे गएल ह ।

साहेब : आजे ट्रांसफर करत बानी इडियट के ! ना रही ए घर में कवनो ऑडरली तोहरा सब काम खुदे करे ला पड़ी हँ ।
(पैर पटकत उठ के चल जा तारन)

बीबी : (मुँह बिचुकावत) देखतानीं कइसे ना कोई ऑडरली रहेला घर में ? शक्ति आजमाइस के बेरा आ गइल साइत !.....
(तब त्रिशंकु गिलास में पानी लेके हाजिर होता)

त्रिशंकु : पानी साहेब ।

बीबी : साहब चल गइलन ! रख दे गिलास ले आके आलमारी में । आ सुन ! तोरा बदली के जो चिट्टी मिल जाय त तें का करबे ?

त्रिशंकु : (रोआनी सूरत बनाके) करब का ? जहाँ बदली होई चल जाएब । इहाँ त हम कतहीं के नइखीं । समुझ में नइखे आवत राउर बात मानी कि साहेब के हुकुम बजाई । राउर करीले त साहेब अनराज होलन आ साहेब के कहना करीले त रउरा सजाय दीहीले..... ।

बीबी : ना तू ना जा सकस !

त्रिशंकु : बाकी अइसन कइसे होई बीबी जी ! हम उनकर हुकुम कइसे ना मानब ।

बीबी : अच्छा ई त बताव कि एगो छोट अफसर आ एगो बड़ अफसर दुनो तोरा के हुकुम देवे त केकर बात मनबे ?

त्रिशंकु : बड़ा अफसर के हुजूर !

बीबी : ठीक ! काहे कि छोट अफसरो त बड़के के हुकुम मानेलन ! का ? बा नू इहे बात ?

त्रिशंकु : हँ बीबी जी ।

बीबी : आ-एह घर में केकर बात चलेला हमर मतलब बा कि हुकूम चलेला ?

त्रिशंकु : राउर बीबी जी ।

बीबी : शाबास । अब तूँ समझ गएल होखबे । (कार आवे आ हार्न के आवाज) देख ! साइत साहब आ गइलन । हम भीतर जा तानीं ! घबरइहे मत तोहर तनखाह, आउर बढ़ा देब हम । आउर ना त मामा से कह के तरक्की करा देब !.....

साहेब : (प्रवेश क के) हूँऽ ! त आ गइले ते बाजार से गिलास लेके ?

त्रिशंकु : जी सरकार !

साहेब : (गाभी से) बड़ा जल्दी आ गइले ?

त्रिशंकु : हँ हुजूर ! आज काहे जल्दी आफिस से आ गइलीं अपने ?

साहेब : (एक-ब-एक बिगड़ के) उल्टे हमरे से सवाल करतारस ? निकल

हरामी कहीं के ! चल दसखत कर हेह कागज पर आ बान्ह अपन बोरिया-बिस्तरा, निकल जो अबहीं हमरा घर से ।

त्रिशंकु : (डेरात) ई कइसन कागज बा हजूर ?

साहेब : ब्रान्च आफिस जाय के परवाना ।

त्रिशंकु : बाकी बीबी जी जाये दीहें तब-नूँ ?

साहेब : बीबी जी के बच्चा ! एही से रिलिविंगो लेटर साथे-साथ लेले आइल बानीं । ले ! पकड़ ! आ जा के सुना दे बीबी जी के खुशखबरी..... । (जबरदस्ती दसखत कराके कागज दे-दे तारन । त्रिशंकु अन्दर जाता, साहब, थोड़का देर बाहरे खीस में हाथ गोर पटकत रहत बारन । त्रिशंकु रोअत बहरी आवता–)

त्रिशंकु : हजूर ! बीबी जी त हमर रिलीविंग लेटर चुल्हा में झोंक देली..... उँऽऽऽ (रोअत) कहत बारी एह घर के मालिकन हम हईन । हम रिलीव करब तब तूँ जइहे ! अब हम का करीं हजूर ?

साहेब : (खीसे आग होके) का करीं ? हमरा सामने से चल घर से बहरी ! जा तारस कि ना ?

त्रिशंकु : बाकी एमें हमर कवन कसूर बा हजूर ? अपने बीबी जी के त कुछ कहते नइखी उनका से डेराइले आ हमरा गरीब आदमी पर रोब.....

साहेब : सट्अप ! नॉनसेन्स ! चल अभी चल ! हम कुछो सुने के नइखीं चाहत । (बाँह पकड़ के घसीटे लागतारन तबे झटका से बीबी आके त्रिशंकु के दोसरका बाँह पकड़ के अपना ओर खींचे लागतारी । एह घींचा-घोरी में–)

बीबी : ना जाई त्रिशंकु कतहीं ! ऊ इहहीं रही एही घर में । देखीं कइसे ओके के निकलवा देत बा ?

त्रिशंकु : (रोअत-चिचिआत) बाकी हमर बाँह त छोड़ी सभे । हाय रे राम ! हमर त दूनों पैंगूड़ा उखड़े चाहता । केहू बचावो रे ! ना त बाँट देल जायब हम आधा आधा ।

साहेब : एतने । अबहीं, एही समय हम तोरा के नरक में भेजिए के दम लेब । हमरो ताकत के थाह लगावो कोई ! पाजी ! जो ब्रान्च ऑफिस का कालापानी में ।

बीबी : ना । हम तोरा के कबहूँ ना जाये देब त्रिशंकु । तोरा इहँहीं– एही घर का स्वर्ग में रहे के बा ।

त्रिशंकु : बाकी अपने सभ हमरा के छोड़ दीही दादा ! हम त एह दूनों पाटन के बीच में पिसा जायेब.....। छोड़ दीहीं साहेब हमरा के, बीबी जी अपनहूँ छोड़ दीहीं । हम बाज अइलीं नोकरी से ।

साहेब : ना ! हम तोरा के अब ना छोड़ सकीं.....

बीबी : आ ना हमहीं छोड़े वाली बानीं ।

त्रिशंकु : आरे बाप रे बाप । तब हमर का होई रे.....। हम त ना आकासे गइलीं ना पाताले.....

(बहुत तरेह से रोअत-गिड़गिड़ाता । एही रस्साकस्सी का बीच में परदा गिरता ।)

तैयब हुसैन पीड़ित

प्रकाशित पुस्तक

हिन्दी

- भिखारी ठाकुर (विनिबंध)
- लोक नारायण (नाटक)
- एक गुमशुदा इतिहास (नाटक)

भोजपुरी

- बिछऊँतिया (कहानी-संग्रह)
- आपन आपन डर (एकांकी-संग्रह)
- एक पर एक इगारह (संपादित एकांकी-संग्रह)
- भोजपुरी साहित्य के संक्षिप्त रूपरेखा (साहित्येतिहास)
- भोजपुरी कविता के सामाजिक परिप्रेक्ष्य (आलोचना)

सम्पर्क सूत्र
'टी० एच० ठौर'
न्यू अजीमाबाद कॉलोनी
पो.-महेन्द्रू, पटना-800 006